# नेलसन ।


लेखक

अखौरी कृष्णप्रकाश सिंह



प्रकाशक

हरिदास वैद्य

कलकत्ता

२०१ हरिसन रोड के नरसिंह प्रेस में

बाबू रामप्रताप भार्गव

द्वारा मुद्रित ।

सन् १८१४

प्रथम वार ५०० ]

[ मूल्य ।

स जातो येन जातेन,

याति वश समुन्नतिम् ।

परिवर्त्तिनि ससारे,

मृत को वा न जायते ॥

हितोपदेश ।

# समर्पण

अनेक गुणसम्पन्न, विद्यानुरागी, भाषा रसिक

*श्रीयुत पण्डित रमावल्लभ मिश्र*

**एम० ए०**

डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट तथा कलक्टर पूरी

के

कर कमलों में सादर

**समर्पित।**

आभारी कृष्णप्रकाश मिश्र—

# भूमिका ।

सर्वाधार परम पूज्य अविनाशी घटघटवासी भगवानके चरणों में वारम्वार प्रणाम है जिनकी कृपा कटाक्ष से ससारी जीवों का पालन पोषण हो रहा है और सृष्टि के चित्रविचित्र कौतुक दिन रात दिखाई दिया करते हैं।

यह संसार एक रंगभूमि है, जिसपर कोटि २ अभिनेतागण प्रति दिन अपना २ भला या बुरा अभिनय एक दूसरे को दिखलाते है। क्षण २ में दृश्य बदलता जाता है, घडी २ पटाक्षेप हुआ करता है और अन्त में जब किसी एक का अभिनय समाप्त होता है तो तत्काल ही उसके कार्यों पर दृश्यात्मक पटाक्षेप पड जाता है और तब उसके सहनर्तकोंको अवसर मिलता है कि वे अभी के समाप्त किये हुए कार्य्य की आलोचना, प्रत्यालोचना करे तथा अपने भविष्य पार्ट मे यथेष्ट रद्द बदल करे।

मनुष्यका आवरण प्रत्येक आत्मा को मिलता ही है, ससार की रगभूमि प्रत्येक देहधारियों को प्राप्य ही है, जन्मपट सुख दुःख के रग से रजित हुआ ही करता है, अपनी उन्नति का सुअवसर भी कुछ काल के लिये हस्तामलक होता ही है। इतने तुल्यस्वत्व देकर प्रकृति तब बाट जोहती है कि कौन वीर अपने स्वत्वो का पूरा सदुपयोग कर ससार इतिहास में अपना नाम सुनहले अक्षरों मे लिखवा जगदादर्श बनता है।

पाठक। जगत में वही नर शार्दूल प्रकृति का कृपापात्र होता है, उसी वीर के भूतकार्य्यो का स्मरण मनुष्यजाति के

उद्धारका कारण होता है जो अपने को अपने देशके लिये उत्प
समझता हुआ देशागत मृत्यु से भी एकवार सामना करता
तथा मारभगाने की चेष्टा करता हुआ शरीरार्पण करदेता है औ
मनुष्यजातिकी हित कामना-रूपी योगाग्निमें अपने सुखसामान
ऐश्वर्य, दारा, गेह, देह तक को निष्काम आहुति दे देता है

यह पुस्तक एक ऐसेही कर्मवीर की जीवनी है। नेलस
एक दीन हीन पिता का पुत्र था, परन्तु उद्योग, सहनशीलत
तथा सहिष्णुता इत्यादि गुणों के द्वारा जगन्मान्य होगया
नेलसन की जीवनी हमलोगों को सच्चा स्वदेशभक्त, सहृदय तथ
अहङ्कारशून्य होना सिखलाती है और हमें लाखो विघ्न
बाधाओं की अजेय सैन्य के सम्मुख भी अटूट दुर्ग से खडे
रहनेका उपदेश करती है।

शारीरिक दुर्बलताके रहते हुए भी नेलसनने हृदय की वलि
ष्ठता के द्वारा योरोप के हौआ नेपोलियन को कैसा सबक
पढाया है— ग्रहणीय है। इङ्गलैण्ड की कौन कहे, इसका व
जन्मदाताही था परन्तु नेलसन संसार भर का हितेच्छु तथ
रक्षक कहा जाता है।

सन १८०५ ई० मे नेलसन की मृत्यु के वाद प्रत्येक देशों
के विद्वानों ने इसवीर की जीवनी अनेक भाषाओ में लिख
लिख कर गुणग्राहिता का परिचय दिया था, केवल अँगरेजी
भाषा में ही दस बारह लेखकों ने इनकी जीवनी किस्से, क
हानी तथा इतिहास के रूप में लिखी है।

विद्वान देशों में देशभक्त वीरो की जीवनियों का कितना मान होता है, यह पुस्तकों की बिक्री तथा आवृत्तियों से भली भाँति विदित हो जाता है। केवल एक सदी (Southey) की लिखी हुई 'नेलसन' की दस पन्द्रह आवृत्तियाँ १८८५ से आजतक विद्वानदेश की सुरुचिका खासा नमूना है।

हिन्दी भाषा में ऐसी पुस्तकों का अत्यन्त अभाव है। यद्यपि इधर कुछ दिनों से कुछ भाषा लेखकों ने इस ओर भी ध्यान दिया है और स्वदेश तथा दूसरे देशो के महान-पुरुषोंकी जीवनियाँ प्रकाशित कर अपने भाषा-भंडार की पूर्त्ति कर रहे हैं तथापि इनकी संख्यायें अन्य भाषाओं में की जीवनियों के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है।

इस साल सर्कारी रिपोर्ट से विदित हुआ है, कि संयुक्त-प्रदेशसे, जो भाषा का प्रधान विद्या-पीठ समझा जाता है, केवल दो ही जीवनचरित प्रकाशित हुए हैं। पाठक स्वयं विचार सकते हैं, कि भारतवर्ष के इतने भाषा जाननेवाले विद्वानो में से कितने विचारी हिन्दी की ओर ध्यान देते हैं।

नेलसन से वीर की जीवनी यदि किसी एक अच्छे विद्वान के हाथ से लिखी जाती, तो कितनी उपयोगी और मनोरंजक होती। परन्तु जब किसीने आगे पैर न दिया तो तावपेंच खाकर इस पुस्तक की अति आवश्यकता देख, मैंने ढिठाई करने को लेखनी उठाई। मुझ से भारी से भारी त्रुटि होजाना असम्भव नहीं, क्योंकि मै कोई प्रसिद्ध लेखक तो हूँ नहीं,

जो मेरा लेख सर्वा ग भूषित हो, तौभी आपलोगों की दयालुता की आशा है।

पुस्तक लिखनेमे निम्नलिखित पुस्तकोंसे सहायता ली गई है; अतः उन पुस्तकोंके लेखकोंको आन्तरिक धन्यवाद है।

Life of Nelson— लेखक— सदी (Southey)
Large Life of Nelson „ क्लार्क और एम अर्थर
Story of Nelson „ जौन लाग—

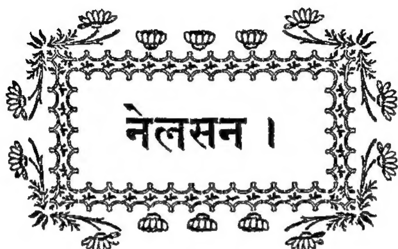
नेलसन के विषय मे
उसके देशवासियों को उक्ति सुनिये —

"He has left us a name and an example which are at this moment inspiring hundreds of the youth of England—a name which is our pride, and an example which will continue to be our shield and strength

अर्थात नेलसन ने हमलोगोंके लिये अपना नाम और उदाहरण छोडा है, जिनमे सैकडों इङ्गलैण्डवासी युवक कर्त्तव्य करने को आज भी उत्तेजित होते हैं—आपका नाम हमलोगों का गर्व, आपका उदाहरण हमलोगोंका बल और वर्म सदा बना रहेगा।

पाठक! मुझे आशा है कि पुस्तक अच्छी नही होने पर भी नेलसन से देशसेवक के जीवनचरित से तो आप लोग अवश्य लाभ उठावे गे और अपने देश कीसेवा में तत्पर होंगे।

उपसहार में, मै अपने अन्तरग मित्रों, बाबू रामानुग्रह नारायण लाल तथा नक्षत्रमय आकाश इत्यादि के लेखक बाबू सुरेशचन्द्र लाल को आन्तरिक धन्यवाद देता हूं, जिन्हों ने पुस्तक-सम्पादन में सहायता तथा उत्साह प्रदान किया।




## प्रथम परिच्छेद ।

*बाल्यावस्था और वंश-परिचय ।*




र नेलसन होरेशियोका जन्म नारफोक इलाकेके बर्नहमथोर्प ग्राममें २९ सितम्बर सन् १७५८ ई० में हुआ था। इनके पिताका नाम एडमण्ड और माताका कैथेराइन नेलसन था। एडमण्ड उसी ग्रामके ग्रामाचार्य थे।

नेलसनकी माता बड़े मान्य घरानेकी थी। इनकी दादी इँगलिस्तानके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री सर राबर्ट वालपोलकी बड़ी बहन थी।

अभाग्यवश बीबी नेलसन, सन १७६७ ई० में, आठ बच्चों को अपने पीछे बिलखते हुए छोड़कर, स्वर्गारोहण कर गईं, इनके जीवनकाल ही में इनके तीन बच्चोंका देहान्त हो चुका था।

बीबी नेलसनकी मृत्यु बिचारे एडमण्डके लिये अत्यन्त मर्म-भेदी हुई, आठ ७ बच्चोंका भरण पोषण कैसे चलेगा, इस सोचसे बिचारा घुलने लगा।

कप्तान मौरिस सक्लिंग, अपनी बहिन, बीबी नेलसनकी मृत्यु के बाद, एडमण्ड, अपने बहनोई, को सान्त्वना देने आया। इसने, एडमण्डको दुखी देख, एक बच्चेके भरण-पोषणका भार अपने ऊपर ले लिया।

समय-चक्र अविकल रीतिसे सुख दुःखकी अपेक्षा करता हुआ सदा घूमा करता है। तुम्हारा समय राज-भोग भोगनेमें वा भिक्षा मांगनेमें क्यों न व्यतीत हो, चाहे तुम प्रसन्न रहो या अविरल अश्रु-धारा ही बहाया करो, परन्तु समय इसकी पर्वाह कदापि नहीं करेगा।

बीबी नेलसन को मरे आज तीन वर्ष व्यतीत हो गये, हम लोगोंका चरित्र-नायक अब १२ वर्षका हो गया है। बड़े दिनकी छुट्टीमें नेलसन घर आया है। आज एकाएक उसकी दृष्टि समाचार-पत्रके एक कोनेपर पड़ी, उसके हर्षका ठिकाना न रहा। उसने पढ़ा कि उसका मामा "रेज़नेबुल" का कप्तान नियत हुआ है।

भावीने प्रेरणा की। नेलसनने अपने बड़े भाईसे पिताके यहाँ एक पत्री लिखनेके लिये विनती की और जहाजमें नौकरी करने की उत्कट अभिलाषा प्रगट की।

एडमण्ड नेलसनका स्वास्थ्य इन दिनों अच्छा नहीं था, अतः वह जल-वायु बदलनेके ख्यालसे बाथ (Bath) शहर में रहता था, वहीं पुत्रकी चिट्ठी पहुँची। उसने होरेशियोकी आन्तरिक अभिरुचि जानकर और अपनी आर्थिक दशा उत्तम न देख कर शीघ्र ही अपनी अनुमति देदी। पिता पुत्रकी प्रकृतिसे भलीभांति अभिज्ञ था और सदा कहा करता था कि होरेशियो जहाँ रहेगा वहीं ही सर्वश्रेष्ठ होगा।

एडमण्डने शीघ्र एक पत्र कप्तान सक्लिङ्गको इस विषयका लिखा। कप्तानने उत्तरमें यह लिखा कि यद्यपि बिचारा होरे-शियो बहुत दुर्बल है तथापि उसका मन भङ्ग करना उचित नहीं है अत उसे भेज दो, परन्तु भय केवल इस बातका है कि कहीं पहिले ही युद्ध में उसका मस्तक गोलेसे उड न जाय।

पाठक! इस उत्तरसे आप समझ सकते हैं कि होरेशियो को नाव्य-विद्या निपुण बनानेकी इच्छा कप्तानकी कदापि नहीं थी। यद्यपि नेलसन शरीरसे अत्यन्त दुर्बल और रोगी था, तथापि भविष्य गौरव, दृढ सकल्प और उदारता जो उसके भावी जीवनके सबसे बड़े उद्देश्य रहे, उस समय भी अपना आभास दिखाये बिना नहीं रहते थे और क्यों रहें? क्या बाल्यकाल ही भविष्य जीवनका अरुणोदय नहीं है? क्या

उत्कृष्ट या निकृष्ट बीज इसी अवस्थामें मनुष्य-शरीरमें प्रवेश कर आमरण नहीं फूलते फलते रहते हैं? उदाहरण देखो।

एक दिन बहुत ही बाल्यावस्थामें, नेलसन एक चरवाहेके सग पक्षियोंके घोंसले खोजता हुआ अपनी पितामहीके घरसे निकल पडा और रास्ता भूल गया। भोजनके समय भी वह घर वापस नहीं आया। लोगोंको भय होने लगा, कि कहीं वह यक्षिणियोंके हाथ तो नहीं पड गया, परन्तु बहुत खोजनेपर वह एक दुस्तर नदीके किनारे स्थिर भावसे बैठा पाया गया। इसकी दादीने पूछा कि क्यों रे, तुझे अकेले डर नहीं मालूम होता जो यहां बैठा है। हमारे होनहार वीरने उसी भावमें उत्तर दिया "दादी! डर! डर क्या वस्तु है! मैंने तो देखा भी नहीं।" धन्य निर्भीक! धन्य तुम्हारा पौरुष! क्यों न हो! वीर नेपोलियनको नीचा दिखानेवाला, इँगलैण्डको महामान्य बनानेवाला, वीर यदि ऐसा नहीं कहेगा तो कौन कहेगा?

एक दिन शीतकालकी छुट्टी अन्त होनेपर, नेलसन अपने भाईके साथ घोडे पर स्कूल जा रहा था, परन्तु मार्ग हिमाच्छादित रहनेके कारण लौट आया और पितासे ब्योरा सुनाया। पिताने कहा "पुत्रो! यदि हिम अत्यन्त ही अधिक हो तो स्कूल जाना ठीक नहीं, परन्तु पुनः एक बार उद्योग करो, इस बार मैं तुमलोगोंको सत्प्रवृत्ति पर छोड देता हूँ।" हिम सचमुच ही इतना था, कि यदि वह बहाना करना चाहता तो मजेमें कर सकता था परन्तु सत्प्रवृत्ति नेलसनके लिये बडी बात थी।

उसने अपने भाइयोंसे कहा, "हम लोग अवश्य जायँगे, भइया। पिताने इस कार्य्यको हमलोगोंको सत्प्रवृत्तिपर छोड़ दिया है, इससे पीछे हटना मानो सत्प्रवृत्ति पर लात मारना है।"

नेलसन स्वभावसे ही धृष्ट था। इसके लिये कोई काम लेलेना और पूरा करदेना बायें हाथ का खेल था। कैसा भी भारी काम क्यों न हो, यह कभी घबराने वा डरनेवाला पुरुष नहीं था।

एक दिन पाठशालाके लड़कोंने मिलकर गुरुजीके बगीचेसे पक्के सेब चुराने चाहे, परन्तु इतना साहस किसीमें नहीं था कि प्राचीरके भीतर जाकर सेब चुरा लावे। नेलसनने कार्य्यको स्वय ही अपने हाथों लेकर, उन लोगोंसे कहा कि मुझे रातके समय कपड़ेमें बाँधकर खिड़कीके नीचे लटका दो तो मैं तुम लोगोको सेब लादूँ। ऐसा ही किया गया, नेलसनने सब सेब लाकर लड़कोंमें विभक्त कर दिये, परन्तु अपना भाग उसने एकदम नहीं लिया और उत्तर दिया कि तुम लोग भयभीत थे इसी कारणसे मैंने यह कार्य्य सम्पादन कर दिया है।



# दूसरा परिच्छेद।

*भिन्न भिन्न जहाजोंपर और स्थानोंमें स्थिति।*



क दिन वसन्त ऋतुमें, प्रात समय ही नेलसनका सेवक वेलसहम पाठशालामें एक पत्र लेकर पहुँचा। नेलसनने आज्ञापत्र आया जान, शंकित हृदयसे पत्र खोला। सचमुच यह वही अपेक्षित पत्र था, जिसमें नेलसनको जहाज पर काम करनेकी आज्ञा थी।

नेलसन तो अब अवश्य जायगा। देश, इष्ट, मित्र, परिवार सभी छूटेंगे। ऐसे कम वयसमें प्रिय वियोग कैसा अखरता है, सहृदय पाठ खूब जानते हैं। बाल्यकालके सगी एक साथके खेलनेवाले मित्र आज छूटते है। क्रीडामें आनन्द देनेवाले सहोदरोंसे अब फिर भेंट हो न हो, कौन जाने। आज सहृदय नेलसनका कोमल कलेजा इन बातोंको सोच सोच बैठा जाता है। आज इसके लिये रगमें भग है। बडे दु खसे नेलसन अपने पिताके साथ घर छोड लण्डन पहुँचा। 'रेजनेबुल' (Raisonable) इस समय 'मेडवे' ( Medway ) में पडा हुआ था। नेलमन अब 'चैथम' ( Chatham )

जानेवाली सेज-गाड़ीमें बैठा दिया गया। वहाँ पहुँचने पर वह यात्रियोंके साथ जहाज़ पर चढ़नेकी गाड़ीसे उतरा।

शीत बड़े ज़ोरसे पड़ रहा था। बिचारा अनभिज्ञ युवक जहाज़ पर चढ़नेके लिये इधर उधर भटकता फिरता था। इतनेमें इसकी किसी एक नाविक से भेंट हो गई। पूछते पाछते नाविकको यह मालूम हो गया कि नवयुवक कप्तान सक्लिङ्गका भाञ्जा है। उसने कृपाकर इसे घर ले जाकर पूरे सत्कारसे प्रसन्न किया और जहाज़ पर चढ़ा दिया। चरित्रनायकका प्रथम दुःख अभी बिल्कुल समाप्त नहीं हुआ था। जहाज़पर जानेपर ज्ञात हुआ, कि न कप्तान सक्लिङ्ग ही वहाँ हैं न किसी नाविकको इनके आगमनकी खबर ही दी गयी है। बिचारा बालक दिनभर नौका पर घूमा किया, परन्तु किसीने इस पर ध्यान तक न दिया। दूसरा दिन भी योंही बीता चाहता था, कि किसी कृपालु नाविकने कृपा कर इसे खाने पीने के निमित्त कुछ दिया।

नेलसन अपनी स्वलिखित जीवनीमें लिखता है, कि यद्यपि नाविकोंका समूचा जीवन अनेक दुःखोंसे परिपूर्ण रहता है, यद्यपि उनका हृदय भविष्य विचार और भूत क्लेशोंसे विदीर्ण हुआ करता है, यद्यपि अनेक दुर्घटनाओं तथा अनेक दुःखोंसे उनका हृदय घत विक्षत होता ही रहता है, तथापि जितना प्रेम और सुमधुर वचनोंका अभाव, जितना मानसिक कष्ट

प्रथम गृह-विछोहके बाद अनुभव होता है उतना कभी भविष्य जीवनमें होनेका नहीं।

युवक नाविकोंको अपने समग्र सुखोंका, यहाँ तक कि "रैन नींद अरु बासर भोजन" तकका भी परित्याग करना होता है।

हमलोगोंका चरित्रनायक शरीरसे अत्यन्त दुर्बल तथा रोगी था। अत आदिमें जिन दु खोंका अनुभव उसने किया था, उन्हें वह आमरण विस्मरण न कर सका।

रेजनेबुल ( Raisonable ) स्पेनके झगड़ेके लिये किराये किया हुआ जहाज था। ज्योंही स्पेन (Spain) सरकारसे सन्धि स्थापित हुई, त्योंही इसको जवाब दे दिया गया और सकलिङ्गको बदली ट्रायम्फ (Triumph) जहाज पर हो गई। नेलसन भी साथ हो गया। ट्रायम्फ ( Triumph ) इन दिनों टेमृस (Thames) में रक्षकयान था। एक चञ्चल नवयुवकको चुपचाप रक्षक-यान पर मक्खियाँ मारना कब भा सकता था? चरित्रनायक उद्योग कर वेष्ट इण्डीज ( West Indies ) जानेवाले एक वाणिज्य-यान पर समयका सदुपयोग करने चला। यह जहाज़ कप्तान सकलिङ्गके पूर्वाधीन कप्तान जान राथबोन ( John Rathbone ) की अध्यक्षता में था। नेलसन इस यात्रासे एक निपुण नाविक होकर लौटा, परन्तु सरकारी नौकरीसे इसे आन्तरिक घृणा हो गई। नेलसन इस कहावतको कि "करे सिपाही नाम हो सरदारका" सदा दोहराता था।

राथबोन ( Rathbone ) कदाचित अपने नाव्य जीवनमें

उद्विग्न और हतोत्साह हो गया था, अत वह नेलसनका सुष्ठ दुभायसे ऐसे जीवनमें प्रवेश करनेसे सदा पछताता था।

नेलसनके वापस आनेके बाद, उसके मामा कप्तान सफालिङ्ग ने उसको अपने जहाजपर ले लिया। कप्तानने इसको नाव्य विद्या सीखनेसे अरुचि देखकर, अनेक उपाय अनुनय करानेके किये और उत्साह दिया, कि यदि तुम नाव्य-विद्यामें पूर्ण दक्षता प्राप्त कर लो तो तुमको प्रधान अध्यक्षयानके अनुगत लम्बी डोंगी पर चढकर चलनेका असामान्य अधिकार शीघ्र ही प्राप्त होगा। इस प्रकार उत्साहित हो, कुछ ही कालमें, नेलसन चैथम (Chatham) से टावर (Tower) तक तथा स्वीम (Sweam) की खाडीसे नार्थ फोरलैण्ड (North Foreland) तक आने जानेवाले जहाजमें कर्णधारका कार्य्य बड़ी निपुणता से करने लगा। साथ ही साथ समुद्रान्तर्गत पर्वतों और बालुकामयी कूलोंसे पूर्ण अवगत हो गया। नेलसनको अपने भावी जीवनमें इस शिक्षाके मधुर फलका स्वाद खूब ही मिला।

नेलसन ट्रायम्फ (Triumph) पर अपने मामाके साथ बहुत काल तक नहीं रहा। नये नये साहसिक कार्य्योंके करनेकी लालसा नेलसनके समुन्नत हृदयमें लहरा रही थी। इतनेमें इसने सुना कि दो आविष्कारक यान उत्तरीय ध्रुवकी खोजमें प्रस्थान करनेवाले हैं। अब तो नेलसनकी लालसाका ठिकाना नहीं रहा। यात्राको अनेक कष्टमय जानते हुए भी,

उसने उत्कट उद्योग उस यात्रामें जानेका किया और अपने मामाकी सहायतासे सहकारी कप्तान लटविज ( Letwidge ) के आधीन कर्णधार नियत हो गया।

यह आविष्कारक यात्रा रायल सोसाइटी ( Royal Society ) के अनुरोधसे की गई थी। दोनों जहाज रेचहोर्स ( Rech Horse ) और कारकैस बौम्ब ( Carcas Bomb ) बड़ी उत्तमतासे सजाये गये थे तथा 'दो ग्रीनलैण्ड निवासी ( Esquimaux ) निपुण कर्णधार भी भरती कर लिये गये थे। जहाज ४ थी जूनको प्रस्थान कर गये।

६ ठा जुलाई को, रेचहोर्स (Rech Horse) एक स्थान पर, जहां अनेक आविष्कर्त्ताओं के जहाज़ रुक गये थे, हिम-बद्ध हो गया। बड़े परिश्रम से २४ तारीख तक जहाज़ उत्तर और पश्चिम की ओर ठेले गये, परन्तु उसके बाद ये ऐसे अटके कि उद्धार दुष्कर हो गया। दृष्टि जहां तक जाती थी केवल तुषार के स्वेत पट ही दीख पड़ते थे।

दूसरे दिन कर्णधारों के आदेश से नाविकों ने जहाज के लिये १२ फीट चौड़ा रास्ता पश्चिम की ओर काटना आरम्भ किया, परन्तु इतने कठिन प्रयास से भी जहाज केवल ३०० गज आगे बढ़ सका। दिन पर दिन बीतने लगे। उद्धार के सब उपाय पूर्व्वी या उत्तरी पूर्व्वी वायु के झकोरे बिना व्यर्थ होने लगे। अब कम वयस्क नेलसन को कप्तान ने

मार्ग-अन्वेषक डोंगियों में से एक का समूचा भार देकर मार्गनिश्चय में नियत किया।

तरुण नेल्सन इस समय एक अत्यन्त निर्भीक कार्य्य कर बैठा। एक दिन अर्द्धरात्रिको वह अपने सहचर के साथ एक भालूका पीछा करता हुआ निकल पड़ा। कुहासा खूब पड रहा था। बस, थोडीही देर में ये लोग दृष्टि की ओट हो गये। कप्तान लटविज (Letwidge) इत्यादि इन लोगों के लिये विकल होने लगे, परन्तु दूसरे दिन सुबह तक कोई टोह इन प्रगल्भ नाविकों को न मिली। भाग्य से दिन निर्मल था। लोगों ने दोनो जनों को दूर पर एक भयानक भालूका सामना करते हुए पाया। दोनों को वापस आने के लिये सकेत किया गया। नेल्सन के सहचर ने उसका ध्यान संकेत की ओर आकर्षित भी किया परन्तु व्यर्थ। वह बार २ बन्दूक भालू को मारने के लिये छोडता जाता था। यहां तक कि पास की कुल गोली बारूद खतम हो गई।

अब नेलसन के जीवन में सशय हो गया। वह भयानक भालू क्रुद्ध होकर मेघगर्ज्जन करता हुआ नेल्सन पर झपटा। यदि उस समय भालू और नेलसन के बीच बर्फ पिघल-जाने से एक छोटी नदी नहीं बन गई होती तो नेल्सन की जीवनी दो चार पन्ने में यही पर परिशिष्ट हो जाती। परन्तु परमेश्वर ने मानों स्वय एक छोटी निर्झरनी के रूप में नेल्सन और भालू के बीच में पडकर होनहार वीर की रक्षा की।

नेलसन ने चिल्लाकर अपने साथी से कहा 'मित्र ! मैं कप्तान के सकेत की पर्वाह नहीं करता। मुझको तो किसी प्रकार इस राक्षस के निकट पहुँच कर, अपनी बन्दूक के कुन्दे से ही इसे यमपुरी पहुँचाना है'। सेनापति ने दोनों नाविकों पर विपत्ति आई जान, अपनी बन्दूक की गोली से भालूको यमपुरीका रास्ता दिखलाया। नौका पर वापस जाने पर, कप्तान ने नेलसन को बहुत जली कटी बातों से भर्त्सना की और ऐसे दु:समय में शिकारका पीछा करने का कारण पूछा। नेलसन ने होंठ चबाते हुए उत्तर दिया—"महाशय ! मैं रीछको मार, उसके चर्म का उपहार पिता को देना चाहता था। (नेलसन जब कभी उद्विग्न होता अपना होंठ चबाने लगता था)।

मार्ग-अन्वेषक डोंगियो ने समाचार दिया कि निकट ही एक द्वीप में पूर्व्वीय वायु बह रही है। दोनो कप्तानों ने आपस में यह राय ठहरायी कि जहाज को छोडकर सब कोई डोंगियों पर सवार हो रवान हो जायँ। परन्तु नवी अगस्त को उत्तरी-पूर्व्वीय वायु के झकोरे ने जहाज को आगे ठेल दिया। दूसरे रोज मध्याह्न होते २ वायु के ठेलों से भाग्यवश जहाज समुद्र में पहुँच गया और सिमनवर्ग ( Semnaburgh ) के नौकाश्रय में जहाज़ ने लङ्गर डाला। यहाँ हमारी वीर-मण्डली कई दिनो तक डेरा डाले रही। इस स्थान पर किसी प्रकार के जीव कीडे मकोडे नहीं पाये जाते थे। पहाड के टूटे हिम के बडे २ टुकडो से खचित दीख पड़ते थे। ये

दूर से अत्यन्त सुन्दर हरे रङ्गके मालूम पडते थे। जहां तक दृष्टि जाती थी हिमही हिम था। कही कही तुषाराच्छादित पर्वतों से छोटी छोटी निर्झरणियां नीचे गिर कर मानों थके वीरो का मनबहलाव कर रही थी। वेडा यहांसे प्रस्थान कर खुशी खुशी इँगलैण्ड पहुँच गया।

हम लोगोंके चरित्र नायकने गद्गद हृदय से मामा का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। मामाने इसे पुन सी हौर्स ( Se t-horse ) पर एक नौकरी दिला दी। यह जहाज ईस्ट इण्डीज ( East Indies ) को जानेवाला था। इसीपर नेल्सन आगेके मस्तूलपर प्रहरीका काम करने लगा।

चरित्र नायकने अपने उन्नत चरित्र से अपने कप्तान शेरोज ( Sherez ) को मोहित कर लिया और इनकी सहायता से बहुत शीघ्र ही मिडशिपमैन ( Midshipman ) की जगह बहाल हो गया।

यात्राके आरम्भ में नेल्सन का मुख अत्यन्त प्रफुल्ल और शरीर अत्यन्त सन्नद्ध और पुष्ट हो गया था। परन्तु ईस्ट इण्डीज ( East Indies ) के दूषित जलवायुने चरित्र नायक के बल और स्वास्थ्य का ह्रास करना आरम्भ कर, अठारह महीने में इसे बिल्कुल अस्थिचर्मावशिष्ट कर दिया। डाक्टरोंने जवाब दे दिया। अब इँगलैण्ड लौट आनेके अतिरिक्त और कोई उपाय बाकी नही रह गया। अन्त में 'डोलफिन' (Dolphin) जहाज़ मे यह स्वदेश लौट आया। डोलफिन के कप्तान पिगट

( Pigot ) ने इसकी सेवा सुश्रूषामें कोई त्रुटि न की और वह इन्हीं की कृपा से स्वदेश सकुशल लौट भी सका।

ईस्ट इण्डीज (East Indies) की यात्रा में चरित्र-नायक की होनहार सर चार्लस पोलस ( Sir Charles Poles ) और ट्वीज ( Trawedge ) प्रभृति अफ़सरोंसे जान पहचान हो गई। इसको उस देश से लौट आने का बड़ा शोक था। वहाँ का नूतन मनोहारी दृश्य अत्यन्त रमणीय था। ईष्ट इण्डीज ( East Indies ) से स्वदेश-आगमन का वर्णन बड़े मनोहारी शब्दों में इस ने स्वयं यों किया है—"मुझे दृढ़ विश्वास हो गया था, कि अब मैं अपने जीवनमें कृतार्थता नहीं प्राप्तकर सकता हूँ, मेरा चित्त उन कष्टोंको जिन पर मुझे विजय पाना अत्यावश्यक था सोच २ कर विचलित होता जाता था। मुझे सहायता करनेवाला संसारमें कोई नहीं दीखता था। मैं अपनी कीर्त्ति स्पृहा के विषय को प्राप्त करने का कोई उपाय न खोज सका। बहुत काल तकके सान्धकार चिन्तन के बाद मेरे हृदय में सहसा स्वदेश प्रीतिका विद्युत-प्रदीप चमक उठा और मेरा देश और देशाधिप ही मुझे अपना सवर्द्धक और उपकारक बोध होने लगा। उस समय मैं दृढ भावसे बोल उठा, कि मैं अवश्य ही वीर हूँगा और भाग्यपर विश्वस्त होकर सकल दुःख कष्टों का सामना करूँगा।" इसके बाद भी नेलसन अपने इन अनुभवों का कथन बड़े प्रेमसे करता था और उसी समय से वह सदा कहा करता था, कि उससमय मेरे अन्तर्नेत्रों में एक

प्रज्वलित बिम्ब आन्दोलित होकर मुझे कीर्त्ति अभिमुख प्रेरित कर रहा था।

पाठक! आप विचार कर सकते हैं, कि नेलसनका पहिला विपक्ष मनोविकार यथार्थ में उसको अन्तरात्मा का नहीं वरन् रुग्न शरीर और खिन्नमनकी छाया मात्र ही थी। नेलसन को भी दृढ़ विश्वास था, कि वह पथ दर्शक आलोककी किरणें, जिन्होंने इसे महामान्य तथा जगदादर्श बनाया है मनोविकार न होकर सचमुच ही स्वर्गीय आलोक थीं।

नेलसनका सहायक मामा, जैसा इसे बोध होता था, एकदम तुच्छ नहीं था। इसके पीछे कप्तान सक्लिङ्ग नौकावर्गों का पर्य्यवेक्षक नियत हो चुका था। स्वदेशागमन पर नेलसन का स्वास्थ्य अच्छा हो चला। नेलसन अपने मामाकी कृपा से इस समय वरसेस्टर ( Worcester ) का लेफ्टिनेण्ट (Lieutenant) नियत किया गया और १७७७ ई० में जिब्रा ल्टर (Gibralter) से लौट आने पर १८ वर्ष की उम्रमें लेफ्टिनेन्सीकी परीक्षा में उत्तीर्ण भी हो गया।

पाठक! यहाँ पर मैं कप्तान सक्लिङ्ग के कुछ उत्कृष्ट गुणों का परिचय भी, एक उदाहरण दे, आपसे करा देना उचित समझता हूँ। पूर्व कथित परीक्षामें सक्लिङ्ग नेलसनकी परीक्षाका प्रधान अध्यक्ष था। नेलसन जब तक अपने प्रश्नोंका उत्तर देता रहा, आप चुपचाप बैठा देखा किया। और और परीक्षकोंसे इस का नाम भी न लिया कि विद्यार्थी मेरा भाञ्जा है। परन्तु जब

नेलसन बहु सम्मानके साथ परीक्षोत्तीर्ण हो चुका तब आपने परीक्षकोंसे नेलसनको अपना भाञ्जा बताकर परिचय कराया। परीक्षकों के पहिले परिचय नहीं करानेसे आश्चर्य्य प्रगट करने पर आपने कहा, मैं कदापि नहीं चाहता था कि नेलसन अनुग्राह्य होकर परीक्षोत्तीर्ण हो। मैं जानता था कि नेलसन अपनी ही योग्यता से परीक्षोत्तीर्ण होगा और यही हुआ भी।

दूसरे ही दिन नेलसन जमाइका ( Jamaica ) जानेवाली लो स्टाफ ( Low Staff ) महायुद्ध-नौका पर सहकारी लेफ्टिनैण्ट नियत हुआ।

इन दिनों अमेरिकन ( American ) लोगोंका हौसला बढ़ा हुआ था। ये लोग फ्रेंचो ( French ) से मिलकर इंगलैण्डके वाणिज्यका ह्रास कर रहे थे। लो स्टाफ़ ( Low Staff ) ने नौका शत्रु के एक ऐसे जहाजको एक मुठभेड में पकड लिया जिसे अमेरिका ( America ) सरकार की ओर से लेटर ऑव मार्क † ( Letter of Marque ) मिलाथा। इस समय वायु भयानक तूफान होकर बहने लगी, समुद्र उबलने लगा। कप्तानने ऐसे समय में पहिले लेफ्टिनैण्ट को

---

† "लेटर ऑव मार्क" एक ऐसा आज्ञापत्र है जिसे किसी देशकी सरकार अपने लुटेरे नाविकों को देती है और प्रतिज्ञा करती है कि शत्रुदल के लूटनेमें उनकी नौकायें यदि नष्ट हो जायें तो सरकारी खजानेसे उनकी क्षति पूर्ति की जायगी।

अभी को जीती हुई शत्रुकी नौका पर जाने की आज्ञा दी। लेफ्टिनैण्ट अपने को अस्त्र-शस्त्र से सज्जित करनेको नीचे उतरा, परन्तु विलम्ब करनेके कारण लोगों ने इसको भयभीत होकर छिप गया समझा। कप्तान को जब खबर मिली, उसने नौका पृष्ठ पर आकर देखा तो विजित शत्रु-नौका को निकट ही डुभ-डुभ करते पाया। नौका के जल-मग्न हो जाने के भयसे व्यग्र होकर कप्तान चिल्ला उठा 'क्या आज हमारी नौका वीर शून्य हो गई। क्या कोई वीर शत्रु-नौका पर चढ़ कर उसे अपना नहीं सकता? हमारे चरित्रनायकको ऐसा ताना कब सह्य हो सकता था? परन्तु हठात् आगे बढ़ना उचित न समझा। इतने में नेलसनके सहकारी लेफटिनैण्टने शत्रु-नौकापर जाने की इच्छा प्रगट की, परन्तु चरित्रनायक उसे पीछे खींच, सिंह की नाई कुलांचे मार डोंगी पर गया और बोला "भाई! तुमसे पहिले यह हमारी बारी है, परन्तु यदि मैं विफल लौट आया तो वह तुम्हारी होगी।" शत्रुकी नौका भारी बोझके कारण प्राय जल मग्न थी, परन्तु नेलसन इसकी पर्वाह न कर जहाजपर चढ़ गया और बहुत सा जल नौकासे निकाल कर उसे बन्दी कर लिया।

कालकी कराल गति क्या कभी फेरे फिरती है? लाखों उद्योग, करोड़ों परिश्रम, मृत्युके निर्दिष्ट समय में हेर फेर करने को करो, परन्तु मनोरथ सफल कभी होनेका नहीं। नेलसन की उन्नत अवस्था देखना कप्तान सक्लिङ्गको बदा न था। इसी

समय उनकी मृत्युका दुःसमाचार नेलसनको मिला, परन्तु कर्म की रेखमें मेख कौन मार सकता है, यह विचार कर चरित्र-नायक ने सन्तोष किया।

नेलसन अपने प्रधान कप्तान लॉकर (Locker) का अत्यन्त कृपा-भाजन हो गया था। उसके उद्योगसे यह ब्रिटिश फ्लैग शिप ( British Flag Ship ) पर नौकरी पा सका। लेफ्टिनेण्ट कौलिंगउड ( Collingwood ), चरित्रनायक का हृदयङ्गम मित्र, उसके स्थानमें लोस्टाफ़ पर बहाल हुआ। हम लोग देखेंगे, कि जब कभी नेल्सनकी पदोन्नति होती थी उसके अन्तरङ्ग मित्रकी उन्नति भी अवश्यम्भावी थी, क्योंकि बड़े अध्यक्षके ये दोनों जने कृपापात्र थे।

नेलसन शीघ्र ही प्रथम लेफ्टिनेण्ट हो गया और आठ दिसम्बर १७७८ को बैजरब्रग ( Badger Brig ) नौकापर सेनाध्यक्षका पद सुशोभित करने लगा। नेलसनकी प्रत्युत्पन्न बुद्धि तथा इसके असीम बुद्धि चातुर्यको देख कर मन मुग्ध हो जाता था।

जिस समय बैजर (Badger) जमैका के मौन्टेग (Montague) की खाडी में लङ्गर डाले हुए था, निकटवर्त्ती एक जहाज़ में अग्नि लग गई। अग्नि ने भयानक रूप धर लिया। करीब दो घण्टों में जहाज़ धायँ धायँ कर जल गया। नेलसनने भावी दुर्घटना की आशङ्का से अपने जहाज़ परके गोले बारूद को नौका पृष्ट पर फिकवा दिया और तोपों का मुख ऊँचा

कर दिया। अपने उद्योग से नेलसन ने सैकड़ों वल्कि हज़ारों मनुष्यों की प्राण-रक्षा की। ११ जून सन् १७७८ में नेलसन लोस्टाफ़ (Low Staff) पर से बदल कर हैनचिनब्रूक (Hainchinbrook) का कप्तान नियत हुआ। इसी समय लोस्टाफ (Low Staff), जिस पर नेलसन पूर्व में था, एक जहाज़ी बेड़े के साथ एक अमेरिकन (American) क़िले पर धावा कर विजयी हुआ। जीत की लूट में प्रत्येक नाविक ने बहुत धन प्राप्त किया। यह समाचार जब उन्नत हृदय उदार नेलसन ने सुना, तब वह साधारण प्रकृति-विरुद्ध ऐसे सुकार्य्य में अपनी परोक्षता पर कदापि दुःख प्रकाश कर उद्विग्न न हुआ।



# तीसरा परिच्छेद।

## *जीवन प्रभात।*




वन का ब्राह्म मुहूर्त बीत गया। भविष्य दे-दीप्यमान जीवन के आगमन सूचक अरुणोदय की लाली के दर्शनमात्र से ही लोगों ने कहा, यह जीवन प्रभात हुआ।

यवनिका के पीछे नटों ने धुँधली ज्योति में यद्यपि मनोहारी दृश्य दिखलाया, परन्तु मन न भाया। कुछ काल के निमित्त पटाक्षेप हो गया। सहसा घण्टी बजी। नाट्यशाला की ज्योति पूर्ण दीप्त हो उठी! यवनिका उठने लगी। लालायित दर्शकों की दृष्टि तत्काल नवरजित दृश्यों पर पड़ी, आनन्दित हो बोल उठे "बस ठीक है। यह नायक का जीवन-प्रभात हुआ।"

पीले पत्ते वृक्षों से झड़ गये। कोमल मुकुलित कोपल निकल पड़े, परन्तु किसी ने दृष्टि-क्षेप नहीं की। अब सुख-वन्त पल्लवोंके प्रफुल्लित होते ही कोकिल, पिक, सारिकों ने वृक्ष के जीवन प्रभात पर बधाई दी।

बाल्यकाल की बाल्य क्रीडा अब अन्तिम रात्रि का स्वप्न हुई, अब यौवन का पदार्पण हुआ। मूछों की अस्पष्ट रेखा पूर्ण-मयङ्क में काली छाया की नाईं स्पष्ट हो गई। शरीर पर यौवन, बल और कान्ति की वृद्धि हुई। तब हम लोग अपने चरित्र-नायक के जीवन प्रभात पर क्यों न बधाई देवें?

पाठक! अब हमारे चरित्रनायक का इक्कीसवाँ वर्ष शुरू हुआ। यौवन के विकाश के साथ ही साथ जीवन में उल्लास की भी वृद्धि होने लगी। वर्षों के एक से इक्कीस होते ही नेलसन का पद भी उत्तरोत्तर एक से इक्कीस होने लगा। वीर युवक अब कर्णधार नेलसन नहीं वरन् कप्तान नेलसन है। नाव्य-जीवन की कुल ख्यातियाँ और प्रतिष्ठायें अब इसके हस्त-प्राप्य हो चली है। यद्यपि अभी तक कोई सावकाश उत-कर्ष प्रतिष्ठा लाभ करने का नेलसन को प्राप्त नहीं हुआ है तथापि वह अपने व्यवसाय में पूर्ण दक्ष हो गया है और परिचित संसार में इसके गुण गौरव और उत्साह का वर्णन बड़ी धूम से होने लगा है।

एक दिन एकाएक खबर मिली, कि स्पेन सेनापति सवा सौ जहाजों के बेड़े और पचीस सहस्र उद्भट सेनाओं के सङ्ग जमाइका (Jamaica) द्वीप पर आक्रमण करने को बढ़े जाते हैं। नेलसन ने इस शुभवसर को हाथ से जाने देना उचित न समझा। शीघ्र ही उद्योग कर, पोर्ट रॉयल (Port Royal) के फोर्ट चार्ल्स नामक किलेके तोप खानेका पर्य्या-

बेसक नियत हो गया। केवल सात सहस्र सेना इकट्ठी हो सकी। पाठक विचार करे, कि केवल सात सहस्र सेनाओं से पच्चीस सहस्र सेनाओं का सामना करना कैसा दु साध्य है ; परन्तु नेलसन इस बात से किञ्चित भी सकुचित नहीं हुआ।

विचार यह ठीक हुआ, कि उत्तरीय तथा दक्षिणीय स्पेन प्रदेशों के बीच में बैठकर उनके सङ्गम का विच्छेद करना चाहिये।

१७८० ई० के शुरू में, नेलसन के आधीन पाँच सौ मनुष्य नियोजित कार्य्य करनेके लिये ग्रेसिअस † (Gracias) अन्तरीप को चले। वहाँ पहुँचने पर उन लोगों ने भयभीत ग्राम-वासियों को सन्तुष्ट कर अपना सहचर बना लिया। स्थान २ पर ठहरता, अपने सहायक इण्डियनों (Indians) को एकत्रित करता हुआ, २४ मार्च को यह छोटा सैन्यदल सेनजुवन नदी (R. Sanjuan) पर पहुँच गया। इसी नदी पर सेनजुवन का क़िला (Sanjuan Fort) दृढ भाव से खड़ा है। इसका ही विजय करना मानों अपेक्षित युक्ति में कृतकार्य्य होना है।

यहाँ से ही नेलसन को लौट आने की आज्ञा थी, परन्तु कोई ऐसा योग्य पुरुष सेना में नहीं था जो मार्ग से अवगत हो। अत: नेलसनने ऐसे समय पर छोड कर लौट जाना उचित नही समझा। करीब २०० सैन्य जल मार्ग से रवाना हुई। नदी में जल प्राय सूख गया था। कहीं २

† यह अन्तरीप अमेरिकाके Mosquito coast मोसक्वीटो कूलके निकट है।

कठिनाइयों से नौका चलाई जाती थी। सैनिकों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता था। दिन में कड़ी धूप और रात में ओस से वे व्याकुल हो जाते थे।

८ एप्रिल को चरित्र-नायक ससैन्य सैन बोर्टोलोमियो (San Bortolomeo) के द्वीप में पहुँचा। यह स्थान स्पेन वालों का एक छोटा मोर्चा था। यहाँ केवल १६ या १७ महरियों के रहने का स्थान था।

वीर नेलसन अपने नाविकों के साथ किनारे पर कूद पड़ा, परन्तु स्थान बिल्कुल दलदल था। बड़ी कठिनाइयों से नंगे पैर वे लोग किले पर चढ़ आये और तोपों पर स्वत्व जमा लिया।

इस स्थान से १६ मील पूर्व ओर सेनजुवन (Sanjuan) का दुर्ग था। रास्ता अत्यन्त विकट और दुर्गम था। आठ कोस तक बराबर भयानक जङ्गल ही जङ्गल था, ठौर ठौर पर कुञ्ज ऐसा दुष्पार बन गया था कि मनुष्य क्या पक्षियों का भी फटकना असम्भव प्रतीत होता था। नेलसन इन कठिनाइयों को कुछ भी ध्यानमें न लाकर, जङ्गल काटता छाँटता धँसने लगा।

एक दिन एक सैनिक के पैर में एक ऐसे विषैले सर्प ने काटा कि कुछ ही काल में बिचारा मर गया। घण्टे भरके बाद लोगों ने जो देखा तो विष की गर्मी से सैनिक का सारा शरीर सड़ गया था। चरित्र नायक भी एक दिन मरते मरते

से एक भयानक दुर्घटना से बचा। एक रात्रि को वह बिस्तरे पर वृक्ष के नीचे सोया था, कि मुख पर एक कीड़े के रेंगने से एकाएक उसकी नींद खुली। वह घबड़ा कर जो उठा तो पैर के नीचे एक बड़े विषैले अजदहे को बैठा पाया। अजदहा मारा गया और वह साफ़ बच गया।

भला अदृष्ट को तो इसके हाथ से संसार के अनेक कार्य्यों को सिद्ध कराना अभीष्ट था। युद्ध क्षेत्र में विजयोल्लास-पूर्ण हृदय के साथ इसकी वीर मृत्यु शय्या बननेवाली थी, तो फिर अजदहे के विष से इसके प्राण जायँ तो क्यों कर!

दूसरा उदाहरण चरित्र-नायक पर अदृष्ट की कृपा का सुनिये। एक दिन नेलसन प्यासा होकर जलकी खोज में इधर उधर भटकता फिरता था, इतने में इसकी दृष्टि सुदूर एक निर्मल झरने पर पड़ी। वहां जाकर इसने भर पेट जल पी लिया। जल एक प्रकार के विषैले पौधे के संसर्ग से दूषित हो गया था। जल के विष से इसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव तो अवश्य पड़ा, परन्तु उसकी गरल शक्ति इसे मार न सकी।

११वीं तारीखको बोरटोलोमिओ(Bortolomeo)लेनेके दो दिन बाद हम लोगोंका वीर सैन्यदल सैनजुयन (Sanjuan) किले पर घेरा बांध कर बैठ गया। नेलसन की निर्भीक सम्मति तो किले पर चढ़ जाने और लड़कर विजय प्राप्त करने की थी, परन्तु बिना प्रधान सेनाध्यक्ष की आज्ञा के ऐसा कठिन

कार्य्य कब हो सकता था। अस्तु। दस दिन इसी सोच विचार में बीत गये। दुर्ग का जीत लेना कुछ ऐसा कठिन कार्य्य न था परन्तु भूमि असम होने के कारण कठोर परिश्रम अपेक्षित था। २४ तारीख को नेलसन की वीरता और सैनिकों की सहिष्णुता से दुर्ग विजय हो गया।

इस समय सैनिकों में भयानक रूप से महामारी का प्रकोप हुआ। इतने मनुष्य मरे कि निकटवर्त्ती नदियाँ मृतकों से भर गईं। दो सौ मनुष्यों में से इसके तो केवल १० ही जीवित लौटे। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके भी दैव से यह सैन्य-समूह पराभव ही हो गया। नेलसन भी अछूता न बचा। कुछ दिनों के बाद यह भी आमातिसार द्वारा भयानक रूप से पीड़ित हुआ। शीघ्रही यह जमैका द्वीप में लौट आया और जैनस (Janus) जहाज़ का कप्तान नियत हुआ, परन्तु भूत दुर्घटना से इसका स्वास्थ्य अत्यन्त बिगड़ गया था, अत अपने काम पर न जाकर शीघ्रही छुट्टी लेकर स्वदेश लौट आया। रोग ने और भी भयानक रूप धारण किया। जलवायु बदलनेको जब यह बाथ (Bath) शहर में जा रहा था, मार्ग में हिलना डोलना कठिन हो गया था। रह २ कर यह व्यथा से चीत्कार कर उठता था।

तीन मासमें परमेश्वरकी कृपासे यह पुन चङ्गा हो गया और लण्डन (London) आकर इसने पुन वृत्ति के निमित्त

निवेदन पत्र भेजा। चार मास के बाद अलबरमेल (Alburmail) जहाज़ पर यह कमान नियत हुआ।

नेलसन का स्वास्थ्य अभी तक एकदम अच्छा नहीं हुआ था। जिस समय वह अपने जहाज़ को यात्रा के निमित्त ठीक कर रहा था, पुन: बीमार पड़ गया। अब की बार उसने छुट्टी नहीं ली बल्कि शीतकाल उत्तरीय समुद्र में ही बिताया।

बड़ी कर्कशता से उसने इन दुःखों का वर्णन किया है जिससे साफ़ झलकता है कि नाविकों के साथ असद् तथा क्रूर व्यवहार से वह कितना क्रोधित रहता था।

इस उत्तरीय समुद्र की यात्रा से नेलसन को डेन्मार्क (Denmark) के कूलों और खाड़ियों का ज्ञान पूरे तौर से प्राप्त हो गया था। यह अनुभव आगेके दिनों में इँगलैण्ड के (England) लिये अत्यन्त लाभदायक हुआ।

नेलसन का अलबरमेल (Alburmail) जहाज उत्तम नहीं था। स्वदेश लौटने पर उसको जहाज की अनेक त्रुटियों की पूर्त्ति करनी पड़ी।

एक दिन जब उसकी नौका डौन (Dawn) अन्तरीप में लङ्गर डाले हुई थी, वह किनारे पर बड़े अफ़सर से बातें करने को उतरा, इतने में एक ऐसा भयानक तूफ़ान आया कि नौका-समूह लङ्गर उखाड़ २ कर इधर उधर छितर बितर हो गये। अलबरमेल (Alburmail) का एक कोष-यान भी इस दुर्घटना से खिंचकर निकल गया। नेलसन भयभीत

हुआ, कहीं यह बालुकामयी कूलों में न जा अटके। हठात् वह कूल पर दौड गया। बडे २ निपुण नाविकोंकी बुद्धि नौका-पृष्ट पर चढने में चकराने लगी। कुछ वीर उस नौका के रोकने का परिश्रम करने लगे। परन्तु वीरवर नेलसन का साहस देखकर सब अवाक् रह गये। वह कूद कर समुद्र के उफान से कूदते हुए नौका-पृष्ट पर चढ ही तो गया। कोपयान नेलसन के असीम साहस के द्वारा जलमग्न होने से बच गया।

चरित्र-नायक को अब क्यूबेक (Qubeck) जाने की आज्ञा मिली। यद्यपि इसके मित्रों ने और डाक्टरों ने इस को इस यात्रामें जानेसे मना किया, परन्तु उसने भूतपूर्व एड-मिरल सेण्ड्विच (Admiral Sandwich) की आज्ञा को उनके उत्तराधिकारी कैपेल (Chapal) साहब से रद्द करवाना उचित नहीं समझा और कनाडा (Canada) को प्रस्थान कर दिया।

नेलसन बडा ही सदय था। वह दूसरों पर दया दि-खाने में त्रुटि करना नहीं जानता था। कनाडा (Canada) की यात्रा में अलबरमेल (Alburmail) जहाज ने एक मछली मारनेवाली नौका को पकडा। इसमें नौका के स्वामी की कुल कमाई लदी हुई थी। नाविक ने कहा "महाशय! मेरा एक बहुत बडा परिवार घर पर उत्सुकता से हमारे प्रत्या-गमन की बाट जोहता होगा, कृपा कर मुझे बन्दी न कर दया

दिखलावे"। यह सुनकर उदारचित्त नेलसन ने जहाज़ को केवल छोड़ ही नहीं दिया वरन् एक प्रशंसापत्र अपने हाथ से लिखकर दे दिया, जिससे बीच में कोई जहाज उस नौका से अधिक छेड़छाड़ न कर सके।

यह हस्त-लिखित पत्र आज तक बोस्टन ( Boston ) में रक्षित रहकर, हमारे चरित्रनायककी असीम दयालुता, कोमलता तथा उदारताका परिचय संसारको दे रहा है।

बोस्टन ( Boston ) बन्दरसे पार होनेके समय चार फ्रेंच जहाज़ोंने अलबरमेल ( Alburmail ) पर धावा किया, परन्तु नेल्सनने अपनी नाव्य विज्ञता पर विश्वास कर बालुकामयी कूलोंपर जहाज़ोंको खेंचकर फ्रेंच नाविकोंकी आँखोंमें ऐसी धूल झोंकी कि वे अपना सा मुँह लिये लौट गये।

इस समय की एक घटना विशेष द्रष्टव्य है। बोस्टनही में नेलसन एक अयोग्य विवाह बन्धन करनेपर कटिबद्ध हुआ, परन्तु अपने एक मित्र अलेखजन्दर डेरीसन ( Alexander Darison ) के विशेष अनुरोधसे ऐसा न कर पाया नहीं तो आज चरित्रनायकका जीवन विषम और विषमय हो जाता।

जहाज़ अलबरमेल ( Alburmail ) को एक न्यूयार्क (New York) जानेवाले देशनिकासित बेड़ेका भार दियागया था। सैण्डीहुक ( Sandy Hook ) पहुँचने पर नेलसनने प्रधान एडमिरल ( Admiral ) डिगबी ( Digby ) से भेंट

की। डिगवी ( Digwi ) नेलसन पर अत्यन्त कृपा-दृष्टि रखता था।

एक रोज डिगवी (Digwi) ने कहा "मित्र। तुम्हारी नूतन स्थिति तो अत्यन्त लाभदायिनी है।" नेलसनने उत्तर दिया, "ठीक है, महाशय! परन्तु वेस्ट ईण्डीज़ ( West Indies ) बड़ा गौरवदायक स्थान था।"

चरित्रनायककी व्यवहारदक्षता अब लोगोंपर खूब विदित हो चुकी थी। एक दिन लार्ड हुड, सक्लिङ्ग (Suckling) के एक अन्तरंग मित्र,ने राजकुमार विलियम हेनरी (William Henry )से नेलसनका परिचय कराया। उन्होंने कहा 'यदि कुमार गूढ़ नाव्य विषय पर कुछ पूछनेकी इच्छा रखते हों तो इस युवकसे पूछें। नेलसनको छोड़कर और कोई कप्तान इस विषयको पूरी व्यवस्था नहीं कर सकता।'

उस समयसे राजकुमार नेलसनको अत्यन्त प्यार करने लगे और नेलसनकी सुन्दरता तथा गुणज्ञताका बखान बड़े प्रेमसे करते थे। जब कभी नेलसन उत्साहसे नाव्यविषयोंपर इनसे बातें करता तो यही ज्ञात होता था कि नेलसनकी विचक्षण बुद्धिकी समता दूसरा कोई नहीं कर सकता है।

पाठक! जगत्‌में अनेक मनुष्योंका नाम बड़ा हुआ है, अनेकोंने विराट ख्याति प्राप्ति की है। ऐसे बहुत अल्प मनुष्य देखे जाते हैं जिनमें गुणोंका पूरा समूह विद्यमान हो। परन्तु हम लोगोंका चरित्रनायक एक ऐसा ही सर्व गुण सम्पन्न कर्मवीर था।

ऐसा देखा जाता है, कि जिन मनुष्योंको विशेष ख्यातिकी अभिरुचि होती है वे अपने ही को सर्वश्रेष्ट मानते और अपने मित्रों तथा आधीनोंकी गुण प्रशंसा कदापि नहीं करते, परन्तु हमारी सम्मतिमें वे नराधम है।

विज्ञ पाठक! नेलसन एक आदर्श पुरुष था। इसके सर्वगुणोंमें गुणग्राहिताका अनमोल गुण प्रशंसनीय था! यदि नीचेसे नीचा सिपाही भी नेलसनकी दृष्टिमें कोई विशेष-गुण-सम्पन्न बोध होता तो बिना उसकी बड़ाई किये वह कदापि नहीं रहता।

नेलसनकी अलबरमेल ( Alburmail ) पर की न्यूयार्क (Newyork)वाली यात्रामें ऐसा अनुमान होता था कि बाहमा ( Bahma ) के रास्ते पर फ्रेंच लोगोंका सामना अवश्य करना पड़ेगा। लार्ड हुड ( Lord Hood ) ने इस पर विचार करते हुए एक दिन नेलसनसे कहा "महाशय! मैं अनुमान करता हूँ कि बाहमा ( Bahma ) के मार्गपर अनेक बार आने जानेसे आपको मार्गका अच्छा ज्ञान होगा।" नेलसन ने गम्भीर भावसे उत्तर दिया, 'यह ठीक है कि मैं मार्गसे पूरा परिचित अवश्य हूँ, परन्तु मेरा सहकारी लेफ्टिनेण्ट ( Lieutenat ) इस विषयमें मुझसे कहीं बढ़ा चढ़ा है।" पाठक! इसका नाम सच्ची गुणग्राहिता है।

फ्रेंच लोग कैबोलो के नौकाश्रय में घँस बैठे थे। नेलसन अपने जहाज पर फ्रेंच झण्डा लगाकर 'कैबोलो'

और 'लाम्य धारा' के बीच टोह लगा रहा था। इतनेमें एक 'स्पेन' का जहाज उधर से आ निकला। इस समय स्पेनवाले फ्रेञ्चोंकी सहायता कर रहे थे। नेलसनके जहाज ने फ्रेञ्च भाषामें उसे पुकारा। स्पेनवालोंको इसके अँग्रेजी जहाज होनेका स्वप्नमें भी अनुमान न था। बात ही बातमें नेलसन ने शत्रुओंकी सैन्य और जहाजोंकी संख्या मालूम कर ली। सब बातें मालूम होने पर 'स्पेन' की यह नौका फौरन बन्दी कर ली गयी।

उस जीते हुए जहाज पर 'जरमन' सम्राट्का एक राजकुमार प्राकृतिक इतिहास ( Natural History ) के नमूने ढूँढने वाले अपने अनेक वैज्ञानिक फ्रेञ्च मित्रोंके साथ पकड़ा गया।

नेलसनने उनके आदर सत्कारमें कुछ त्रुटि न की। बड़ी आवभगतसे उनको अपने साथ खिला पिला कर, उन्हें डोंगियों पर स्वच्छन्दतासे विचरनेकी आज्ञा दे दी। परन्तु उनसे एक पत्र लिखवा लिया कि यदि प्रधान सेनाध्यक्ष हमारे इस प्रस्तावको स्वीकार न करेंगे तो इन लोगोंको स्वयम् बिना आपत्तिके बन्दी बना देना होगा।

रास्ते ही में नेलसनको समाचार मिला कि शत्रु राज्यसे सन्धि स्थापन हो गई। नेलसन शीघ्र ही 'अलबरमल' ( Alburmal ) पर स्वदेश लौट आया। नेलसनका प्रथम कार्य्य स्वदेश लौट आनेपर यह हुआ, कि उसने अपने

मिलनेके पहिले अपने नाविकोंका बाकी वेतन दिलवा दिया। नेलसन अपने इन कार्य्यों से नाविक संसारमें सर्व-प्रिय हो गया। नेलसनको राज्यदरबार में जानेका यह पहला सुअवसर प्राप्त हुआ। दरबारकी नियमित संस्कार समाप्त होनेपर उसने अपने मित्र के सङ्ग भोजन किया। अपना लोहवर्म उतार, कर आज नेलसन सुखपूर्व्वक मामूली वस्त्र पहिन कर मित्रोंसे मिलता फिरा। शेष दिन हँसी खुशीमें कटे। नेलसन प्रतिदिन अपनी नीति कहानी अपने परिजन वर्गों को सुना प्रमुदित करता था।

पाठक! नायक का सचमुच ही जीवन-प्रभात हुआ।



नश्वर धनका कदापि नहीं हो सकता।" नेलसन अपने समयका सदुपयोग करनेके लिये फ्रान्सको कप्तान मेकिनमरा (Macanmara) के सङ्ग रवाना हुआ, परन्तु भाग्य पुन इसे स्वदेश खेंच लाया। इसकी प्रिय बहिन ऐनी (Anne) की अकालमृत्यु से पिता अत्यन्त दु:खी हो गये हैं, यह सुनते ही वह स्वदेश लौट कर पिताको सान्त्वना देनेके लिये उनके साथ रहने लगा।

दु:ख शोक तथा प्रिय-मित्र-वियोगकी अग्नि यदि मनुष्यके हृदयमें एक सी कुछ दिन भी रहती, तो संसारमें स्वास्थ्य और सुख स्वप्न हो जाते। परन्तु विषोंके लिये संसारमें प्रतिविष भी है। समय, विवेचना तथा धर्म ही भयानक शोकाग्निके लिये विपन्न जल है। मनमें शोककी मात्रा ज्योंही बढने लगती है त्योंही इनका प्रादुर्भाव होता है और शनै शनै इनका ह्रास भी हो जाता है।

नेलसनके पिता भी अब स्वस्थचित्त हो चले। पिताको ढाढस बँधा देख नेलसन पुन, फ्रान्स लौट आया और एक अँगरेज पादरी की कन्याके साथ विवाह करनेका उद्योग करने लगा। परन्तु अपनी आर्थिक दशाकी हीनताके कारण उसने अपनी इच्छा पर बलात्कार विजय प्राप्त की। यदि चरित्र-नायक चाहता तो व्याहकर अल्प वेतनमें ही दु:खसे निर्वाह कर सकता था, परन्तु उसे अपने कष्टोंमें एक निरपराधिनी स्त्री को सगिनी बनाना सरासर अपनी सत्प्रवृत्तिके प्रतिकूल बोध

एक मिनट के लिये भी नेत्रों से ओट नहीं होने दिया, यहाँ तक कि फ्रान्सवालों को बिना अपना काम किये ही लौट जाना पड़ा।

एक दूसरा उदाहरण और भी सुनिये। इस समय अमेरिकावाले इंगलैण्ड के साथ व्यौपार करके अँगरेजी प्रजाओं के उन स्वत्वों का उपभोग—जो अमेरिकावालों को स्वाधीन होने के पहिले थे—शासकों की आँखों में धूल झोंककर करते थे। परन्तु नेलसन को चट्टेबाज़ी दिखलाना ज़रा टेढ़ी खीर थी। नेलसन ने चट इनकी धूर्तता देख ली और इनको रोकने का उपाय करने लगा। ब्रिटिश प्रजा इन धूर्त व्यापारियों के कारण बड़े घाटे में रहती थी।

एक दिन जब ऐसे कई जहाज़ बन्दरगाह में आ लगे, तब नेलसन ने प्रधान अध्यक्ष से मिलकर पूछा, कि हम लोगों को क्या देश के व्यौपार की ओर ध्यान देना नहीं चाहिये? क्या हम लोगों को सरकार के नेविगेशन ऐक्ट (Navigation Act) के प्रतिपालन का उद्योग नहीं करना चाहिए?

ये धूर्त व्यौपारीगण नित्यप्रति हम लोगोंकी प्रजा के व्यापार का ह्रास करते हैं, अत इनको रोकना हम लोगों का धर्म है।

प्रधान अध्यक्ष ने उत्तर में कहा, कि Navigation Act की कुछ खबर मुझे नहीं है, न इन्हें रोकने की कोई आज्ञा ही है। नेलसन ने पूर्वोक्त क़ानून को दिखलाकर अपने कथन का

समर्थन किया, और अभिलषित आज्ञा उसने ले ही कर छोड़ी।

मेजर जनरल सर टामस शरली (Major General Sir Thomas Shirly) साहब गवर्नर से भी इन बातों पर नेलसन का भारी वादानुवाद हुआ। शरली साहब ने चिढ़ कर एक दिन कहा, "मैं तुम्हारे से छोकरों से गूढ़ विषय पर वादाविवाद करना नहीं चाहता।"

नेलसन तो अपने कर्म करने पर दृढ़ था, बोल उठा, "महाशय! इँगलैण्ड के वर्त्तमान राजमन्त्री मेरी ही वयस के होने पर भी इतना बड़ा राजकार्य्य चला सकते हैं। विद्वत्ता में वयस की बहस नहीं होती। मैं अपने कार्य्य करने में वैसाही विज्ञ हूँ जैसा इँगलैण्ड के प्रधान मन्त्री अपने राजकार्य्य में।"

क्रोट (Crete) द्वीप में आकर व्यापारी जहाजों को इस बात की घोषणा कर दी, कि नेविगेशन ऐक्ट अब व्यवहार में लाया जायगा। अमेरिकन जहाज़ ने वहां से उस समय तो लङ्गर उठा अपना रास्ता लिया, परन्तु एक महीने के बाद लार्ड ह्यूग (Lard Huge), प्रधान अध्यक्ष, ने घोषणा की, कि यदि पोर्ट गवर्नर व्यापारी जहाजों को आने देना चाहे तो ऐसा कर सकते हैं।

नेलसन अपने कर्म्म को खूब जानता था, तुरन्त प्रधान अध्यक्ष के यहां उसने अपील की, कि मैं इस नियम-विरुद्ध

आज्ञा का पालन नहीं कर सकता । एडमिरल पहली दफे तो बड़े क्रोधित हुए परन्तु फिर कुल बातों पर विचार कर नेलसन की उन्होंने बड़ी बड़ाई की तथा अपनी आज्ञा रद्द कर दी ।

शुल्क स्थानों (Custom House) में विज्ञापित कर दिया गया, कि एक निर्दिष्ट समय के बाद से कुल परदेशी जहाज़ जो ब्रिटिश नौकाश्रयों में पाये जायँगे बन्दी कर लिये जायँगे । कुछ दिनों के बाद चार विदेशी जहाज़ नौकाश्रय में पाये गये और विज्ञापन के अनुसार उन लोगों को ४८ घण्टे में स्थान छोड़ देने की आज्ञा दी गई ।

परन्तु नाविकों ने साफ इनकार किया और यहाँ तक झूठ बोले, कि हम लोग अमेरिकावासी नहीं हैं । पूछने पर, इन लोगों ने, चरित्रनायक के जहाज़ पर, नाव्य विचाराधीशों के सम्मुख अमेरिकन होना फिर स्वीकार किया । विचाराधीश की आज्ञा से इनका सारा माल मता ज़ब्त कर लिया गया ।

अब तो टटा बढ़ा, विदेशियों ने चन्दा कर अपील की और साथही साथ कर्मवीर नेलसन पर ६ लाख रुपये की हानि का दावा किया । चरित्रनायक अपने जहाज़ पर गिरफ़ार हो जाने के भय से रहने लगे । इस समय चरित्रनायक की स्थिति किञ्चित दु:खप्रद थी । इस स्थिति पर शोक प्रकाश करते हुए नेलसन के एक साथी ने कहा "महाशय आपकी अवस्था कारुण्यजनक अवश्य है ।"

नेलसन के लिये 'करुणा' शब्द अत्यन्त ही घृणास्पद था ।

आपने कहा, "करुणा। क्या यह करुणास्पद अवस्था है? महाशय! मैं जगत् आदर्श हुआ चाहता हूँ और ऐसा होने के लिये मैं प्राण को भी अर्पण कर सकता हूँ।"

आठ सप्ताह तक चरित्रनायक इस प्रकार अपने जहाज़ पर निरुद्ध रहे। इस बीच में मामला न्याय्य न्यायाधीशों के हाथ में आ गया और आप उनकी रक्षा में जहाज़ से उतरे।

दुष्ट व्यापारियों ने चरित्रनायक को पुलिस के हाथ में देने का बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु जजों के भय से वे ऐसा कर न सके। इस समय नेमी के मुख्य सभासद हर्बर्ट साहबने, असामान्य उदारता का परिचय दिया। आपने चरित्रनायक के १० हजार पौण्ड के ज़ामिन होकर उनकी रक्षा की।

चरित्रनायक ने एक आवेदनपत्र इँगलैण्ड भेजा, जिस पर राज्य-व्यय से इनका पक्षसमर्थन करने की आज्ञा हुई। आपके आवेदनपत्र तथा कार्य्य-विषय के प्रस्ताव पर स्टेट सिकत्तर ने एक "रजिस्टर ऐक्ट" का विधान किया।

अपने प्रस्ताव का अनुमोदन तथा अपने कृत कार्य्य पर सरकारको सन्तोष प्रगट करते देख, आप अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। परन्तु प्रधान अध्यक्ष को सरकार से देश की व्यापार रक्षा पर धन्यवाद पाते देख भी आप जल उठे।

आप कहते हैं, "यदि अधिकारियों को कुल बातें मालूम होतीं तो मुझको धन्यवाद न देकर, प्रधान अध्यक्ष को धन्यवाद कदापि नहीं देते। मुझे अत्यन्त वेदना होती है कि तन, मन,

धन देकर भी मैं अपने कृतकार्यों पर धन्यवाद न पा सका। मैं जितना दु:खी इस प्रकार तिरस्कृत होकर हुआ, उतना नौकरी छूटने से कदापि नहीं होता। या तो मैं नौकरी से छुड़ा ही दिया जाता या मुझे कुछ धन्यवाद ही मिलता। यदि मेरे सच्चे कर्म्म अनुष्ठान का यही बदला है, तो मैं अब सदा सावधान रहूँगा, जिसमें ऐसे कामों में अग्रसर कदापि न होऊँ, परन्तु मैं इतने ही से सन्तुष्ट हूँ कि मैं ने अपना कर्म किया है।"

सुविज्ञ पाठक! राज-नियम के दु:खप्रद अनिर्णयों से चरित्रनायक कैसे दुखी हुए थे, यह उनके पूर्वोक्त वचनों से साफ झलकता है।

रसिज्ञ पाठकवृन्द! आप लोगों के कोमल कलेजे पर चरित्रनायक के दु:खों को सुनकर अवश्य ही भारी धक्का पहुँचा होगा। अस्तु, आपके मन-विनोद का उपाय मुझे करना अत्यावश्यक है। अच्छा पाठकगण! अब आप लोग लेखक के निहोरे, उस चरित्रनायक की बारात में चलने की तैयारी कीजिये। मनोविनोद के साथ ही साथ Wedding Cake (व्याहमिष्टान्न)से भी आपलोगोंका सत्कार किया जायगा। आप इस बारात में वेश्याओं के बेसुरेगान के साथ रसिको की झूठी वाहवाही की तान यदि आप न सुनें तो निमन्त्रक को, मुर्दादिल और कृपण न कह कर, क्षमा करेंगे। चरित्रनायक की दिगदिगन्त में फैली हुई कीर्त्ति और यश-गान तथा

देश-बन्धुओं की अन्तरात्मा से उत्पन्न सुरों के नक्कारखाने के सामने झूठी—मनगढन्त टप्पों को बेसुरतान को—तूती की आवाज़ सुनना उचित नहीं।

पाठक! क्षमा करेंगे, दूल्हा ऊँचे तामझाम पर चढ कर नहीं निकलेगा। अनियन्त्रित बारात पारटी (Mismanaged Barat Party) कह कर निमन्त्रक की मिट्टी पलीत न करें। क्या किया जाय चरित्रनायक अपने स्वदेश गौरव के उस चिरस्थायी उन्नत सिंहासन पर बैठ कर व्याह करने चला है जिस पर बैठे हुए को उतार कर ऊँचे तामझाम पर चढाना मानों नीचा दिखाना है।

नेलसनने अपनी ब्रह्मचर्य्यावस्था पूरी कर, अपनी युवावस्था के पराक्रम को प्रमाणित करते हुए सर्व्वश्रेष्ठ कहला कर, ११ मार्च १७८७ को, अपने उपकारक मित्र हर्बर्ट साहबकी भतीजीका पाणिग्रहण किया। ऐसे शुभवसरमें, राजकुमार हेनरी भी उपस्थित थे और इन्होंने ही कन्यादान किया। पाठक! बडा आनन्द समारोह है, लेखक आपसे "अलये शादी सरजाम मुबारक होवे" गदगद हृदय से गाने का अनुरोध करता है।

चरित्रनायक की उदारता का वर्णन करते करते यदि इन्हें कर्ण वा निष्काम भीष्म कह बैठें तो अत्युक्ति न होगी। एक समय हर्बर्ट साहबने, अपनी दुहिता से चिढकर, अपनी कुल सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी अपनी भतीजी चरित्र-

नायिका को बनाना चाहा। यह सम्पत्ति यदि नेलसन ले लेते तो इनकी दरिद्रता क्षण भर में दूर हो जाती, परन्तु उन्नत हृदय, उदारचरित्र नायकने इस प्रकारसे प्राप्त परधनको मिट्टीके ढेले समान समझा। आपने अपने समूहको ऐसा करने से रोका और बड़े उद्योगसे बाप बेटोंके फटे दूध रूपी मनोमालिन्यको जमाया।

व्याहके बादसे अनेक मूर्ख यह विश्वास करने लगे थे, कि चरित्रनायक अब अपने सुख सम्भोगमें मग्न होकर देश-कार्य्यसे हाथ खींच लेंगे, परन्तु यह एकदम मिथ्या विचार था। पाठकगण! नीचे उद्धृत कुछ लिखावटोंसे आप ही अनुमान कर सकेंगे, कि नेलसनने कितनी कर्त्तव्य-निष्ठा तथा कैसी प्रेम-लिप्सासे युक्त होकर अपनेको विवाह बन्धनमें नियोजित किया था। विवाहके कुछ दिन पहलेके पत्र देखिये —

( १ )

प्यारी!

हमलोग विलग तो अवश्य हो हैं, परन्तु यह वियोग हमारे प्रेमके अंशोंका प्रतिदिन संयोग ही करता जाता है। जगत् के स्वदेशका अधिकार मुझपर बहुत ज़ियादः है। सार्वलौकिक कर्मके सम्मुख आत्मसुखका त्याग ही मैं अपना धर्म्म समझता हूँ। कर्तव्य ही नाविकोंका मुख्यधर्म्म है, अतः स्वकर्त्तव्यके निमित्त अनेक कष्टोंसे भी आत्मोल्लास पर विजय पाना सराहनीय है।

प्रेमजीवी
नेलसन।

( २ )

प्यारी !

तुमने यह कहावत सुनी होगी कि "समुद्रका खारा पानी तथा परोक्षता प्रेमको हृदयसे धो बहाते हैं" परन्तु मैं इस लकीरका फ़कीर नहीं हूँ। यद्यपि मैं प्रतिदिन छ.कुण्ड समुद्र जलसे स्नान करता हूँ, यद्यपि मैं तुमसे बहुत दूर हूँ, तथापि तुम देखोगी कि तुम्हारा यह प्रेम-पिपासु निर्दिष्ट समयके कुछ दिन पहले ही तुमसे आ मिलेगा।

प्रेमपिपासु
नेलसन ।

( ३ )

प्रिये !

तुम्हारे पास पत्र लिखना मानो तुम्हारी पत्री पानेके आनन्द से किञ्चित ही अल्पानन्दका अनुभव करना है। सच्चे हृदयो-द्गारसे पूरित तुम्हारी पत्री बांचनेसे मेरी अन्तरावस्था कैसी होती है यह अनिर्वचनीय है, मेरी लेखनी शक्तिहीना है। सुख जो पूछो, तो तुमसे वियोगमें सुख कहाँ, तुम्हीं हमारी सर्वस्व हो, तुमसे रहित यह-जन पूर्ण संसार मेरे लिये निर्जन कानन है, क्योंकि पूर्वसे ही मुझे इस संसारका अनु-भव है। यह क्लेश तथा उद्विग्नताका जन्मदाता है, वर्त्तमान में मेरा ऐसा विचार है और यदि ईश्वरने चाहा तो भविष्यमें

भी ऐसा ही रहेगा। प्रेम स्वयम्भू है, यह दबाव या स्वार्थका फल नहीं है।

तुम्हारा
नेलसन।

चरित्रनायक लीवर्ड द्वीपमें कुछ दिनों तक रहे। आपका प्रत्येक कार्य मानो देश हितके लिये ही होता था। यहां पर आपने ठेकेदारों, पारितोषिक बांटनेवाले प्रतिनिधियों तथा अन्य नाव्य अधिकारियोंकी अनेक चोरियां पकड़ीं। आपने इस विषय में जो जांच की तो मालूम हुआ, कि इन दुष्टोंने करीब डेढ़ करोड़ रुपयेका धोखा सरकारको दिया है।

आपने इन हिसाबोंकी एक एक नक़ल प्रत्येक दफ़्तरमें भेजी, परन्तु इन चोट्टोंकी ऐसी साख ऊपर भी जमी थी, कि इन लोगोंने इस विषयकी जांच ही नहीं बन्द करवा दी, बल्कि चरित्रनायक पर ही अनेक दोषारोपणकर प्रधान अध्यक्ष के कान भी भर दिये।

चरित्रनायक देश लौटनेके पहले, इन दुष्टोंकी करामातसे करीब करीब नौकरीसे अलग ही कर दिये गये थे। धन्य रे राज्य-न्याय!

नेलसनके बोरियस जहाजके नाविकोंको छोड़ और कोई ऐसा नहीं था जो इस द्वीपकी दूषित वायुके कारण अस्वस्थ न रहता हो। चरित्रनायक अपने सहचरोंके स्वास्थ्य तथा मनो-

विनोदका पूरा ध्यान रखते थे। आप सदा हँसी दिल्लगीसे उनका मन प्रसन्न रखते थे।

आज हम लोगोंके चरित्रनायक द्वीप छोड़कर देश लौटते हैं। आज आप अपने ज्येष्ठ अध्यक्षसे बात ही बात में कह बैठे, "महाशय! मैंने इतने दिनोंकी नौकरीमें सरकारकी अगुणग्राहिता का परिचय पूरे तौरसे पा लिया, मेरी यह अन्तिम नौकरी है, अब मैं कदापि सरकारी नौकरी नहीं करनेका, देश लौटते ही मैं इस्तीफ़ा दे दूँगा।" कमानने ज्यों ही इनका हृदयोद्गार सुना, त्योंही बिना इनसे कुछ कहे एक चिट्ठी प्रधान अध्यक्षके यहां इस विषयकी भेजा, साथ ही यह भी लिखा कि यदि नेलसन स्थिति परित्याग कर देगा तो ब्रिटिश राज्य आधारका एक बड़ा स्तम्भ टूट जायगा। चरित्रनायकने स्वदेश लौटने पर एक आज्ञापत्र पहले प्रधानाध्यक्षसे मिलनेका पाया।

नेलसन देश लौटते ही बड़े सत्कारके साथ प्रधान अध्यक्षके यहाँ पहुँचाये गये तथा राज्य आदरसे भी सत्कृत हुए।

पुरानी बातें सब भूल गईं, चरित्रनायक अब पुन प्रसन्न-चित्त रहने लगे।

राजकुमार हेनरी को जो उपदेश आपने एक समय एक शत्रु पर क्षमा करनेके लिये दिया था, सराहनीय है तथा इनके उन्नत हृदयका परिचय दे रहा है।

राजकुमारके एक अपराध पर आपके नाव्यशिक्षकने कोर्ट मार्शलकी प्रार्थना की थी। राजकुमार इस अभियोगसे

बेटा! अब मैं तुम्हारा अल्प समयके लिये मेहमान हूँ, मुझे छोड़ न जाओ।"

सुहृद नेलसनको इतना वचन उमड़ा देनेके लिये बहुत था। आप तत्काल ही यात्राका विचार छोड़कर, सपत्नी पिता सेवामें लीन हो, स्थानपर ही रहने लगे।

जब पिता सो जाते थे, चरित्र नायक प्रिया अर्द्धाङ्गिनीके सग पुष्पवाटिकामें कभी इधर उधर बालककी नाई पक्षियोंको पकड़ते हुए, कभी वंशी बजाकर गीत गाते हुए क्रीड़ा करते फिरते थे।

ऐसे शान्त समयमें भी नेलसनके लिये शान्ति नहीं थी। इस समय बन्दी किये गये अमेरिकन जहाज़ोंका झगड़ा पुनः उठ खड़ा हुआ था। कभी कभी नेलसनको इस झगड़ेकी एक टक्कर लग ही जाती थी।

एक दिन चरित्रनायक एक घोड़ा खरीदने मेलेमें गये हुए थे। इतनेमें एक सरकारी बर्कन्दाज अमेरिकन कप्तानोंके २ लाख रुपयों के दावे का नोटिस मकान पर दे गया।"

नेलसनने घर लौटकर जो नोटिस देखा सर्द हो गया। भावी नाशका विचार विचारके हृदयको तप्त करने लगा। आप बोल उठे "इतनी अवज्ञाके योग्य मैं कदापि नहीं हूँ। परन्तु अब मैं फटकार नहीं सह सकता। मैं शीघ्र ही खजानेमें इस विषयका समाचार देता हूँ, यदि सरकार इसबार मेरा पक्ष न लेगी तो देश त्यागकर फ्रान्स चला जाऊँगा।"

चरित्रनायकने एक पत्र इस विषयका खजाने में भेजा, साथ ही यह भी लिखा, कि यदि फिरती डाकसे पत्रोत्तर न मिला तो मैं अवश्य फ्रान्सदेशकी शरण ग्रहण करूँगा। पत्र डाकमें डालकर आपने कुल सामान देश त्यागका कर लिया।

क्या देशभक्त चरित्रनायकको पत्रोत्तर न देकर, इँगलैण्ड अपने स्वच्छ नाममें कालिमा पोतेगी? नहीं! नहीं! कदापि नहीं! कोई देश, अपने ऐसे निःस्वार्थ भक्तको अपमानकर, उन्नतशील नहीं हो सकता।

दूसरे दिन मनोवाञ्छित उत्तर आ गया। चरित्रनायकका सब दुःख शोक दूर हो गया। पत्रमें लिखा था—"आप बड़े वीर, निःस्वार्थ देशसेवक हैं, आप कदापि भय न खायँ, सरकार निज व्ययसे आपकी रक्षा अवश्य करेगी।"

इस बार नेलसन बहुत प्रसन्न हुए, परन्तु 'दूसरी बार जब आप नौकरीके लिये तीन चार बार उद्योग कर विफलमनोरथ हुए तो पुनः आपकी उद्विग्नता बढ़ने लगी। परन्तु अपने अन्तरंग मित्र राजकुमार हेमरी तथा हुड साहबकी कृपासे १० जनवरीको ( Agmamnon ) एगमेमनन पर जगह मिली।



# पाँचवाँ परिच्छेद ।

*नेलसन भूमध्य सागरमें ।*


समय अब समुपस्थित है। देखना है, चरित्रनायक क्योंकर इसका उपयोग करते हैं। ६४ तोपवाले 'एगमेमनन'का सम्पूर्ण भार चरित्रनायकको ता: ३० जनवरीको मिला। अभी अध्यक्षता-सूचक अभिषेकका तिलक भी नही सूखा था, कि सुननेमें आया कि फ्रेञ्च प्रजा सत्तक सैन्यसे हॉलेण्ड और इंगलैण्डकी सेनाने समर आरम्भ कर दिया।

नेलसन तो सर्व्व प्रिय पहले ही होचुके थे। इस समय समरमें चरित्रनायक भी जानेवाले हैं, यह सुसमाचार सुनते ही नेलसनके स्वग्रामवासी नाविकोंका टिड्डीदल उमड पडा। जो आते वह अपनी इच्छा सदय कप्तान नेलसनके 'एगमेमनन' पर ही वने रहने की प्रकट करते थे। यह देख और और सहयोगी कप्तान नेलसन की इस लोकप्रियता पर ईर्षा करने लगे।

चरित्रनायकको फ्रान्सदेशवासियोंसे आन्तरिक घृणा थी,

आप अपने सहचरोंको तीन बातका उपदेश दिया करते थे। पहली—उन्हें सदा अपने प्रधानकी आज्ञा बिना तर्क वितर्क किये माननी चाहिये। दूसरी—अपने देश तथा राजासे द्रोह करनेवालेको अपना शत्रु समझना चाहिये। तीसरी—फ्रान्स देशवासियोंको राक्षसोंसे भी बढ़कर घृणास्पद समझना चाहिये।

इँगलैण्डमें इस समय खलबली फैल गई। लोगोंने सुना कि फ्रेञ्च सेनाको एक ऐसी युक्ति मालूम है, कि वह गोले मारकर अपने शत्रुके जहाजको जलाकर राख कर देती है।

नेलसनके पास जब यह समाचार पहुँचा, आप खूब ठठाकर हँस उठे और बोले "कुछ पर्वाह नहीं हम लोग इन अग्नि बरसानेवाले महाशयोंसे इतना भिड़कर युद्ध करेंगे, कि उनके गोले बिल्कुल बेकाम हो जायँगे।" इसी विचारसे चरित्रनायक अपने जहाजको शत्रु नौकाके निकट भिड़ानेका उद्योग करने लगे।

पहले इन लोगोंने "टौलाउन और मार्सेलीज़" नगर पर धावा किया, परन्तु यह युद्ध नहीं हुआ। चरित्रनायक इस समय घोर समरके निमित्त उत्सुक थे। आप कहते थे कि इस घेरेमें हमलोगोंको कीर्ति लाभका उत्तम सुअवसर था।

पाँच महीनेके बाद चरित्रनायकको कोर्सिका द्वीपमें जानेकी आज्ञा मिली। समर-प्रिय वीर आज बड़े आनन्दसे नई यात्राकी तैयारी करने लगे।

पाठक! यहाँ पर कोर्सिका द्वीपका कुछ पूर्व इतिहास आपको सुना देना बहुत उचित है। यह द्वीप इटली देश का एक भाग समझा जाता है। प्रकृति ईश्वरकी इस द्वीप पर विशेष कृपा है। यद्यपि मलेरिया इटलीके प्रायः सब द्वीपोंमें बहुतायतसे फैला रहता है, परन्तु कोर्सिका द्वीप इस व्याधिसे बचा हुआ है। यहाँ की भूमि सुस्वादु फल फूलोंकी ही नहीं, बल्कि वीर स्वदेश भक्तोंकी भी प्रसवनी है।

जिनोआके प्रजासत्तक राज्यने इस द्वीपको फ्रान्सदेशवालों के हाथ बेच दिया। यदि पाठक जिनोआवालोंके अधिकारके बारेमें पूछे तो यही कहना अलम् होगा, कि जिसकी लाठी उसीको भैंस।

कोर्सिका वासी अपने पडोसीकी इस धृष्टता पर जल उठे और अपनी समग्र शक्ति एकत्रित कर फ्रान्सवालोंसे जा भिडे। परन्तु बाघ बकरीका युद्ध था बिचारे कोर्सिकन हार गये। ब्रिटिश सिंह फ्रान्सवालोंका यह अन्याय सह नहीं सके, ब्रिटन लोग स्वतन्त्रता देवीके एकांग भक्त हैं। अतः जब कभी किसी भक्तको इस देवीकी प्रतिमा रक्षा में कटिबद्ध, परन्तु अशक्य, पाते हैं तो शीघ्र ही अपनी विकट हुँकार करते हुए धर्मरक्षा पर आ डटते हैं।

इस समय भी ऐसा ही हुआ। सरकारकी आज्ञासे प्रधान अध्यक्षने वीर चरित्रनायकको इस धर्मयुद्धमें भेजा।

नेलसन पर लार्ड हुड, प्रधान अध्यक्ष, का पूरा भरोसा

था। इसी कारणसे बस्तिया (Bastia) शहरके घेरेमें आप नियुक्त हुए, यह शहर युद्धका प्रधान स्थल था। चरित्रनायक पूरा उद्योग विजय पानेका करने लगे, परन्तु कार्य्य कुछ ऐसा वैसा नहीं था, कि शीघ्र ही सिद्ध हो जाता। शत्रु-सैन्यकी सख्या नेलसनकी सेनासे कहीं अधिक थी। इतनी अधिक सेनासे पराजित होना कुछ अधिक लज्जाकी बात नहीं कही जा सकती, परन्तु इसपर भी वीर ने प्रधान अध्यक्षके यहाँ कभी आतुरता नहीं प्रगट की। नेलसन ऐसी २ कठिनाइयोंसे कब उद्विग्न होनेवाले थे? आपको विश्वास था, कि उनका एक वीर सैनिक तीन शत्रु सैनिकोंका सामना कर सकता है।

चरित्रनायकने केवल १२०० सेनाके सङ्ग भीम विक्रम तथा रणकौशल दिखलाते हुए ४५०० शत्रु सेनासे शस्त्र रखवा ही लिये। बस्तिया नगर पर अब इँगलैण्डका भव्य भण्डा फहराने लगा।

बस्तिया (Bastia) विजयका समाचार जिस समय प्रधान अध्यक्षने पाया, विश्वास नहीं किया, परन्तु जब चरित्र-नायकका पत्र मिला, आप आनन्दोन्मत्त हो गये। उन्होंने नेलसनको बुलवाया और उनकी बहुत प्रशंसा की। चरित्र-नायक तो केवल सम्मान के भूखे थे, इस सम्मान पर फूले न समाये।

समाचार मिला, कि फ्रान्सवाले बस्तियासे पराजित होकर भागना चाहते हैं। लुड शीघ्रही नेलसनको सङ्ग ले एक

समरयान पर सैनिकोंके सङ्ग शत्रुओंकी टोहमें निकल पड़े ।

चरित्रनायकने इस समय एक पत्र अपनी स्त्री को लिखा .—

प्यारी !

मैं इस समय शत्रु-सैन्यकी टोहमें जाता हूँ और परमेश्वरसे विनती करता हूँ, कि किसी प्रकार उन लोगोंको पा जाऊँ। प्रिये। यदि मैं इस युद्धमें काम हो आजाऊँ, तोभी मुझे पूरा विश्वास है कि तुम राज्य-आदरसे अवश्य ही आहृत होगी। मेरे लिखनेका यह तात्पर्य नहीं, कि मैं मारा ही जाऊँगा वल्कि अधिक सम्भावना है कि मरनेके बदले मैं कीर्तिके साथ विजय प्राप्त कर तुम्हारे पास लौट आऊँ।

मैं दृढ़ हूँ, कि मेरे हाथसे ऐसा कार्य कभी नहीं हो सकता जिससे मेरे परिजन वर्ग कभी तिरस्कृत हों। प्राणाधिके! मैंने अपना सर्वस्व तुम्हें दे दिया है, जो कुछ मेरा है वह सत्य की कमाई है।

अन्तमें, मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि होनी हो सो मुझपर होवे, परन्तु तुम अपने पुत्रके भाग्यसे सकुशल रहो।

नेलसन।

शत्रु-नौकाका पता लग गया। अब नेलसन सर चार्लस इ॰-मर्टके सङ्ग "कालवृडो" के घेरेमें सहायता देनेके निमित्त भेजे

गये। स्टूअर्ट भी नेलसन ही के ऐसे वीर और सहिष्णु थे। बडी हानि इन वीरोंको काल्वड़ीके दूषित जलवायुसे होने लगी। दो सहस्र मनुष्योंमेंसे आधेके करीब तो बीमार हो पड गये थे, जो बाक़ी बचे वे भी बिल्कुल स्वस्थ नही रहे।

इस युद्धमें चरित्रनायक भी बीमार हो गये थे। एक दिन युद्ध बडे झोंके से शुरू हुआ। नेलसन नौकापृष्ठ पर खडे दृश्य देख रहे थे। इतने ही में सामने एक गोला आकर फटा। इसमें से अनेक लोहे और बालूके कणोंने निकल कर आपकी आंखोंको बिल्कुल ढक लिया। एक नेत्र तो ऐसा जखमी हुआ, कि फिर कभी खुला ही नही।

पाठक। कर्म्मयज्ञमें वीरोंको केवल मनोल्लास, हर्ष, विषादकी ही आहुति देनेसे विश्वस्त तथा अक्षय कीर्तिका लाभ नही हो सकता। सुयश देव कठिन तपस्या से मिलते हैं। चरित्रनायकने पहिले अपने सुख-सामानकी आहुति दी। अब अङ्ग-प्रत्यङ्गों की बारी है। देखें अङ्ग-आहुतिसे भी देव प्रसन्न होते हैं वा प्राण लेकर ही सन्तुष्ट होते हैं।

वीरवर। तुमने एक नेत्र देकर देशके कोटि २ नेत्रोंको अपनी ओर आकर्षित कर लिया। रणपुङ्गव। अपनी जन्मभूमि के लिये तुम अटूट परिश्रम और असह्य दुःखोंका सामना कर रहे हो। रणशार्दूल। तुम स्वअङ्गोंसे लाल धारा बहाकर माता की मुख लालिमा रखना चाहते हो। देव। तुम धन्य हो।

तुम्हारी वीरता, तुम्हारा मातृ-प्रेम धन्य है, तुम हम लोगोंके पथ-दर्शक आलोक हो।

नेत्र पीडासे विकल रहने पर भी आप अपने स्थानसे न टले और बोले, "प्राण छूटने पर ही कर्त्तव्य छूटेगा।"

अन्तमें 'कान्वही' का पतन हुआ, वीरको जीत हुई, इस समय नायकका जहाज एकदम घायलों और अस्त्रोंका मानों कब्नागार हो गया।

शत्रु फ्रेञ्च सेना यद्यपि कोर्सिकामें परास्त हुई, परन्तु और स्थानोंमें विजयी हुई।

इस समय ग्रेट ब्रिटन, ऑस्ट्रिया और हॉलैण्डकी सम्मिलित सेना फ्रान्स और बेल्जियमसे निकाल दी गयी थी। प्रूशिया तथा ऑस्ट्रियावालोंने खदेड़े जाकर राइन नदीके दक्खिनी किनारे पर आश्रय लिया। स्पेनमें फ्रान्सका झण्डा ऊँचा हो गया।

योरपकी भविष्य तुला इस समय जरासे बोझमें नव सकती थी। बोनापार्ट की विजयी सैन्य योरपके दांतका दर्द हो रही थी, सभी देश इसके भयसे आतुर थे।

सभीकी निरनिमिष दृष्टि इस समय इँगलैण्ड और उसकी जलसेना पर अड़ी थी। इँगलैण्ड पर ही इस समय सब देशोंकी एकमात्र आशा थी।

भूमध्यसागरमें 'कोर्सिका' द्वीपकी विजयने सचमुचही इँगलैण्डका गौरव बढ़ा दिया था। फ्रेञ्चोंने विचार कर यह देख

लिया था, कि जबतक हम लोग ब्रिटिश बेडोंका समूल नाश न कर सकेंगे तब तक हमारा विजय स्तम्भ दृढ नही हो सकता अस्तु, पन्द्रह बडे बडे जहाजों और छ छोटे जहाजोंका फ्रेञ्च बेडा अँगरेज़ोंसे सामना करनेके लिये ता ८ मार्च सन् १७८५ को भेजा गया।

एडमिरल हौथम जो अब लार्ड हुडके स्थानपर काम करते थे, थोडी सेना लेकर उन लोगोंका सामना करने चले। अँगरेजोंके बलका ऐसा दबदबा शत्रु-सैन्य पर था, कि स्वल्प-बल युक्त रहते भी हौथमका सामना करनेका साहस फ्रेञ्चोंको न हुआ। शत्रुदल रातभर तीन मीलकी दूरी पर पडा रहा। सवेरा होते ही ब्रिटिश जहाज़ोंने शत्रुपर धावा किया। इस समय नैलसनने अपने नियमानुसार एक चिट्ठी अपनी अर्द्धांगिनीको लिखी —

प्यारी !

सबका जीवन परमेश्वरके हाथ है। वह पूरा विज्ञ है कि किसकी रक्षा और किसका नाश करना उचित है। जीवनका वारा न्यारा करना यद्यपि उसके हाथ है तथापि चरित्र और सुयशको रक्षा मेरे ही हाथ है। इत्यलम्

नैलसन

नैलसनका जहाज अत्यन्त शीघ्रगामी था। शत्रुदलके निकट पहुँच कर उसने "काइरा" जहाज़को बन्दी कर लिया। काइरा बडा जहाज था परन्तु बहुत बडा होना

भी भद्दापन है। इस समय 'ऐगममनन' की लाघवता ही उसके विजयका कारण हुई। नेलसन अपनी तोपोंका मुँह तब तक बन्द किये रहा, जबतक ये शत्रु जहाजके एकदम पास न जा पहुँचे, वहाँ पहुँचते ही इसने ऐसी गोलोंकी बाढ दागी कि काइराके पतवार इत्यादि नष्टभ्रष्ट हो गये। अब फ्रेंच जहाज अपने काइराको दुर्दशा देख नेलसन पर झपटे। इधर हौथमने नेलसनको फिर आनेका संकेत किया, परन्तु इस वीरने जब शत्रुके जहाजके छक्के छुडालिये तभी लौटा। "काइरा" ऐसा नष्ट हुआ, कि अब इसे दूसरे जहाज 'लोसेनसोयूर' को आश्रय के लिये लेना पडा।

दूसरे दिन शत्रुके और जहाज तो निकल गये, परन्तु 'काइरा' और लोसेनसोयुर पीछे पड गये और नेलसनके हाथ लग गये। चरित्रनायकने अनेक प्रार्थनायें शत्रुके बचे जहाजोंका पीछा करने की की, परन्तु हौथमने एक न सुनी। उन्होंने कहा, "बस अधिक लालच बुरा है, इतने ही पर सन्तोष करो।"

चरित्रनायकको एडमिरलका यह कुसमयका सन्तोष बहुत बुरा लगा। आपने कहा "महाशय। यदि हम लोग ग्यारह जहाजोंमेंसे दस जहाज पकड लेते और यदि बन्दी होनेके लायक केवल एक जहाज भी छूट कर निकल भागता, तो मैं कदापि सन्तुष्ट होनेवाला नहीं था।"

प्रधान अध्यक्ष हौथम शान्त चित्तके मनुष्य थे। वे चरित्र नायककी नाईं उद्धत प्रकृतिके नहीं थे। नेल्सन तो अपनी हानि

पर कदापि ध्यान देते ही नहीं थे। ये सदा आक्रमण करना ही पसन्द करते थे।

समर कलकल अब समाप्त हो गया। युद्धका झोंका जबतक रहता था नेलसनको अपने तन मनकी सुधि भी नहीं रहती थी, अब नेलसन नेत्र-पीड़ा से अत्यन्त विकल हो उठे।

इस समय लार्ड हुडकी छुट्टी पूरी हो गई थी। चरित्र-नायक उत्सुकतासे इनके वापस आनेकी बाट जोहते थे। हुड चरित्रनायक को पुत्रवत् मानते थे। परन्तु अभाग्यवश लॉर्ड हुडके स्थान पर लॉर्ड हउ ( Howe ) आये। परन्तु गुणका आदर सब ओर है। हउ ने चरित्रनायकको प्रधान कप्तान बना कर ऑस्ट्रिया को सहायता देनेके लिये भेजा। ऑस्ट्रिया इस समय फ्रान्ससे रैवोरा* स्थान पर लड़ रहा था।

इस समय चरित्रनायकने नाव्य दक्षता दिखलाते हुए राज-नीतिज्ञता का भी पूरा परिचय दिया।

पाठक! स्मरण रक्खें, कि अभी तक वेलिंगटनका समय नहीं आया था जबकि ब्रिटिश स्थल सेना भी जलसेनाकी नाईं विख्यात हो गयी थी। इस समय केवल ब्रिटिश बेड़ोंका ही दबदबा चारों ओर था।

एक फ्रेञ्च लेखक लिखता है "इस समय देखना है ये समुद्री भेड़िये क्योंकर थल पर अपना विक्रम प्रगट करते हैं।"

कुछ दिनोंके बाद एडमिरल जर्विसने, जो आगे चल कर

* रैविरा इटली देशका एक भाग है।

लार्ड सेन्ट व्हिन्सेन्ट होगे, अध्यक्षताका कार्य्य अपने हाथमें लिया।

जर्विसने तुरत नेलसनको Captain "कैपटेन" जहाज़पर जगह दे कर सम्मान बढाया। चरित्रनायक का पुराना "ऐगम मनन" अब छूट गया, परन्तु नेलसन सदा कहते रहे, कि ऐगम मननके वीर युवक नाविकगण तोपके गोलेको मटरके दानेसे अधिक नहीं समझते थे।

पाठक! वीरके प्यारे 'ऐगममनन' जहाजने सच्चे मित्रकी नाईं ट्राफलगरकी अन्तिम लडाईमें साथ रह कर अपने वीर अध्यक्ष की सेवा की थी और नेलसनके लोकान्तर होनेके १५ वर्ष बाद साउथ अमेरिकाकी लडाईमें अपने भूत अध्यक्षकी नाईं विजयोल्लासमें ही समुद्र-मग्न हो गया।



# छठा परिच्छेद।

*सेण्ट व्हिन्सेण्ट का युद्ध।*

विजयी फ्रेञ्च सेना स्थल-युद्ध में सर्वत्र अपनी विजय पताका फहरा रही है। संसार इसके विजय-कोलाहल से कंपायमान हो उठा है। अब जलयुद्ध में क्योंकर प्रसिद्ध ब्रिटिश नाविकों को धता बता कर चक्रवर्ती संसाराधिप हों —यही फ्रेञ्चों का दिवस मनन और रात्रि स्वप्न है।

नेलसन से बार बार जलयुद्ध में मार खाकर, फ्रेञ्च लोग अब मारीच स्पेन की सहायता लेने चले हैं। स्पेनवालों ने भी जब और बचने का उपाय न देखा, तब शीघ्रही अपनी जल-सेना एकत्रित कर अपने भयानक पड़ोसियों का साथ दिया। देखना है अब यह दुरङ्गी सेना क्या यश पाती है?

टौलाउन का नौकाश्रय, मिश्रित सेनाओं का अड्डा नियत हुआ है। चारों ओर से वृहत नौकादल घोर घटा की नाईं एकत्रित हो रहा है। बीच ˜ ˜ तोपों की हड़हड़ाहट और

वारूद का भक से जल उठना, मानो वर्षा ऋतु की पूरी छटा दिखा रहा है।

ब्रिटिश वीरो! सावधान! सावधान!! इस भीषण घटा और अपेक्षित अविरल अग्नि वर्षा से तुम्हारा निस्तार तब तक नहीं दीख पडता, जब तक कि तुम्हारा आराध्यदेव नेलसन गोवर्धन रूप अपने वृहत उत्साह और उद्योग से तुम्हारी रक्षा न करे।

दुर्बल हृदय जिनोआ (Genoa) ने भी सर्वविजयी फ्रेंच से डरकर सन्धि कर ली। इस सन्धि-स्थापन से फ्रेञ्च ऐसे अभिमानी हो गये, कि अंगरेज लोगों का वस्तिआ बेडा (Bas tia) भूमध्यसागर छोड देने को वाध्य हुआ। एलबा द्वीप भी कुछ दिनों के वाद छोडही देना पडा, परन्तु इस त्याग के पहले वीर नेलसन, जो उस समय मिनरवा Minerva जहाज पर थे, एक वार शत्रु से झोंके से भिड गये और उन्होंने उसको दिखला दिया कि ब्रिटिश वीर इतने पर भी अजेय हैं।

इस युद्ध में नायक ने स्पेन जहाज "लासैबीना" (La Sa- bina) को बन्दी कर लिया। जिस समय ये विजित जहाज को लूट रहे थे, सन्मुख से दो स्पेन के जहाज़ आ निकले और उन्होंने मिनरवा का पीछा किया। यद्यपि "मिनरवा" पूर्व युद्ध में छिन्न भिन्न हो गया था तोभी साफ निकल गया और उसने 'फोरेजो' (Ferrajo) के नौकाश्रय में आश्रय लिया।

लासैबिना (La Sabina) के कमान से भूर्ट डान जैकोब

इस धावे में (Minerve) मिनरवा पर ही बन्द थे। उन
नेलसन ने इन्हें सम्मान पूर्वक शान्ति का झण्डा लगाकर
डोंगी पर स्पेन वापिस कर दिया।

पाठक! यद्यपि यह उदारता युद्ध-नियमों के विरुद्ध
तथापि नेलसनने अपने भूतपूर्व्व देशनिष्काशित स्टूअर्ट राज
ओं के वंशधर का सम्मान करना अपने देश के गौरव वर्धन
हार समझा। स्टूअर्ट लोग स्वभाव से ही वीर थे, अस्तु
जैकोब भी इससे रहित नहीं थे। स्पेन की कुल सेनापतियों
ये वीर थे। नेलसन ने मुक्त कण्ठ से शत्रु होने पर भी इनक
प्रशंसा की।

कुछ दिनों के बाद मिनरवा (Minerve) को पुन ए
बार ऐसे असम शत्रुदल से सामना करना पड़ा, परन्
प्रत्युत्पन्नमति नेलसनने उनकी आंखों में धूल झोंकही दी।

एक दिन जिबराल्टर (Gibraltar) से निकलकर, प्रधान
अध्यक्ष के जहाज़के पास जाते समय मिनरवा ( Minerve
समग्र शत्रुदल के दृष्टिगोचर हो गया। शत्रुदल बाज़ की नाई
बेचारे लवा सदृश मिनरवा पर झपट पड़े। एक बड़ा शत्
जहाज उसके निकट पहुँच गया। घोर युद्ध और नाश में अव
तनिक भी समय नहीं रहा। ऐसी गड़बड़ में नेलसन के कान
में भनक पड़ी कि एक नाविक जल में गिर पड़ा है। आप अ
पने दयार्द्र-चित्त का परिचय दिये बिना नहीं रह सके। शीघ्रही
एक डोंगी उसके बचाने के लिये पानी में लटका दी। डोंगी

के द्वारा नाविक तो बच गया परन्तु अब डोंगी का जहाज के
निकट आना ही दु:साध्य हो गया। इधर शत्रु दल एक गोले
के फासले पर डटा था। जरासा विलम्ब बचाव में होने से अँ
ग्रेजी बेडे का वारा न्यारा हो जाता है, कठिन समस्या है
नेलसन ने धीर भाव से कहा "ओह! होना हो सो हो, अप
एक नाविक को यों विपत में छोड भागना कायरपन है
जहाज को आगे बढाकर डोंगी को उठा लो और शत्रु
बचकर निकल चलो!" यह आज्ञा सुनते ही शत्रु मित्र स
इस धीरता पर अवाक् रह गये। नाविक सकुशल जहा
पर चढ गया और मिनरवा भी सकुशल निकल गया।

दूसरी रातिको "मिनरवा" यकायक शत्रु बेडे के बी
पड गया, कुहासा अधिक था, भाग्यवश शत्रुओं ने अँगरे
जहाज को पहचाना नही, ये भी चुपचाप स्पेन एडमिरल
सकेतों का अनुकरण करते हुए चले जाते थे, जिसमें धोखे
शत्रुदल इन्हे अपना ही जहाज समझे।

पाठक विचार करें, कि यह कैसा नाजुक समय है, कुहा
यदि एक चण के लिये हट जावे, सूर्य्य यदि अपना विम
मुख इस समय दिखलादे, तो बेचारे चरित्रनायक के जहा
की धज्जियों का पता भी शत्रुदल नही लगने दे।

इस असमजस में एक एक पल एक २ वर्ष सा बीत रहा
कि अरुणोदय की लाली पूर्व में दीख पडी। कुहासा विलीन
चला, परन्तु परमेश्वर ने इस समय अपनी अटूट कृपा का प

पथ दिया। शत्रुदल ने आपसे आप केडीज (Cadiz) की ओर अपना मुँह फेर दिया।

अब नायक को अवसर मिला और वह निकल भागे। प्रधान अध्यक्ष इनकी चतुरता पर खूब हँसे। उसी दिन सन्ध्या को नेलसन ने अपने जहाज़ कैप्टेन पर जा कर विश्राम किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल शत्रु के २७ जहाज़ों का एक बेड़ा युद्ध के सामानों से लैस आता हुआ दीख पड़ा। उसकी व्यूह रचना सराहनीय थी। छ जहाजों का एक बेड़ा पीछे था और मुख्य इक्कीस जहाजों के बेड़े की रक्षा कर रहा था।

इधर ब्रिटिश बेड़ा पहले तो दो कतारों में आ रहा था, परन्तु सम्मुख शत्रु का व्यूह देख इन लोगों ने भी छ तीव्रगामी जहाज़ शत्रु के बीच व्यूह तोड़ने को आगे भेजे।

स्पेनवाले सामानों से लैस होने पर भी युद्ध के लिये बिलकुल तैयार न थे। कतार दुरुस्त हो कर रहे थे, कि एडमिरल जार्विस के विकट धावे से उनका व्यूह टूट गया और वे दो भागों में बँट गये। इस प्रकार स्पेन के बड़े २ जहाजों पर अँगरेजों की विकराल तोपों ने गोला उगलना आरम्भ कर दिया।

शत्रु के विलग हुए जहाजों ने अपने विपद में फँसेहुए जहाज़ों की सहायता करनी चाही। परन्तु अँगरेज़ों की मार के कारण वे जान बचा तितर-बितर हो गये। प्रधान अध्यक्ष ने नेलसन को, जो इस समय पश्चात भागमें रक्षा कार्य्य पर नियुक्त थे, बढ़कर लड़ने का सङ्केत किया, परन्तु शत्रुदल अब जहाज,

का पाल वायु की ओर फेरकर या तो अपनी कतार दुरुस्त किया चाहते थे या बिना युद्ध किये भागा चाहते थे, यह देख कर नेलसन ने अध्यक्ष के संकेत का ध्यान न कर शत्रु दल को रोकना चाहा और अपने बेड़े को अविलम्ब चढ़ाने की आज्ञा देदी। प्रधान अध्यक्ष की आज्ञा के प्रतिकूल होते हुए भी नेलसन की युक्तिने भ्गनेवालों के उपाय को मिट्टी में मिला करही छोड़ा। एक अँगरेजी बेड़ेने भगनेवालो को रोका, दूसरों ने आगे बढ़कर उनको नाश कर दिया।

अब पश्चात् भाग से दक्षिण भाग का, फिर वहाँ से वाम भाग का सैन्यभार "कैप्टेन" (Captain)के अध्यक्ष नेलसन को मिला। वीर ने अकेलेही सबसे पहले शत्रु का सामना किया। (Culloden Blenhiem) कलौडेन ब्लेनहिम जहाज तथा कप्तान कौलिङ्गउड (Collingwood) का 'एक्सेलेण्ट' (Excollent) जहाज नायकको, असम शत्रुदल से असीम वीरता प्रगट करने वाले पहले पहल सहायता देने पहुँचे।

। जहाज इस समय नष्ट प्राय हो गया था। इसकी ...शत्रु के गोले से उड़ गया। इतिहास वेत्ता-
है कि 'कैप्टेन' जहाज पर एक रस्सी भी अक्...
इसका चक्का भी गोले की चोट से बिल्कुल चूर
नेलसन ने अपने जहाज को बिल्कुल बर्बाद हुआ
सैनिकों को खड्ग हाथ में लेकर शत्रु के नौकापृष्ठ
...को आज्ञा दी।

आज्ञा देकर, निर्भीक केसरी सब से आगे शत्रु-नौका सेन-निकोलस (San Nicholes) की पृष्ठ पर अपना लपलपाता रुधिर-पिपासु खड्ग हाथ में ले चढ़ गया, साथ ही साथ समग्र नाविक गण कुलाचे मार २ चढ़ने लगे। शत्रुदल इन वीरों के अचानक धावेसे हक्का बक्का रह गया और काठ के पुतले की नाई उसने अपने शस्त्र रख दिये।

पाठक! इतनी चपलता, इतनी द्रुतता न तो विद्युत् में न वर्षा की लौन निर्झरियों [redacted] की देखी गयी है, जितनी नायक के खड्ग चलाने और उनके नाविकों के शत्रु विजय करने में पायी गयी।

San Nicholes (सेन निकोलस) पर कुछ रक्षकोंको छोड़ फेर वैसे ही भीमविक्रम देखलाते हुए नायकने चिल्ला कर—"भाइयो! या तो रणकी विजय वैजयन्ति या तिय-वर जाना" बस खड्ग खेंच लो, और पुन अपने नायकका ..ने तथा देशकी रक्षाके लिये शत्रु नौका "सेन जोसी-n Josn के पृष्ठ पर चढ़ जाओ।"

का पाल वायु की ओर फेरकर या तो अपनी क़तार दु
किया चाहते थे या बिना युद्ध किये भागा चाहते थे, यह
कर नेलसन ने अध्यक्ष के सकेत का ध्यान न कर शत्रु दल
रोकना चाहा और अपने बेडे को अविलम्ब चढधाने की
देदी। प्रधान अध्यक्ष की आज्ञा के प्रतिकूल होते हुए भी नेल
की युक्तिने स्पेनवालों के उपाय को मिट्टी में मिला क
छोडा। एक अँगरेजी बेड़ेने स्पेनवालों को रोका, दूसरे
आगे बढकर उनको नाश कर दिया।

अब पश्चात् भाग से दक्षिण भाग का, फिर वहाँ से वाम
का सैन्यभार "कैप्टेन" (Captain)के अध्यक्ष नेलसन को मि
वीर ने अकेलेही सबसे पहले शत्रु का सामना किया। (
lloden Blenhiem) कलोडेन ब्लेनहिम जहाज तथा क
कौलिङ्गउड (Collingwood) का 'एक्सेलेएट' (Excell
जहाज नायकको, असम शत्रुदल से असीम वीरता प्रगट क
वाले युद्धमें, पहले पहल सहायता देने पहुँचे।

नायक का जहाज इस समय नष्ट प्राय हो गया था। इ
सम्मुख का पतवार शत्रु के गोले से उड गया। इतिहास वे
ओं का कथन है कि 'कैप्टेन' जहाज पर एक रस्सी भी अ
ती न बची। इसका चक्का भी गोले की चोट से बिलकुल
हो गया। नेलसन ने अपने जहाज को बिलकुल बर्बाद हु
देख, अपने सैनिकों को खड्ग हाथ में लेकर शत्रु के नौका
पर चढ जाने की आज्ञा दी।

आज्ञा देकर निर्भीक केसरी सब से आगे शत्रु-नौका सैन-निकोलस (San Nicholes) की पृष्ठ पर अपना लपलपाता रुधिर-पिपासु खड्ग हाथ में ले चढ गया, साथ ही साथ समग्र नाविक गण कुलाचे मार २ चढने लगे। शत्रुदल इन वीरों के अचानक धावेसे हक्का बक्का रह गया और काठ के पुतले की नाईं उसने अपने शस्त्र रख दिये।

पाठक ! इतनी चपलता, इतनी द्रुतता न तो विद्युत् में न वर्षा की लीन निर्झरियों में ही देखी गयी है, जितनी नायक के खड्ग चलाने और उनके नाविकों के शत्रु विजय करने में पायी गयी।

San Nicholes (सैन निकोलस) पर कुछ रक्षकोंको छोड़ कर फिर वैसे ही भीमविक्रम देखलाते,हुए नायकने चिल्ला कर कहा—"भाइयो। या तो रणकी विजय वैजयन्ति या तिय-देवोंसे वर जाना" बस खड्ग खैंच लो, और पुन अपने नायकका गौरव बढाने तथा देशकी रक्षाके लिये शत्रु नौका "सैन जोसी-आई" San Josu के पृष्ठ पर चढ आओ।"

वैरी साहब सहकारी कप्तान इस समय सबसे अग्रसर हुए। सैन नाविकोंकी तो घिग्गी बँध गई तुरत शस्त्र रख दिये। चरित्रनायक अब शान्त चित्तसे स्वयम् अपने हाथोंसे विजित सैनिकोंके खड्ग लेलेकर अपने एक पुरातन अनुचर के हाथमें देते जाते थे।

पाठक ! यह अत्यन्त ही सुन्दर दृश्य था। अँगरेज

प्रधान अध्यक्षकी नौका विक्ट्री ( Victory ) अब नेलसनकी गौरव भूमि पर पहुँची। पहुँचते ही बादल फाड़नेवाली करतलध्वनिसे इन लोगोंने वीर चरित्रनायकका अभिवादन किया।

प्यारे युवक पाठक! बस जीवन आज सफल हो गया। चरित्रनायकका सारा समर कष्ट मानों भूल सा गया। क्या आपलोगोंके हृदय पर इस दृश्यका प्रभाव नहीं पड़ता? क्या आप अपने जीवनको इस प्रकार सफल नहीं कर सकते? क्या "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" मन्त्रसे प्रति दिन अपने हृदयको अभिषिक्त कर आपको ऐसा गौरव पाना दुर्लभ है?

पाठक! आप सब कुछ कर सकते हैं, परन्तु उत्साह और सहिष्णुताकी आवश्यकता है।

चार बजे सन्ध्या समय युद्ध बन्द हो गया। चरित्रनायक प्रधान अध्यक्षसे मिलने गये। जॉन जर्विस बार बार नायककी आलिंगनकर कहने लगे "भाई! आज तुम्हारे ही कारण देशका भेष रहा, तुम्हें किन शब्दोंमें धन्यवाद दूँ, मुझे सूझता नहीं।"

कप्तान काल्डर ( Calder ) ने परिहाससे कहा "महाशय इसमें तो संशय नहीं कि कैप्टेनने सचमुच ही समर विजय किया है! परन्तु इतना होने पर भी इसने आपकी आज्ञा उल्लङ्घन की।"

प्रधान अध्यक्षने हँसकर उत्तर दिया—'काल्डर! यदि

भी तुम भी आज्ञानुलङ्घन कर समरमें विजय प्राप्त करो तो तुम्हारी अवज्ञा भी सहर्ष क्षमा करूँगा।"

राजकीय सम्मानोंकी वर्षा भी, इस विजय पर, विजयी वीरों पर खूब हुई। जर्विस सेगट 'व्हिन्सेगटके लॉर्ड'की उपाधिसे भूषित हुए। चरित्रनायक भी बेरन बनाये गये, परन्तु धनाभाव से आपने इस पदवीको स्वीकार नहीं किया, अस्तु आप Knight of Garter नाइट-ऑव गार्टर ही बनाये गये।

जर्विस साहबने आपको एक बहुमूल्य खड्ग पारितोषिक में सत्कृत किया, जिसे चरित्रनायक सदा समरयुद्धके पश्चात् अध्यक्ष जर्विसका खड्ग कह कर आदर करते थे। नायकने इस पुरस्कार खड्गको नौरविच शहरमें भेज दिया और लिखा, "मैं अपनी जन्म भूमिका प्रधान शहर नार्विच छोड़ और कोई स्थान इस योग्य पुरस्कारके रखनेके योग्य नहीं समझता जहाँ इसे रखकर मैं अपने परिजन वर्गोंको अधिक मुदित कर सकूँगा।"

मुमुर्ष पिता भी हृदयोद्गार नहीं रोक सके। पुत्रको लिखा "बेटा! तुम्हारे विजयका समाचार सुनकर, तुम्हारे यशका गान आज सामान्य भाटोंसे लेकर असामान्य अँगरेजी थियेट-रिकोंमें सुनकर मैं फूला नहीं समाता और न अपने आनन्दाश्रुओं को ही रोक सकता हूँ।"

नायकके विजयका साथी "कैप्टन जहाज बिलकुल नष्ट भ्रष्ट होगया था। अब वह लड़ाईके योग्य नहीं रहा था अस्तु

चरित्रनायक सर होरेशियो Rear Admural of the Bule, का झण्डा नूतन (Theseeus) थिसियस जहाज पर फहराने लगा। इस थिसियस जहाजके नाविक गण अभी इङ्गलैण्डके समुद्रगत बलवेके साथी थे, देखना है अब ये अपने नवअध्यक्षसे कैसा व्यवहार करते है।

सुहृद नेलसन नाव्यससारमें सर्व प्रिय था। इसकी सुख्यातियां वीरता और उदारता तो शत्रु को भी बलात्कार अपने गुणके वश कर सकती थी, ये तो भला गुणग्राही अङ्गरेज नाविक ही थे।

नाव्यपृष्ठ पर आनेके दूसरे ही दिन इनको सब नाविकोंका हस्ताक्षरित एक पत्र मिला जिसमें लिखा था —

"ईश्वर एडमिरल नेलसन और कप्तान मिलरको दिग्विजयी करे। हम लोग उन अधिकारियोंके अत्यन्त अनुगृहीत है जिन्होंने ऐसे वीरोंके हाथ हम लोगोंका भाग्य सूत्र सौंपा है। हम लोग अपने सेनापतियोंको अपनी नसोंका रुधिर बहाकर भी सन्तुष्ट करनेकी चेष्टा करेंगे। हमलोग थिसियसको भी कैप्टन जहाजको नाईं विख्यात करके ही जीवन सुफल करेंगे।"

पाठक। इन वीरोंने अपने आजके वचनको आगेके दिनोंमें पूरी तरह चरितार्थ कर दिखलाया।

अब नेलसनको कैडीज ( Cadis ) अवरोध करनेवाले बेडेकी अध्यक्षता मिली।

नेलसन ने जितनी वीरता इन हाथों हाथ की लड़ाइयोंमें दिखलाई शायद औरमें कदापि नहीं दिखलाई होगी। यह अत्यन्त ही युद्ध प्रिय थे, एक बार इनके जहाज़ पर कुछ स्पेनवाले चढ़ आये। आते ही खड्गका ऐसा प्रहार नेलसन पर किया कि यदि जॉन सक नामक एक कर्णधार इस समय विद्युत् चपलतासे इन्हे पीछे नहीं खींच लेता तो बस इनके जीवनको समाप्ति ही हो जाती।

केडीज अवरोधके बीचहीमें समाचार मिला कि स्पेन के एक पोतयाणने मेक्सिकोसे चलकर अंगरेज़ोंकी भयसे टेनरिफ़ द्वीपमें आश्रय ले लिया है। नेलसनको टेनरिफपर धावा करनेकी आज्ञा मिली। यद्यपि वीरने पूरी वीरता दिखलाई परन्तु सफल मनोरथ नहीं हुए। इस युद्धमें चरित्रनायकके दाहिने हाथमें गोली लगी। यदि जोशीया निसवेट इस समय बड़ी सफाईसे घाव पर पट्टी बाँध रुधिर न रोक देता तो आज अवश्य ही नेलसनकी मृत्यु होजाती।

पाठक! यह दूसरी अंग-आहुति देशसेवामें हुई।

ऐसा भयानक घाव लगनेपर भी किसीका आश्रय ग्रहण न कर, नेलसन सिंहको तरह उछलकर नौकाके ऊपरी पृष्ठ पर चढ गये और सर्जन ( Surgeon ) से शान्त भावसे बोले, "डाक्टर साहब। मैं जानता हूँ अब मेरा दहना हाथ किसी कामका न रहा। कृपा कर जहाँ तक शीघ्र हो निकम्मेको काट ही डालिये।" मूर्त्तिमान साहस हो, वीरने अपनी

बाँह कटवा डाली। पाठक। एक आह भी वीरके मुखसे न निकली, न इसने पुनः कभी इसकी चर्चा ही की। घावके शारीरिक दुःख तथा टेनरिफ युद्धकी हारके मानसिक दुःखसे यह बहुत बीमार हो गये।

एक दिन बीमारीमें ही यह कहने लगे—"बस भाइयो अब मैं अपने देश और मित्रोंका बोझ हो गया हूँ।"—

दूसरे दिन लार्ड विन्सेण्टको यों पत्र लिखा,—

महाशय।

क्या आप मुझे एक नौका अपनी लोथको देश पहुँचानेके दे गे? एक इकहत्था एडमिरल अब देशके किस काम आसकता है?

नेलसन।

एडमिरलने इसके उत्तरमें अत्यन्त दुःख प्रकाश करते हुए इन्हें देश लौट जानेकी अनुमति दी।

स्वदेश पहुँचने पर देशवासियोंके सुस्वागतसे आप अत्यन्त प्रसन्न हुए। यह लण्डन और ब्रिस्टिलके फ्रीमैन (Freeman) बनाये गये। इङ्गलैण्डाधिपने अपने हाथोंसे इन्हें Order of Bath की खिल्अत पहराई/तथा पन्द्रह हजार रुपयेकी वार्षिक पेन्शन नियत कर इन्हें उत्साह दिया।

कुछ दिनोंमें दुःखदायी घाव भर गया और ये परमेश्वरकी असख्य कृपाओंका धन्यवाद देते हुए पुन. Vanguard जहाजका आधिपत्य ले केडिज (Cadis) बेड़े से जा मिले।

# सातवाँ परिच्छेद।

नाइल का युद्ध।



से

ण्टिह्निनृसेण्टका युद्ध समाप्त होगया, फ्रान्स वाले बार बार धूल फाँककर कटकटा रहे थे, अब क्रोधमें अन्धीभूत नेपोलियन संसारके सब शत्रुओंका अवतार इङ्गलैण्डको ही मान कर इसके मूलोच्छेद करनेका उपाय करने लगा।

कहावत है, कि कोई मनुष्य कौओंके मारे तङ्ग आ गया था। एक दिन एक कौआ उसके घरमेंसे एक रोटीका टुकडा ले बांसकी एक सीढीपर जा बैठा और प्रत्येक डंडेपर उठता बैठता हुआ घरके छप्परपर चढ गया। भले मानुषने समझा बस मौका ठीक है, अगर सीढी हटालें तो दुष्ट कौआ छप्पर परसे उतर न सकेगा और भूख प्याससे मर जायगा। चट पट विकट बदला उसने ले ही लिया, सीढी हटाकर निश्चिन्त हँसता हुआ आ बैठा। परन्तु सीढी उतारनेके खटकेसे कौआ उड गया और बुद्धिमान् महाशय मुँह लटका कर बैठ रहे।

पाठक! बस ठीक इसी भले मानुषका स्वाँग फ्रान्स-वालोंने किया।

इन लोगोंने विचारा, यदि हिन्दुस्थान अँगरेजोंके हाथसे निकाल ले तो शत्रु लोग आपसे आप पराजित हो जायँगे।

फ्रान्सवालोंने अपने चुने चुने जहाज़ों और सेनाओंका एक बेड़ा तैयार कर, ईजिप्ट होते हुए, हिन्दुस्थान आनेका विचार कर लिया। पाठक! हवाई घोडेपरकी सेर भी खूब ही होती है, कभी तो सुवर्णमयी भारतभूमिपर अकड़ अकड़ कर चलनेका और कभी अपने मस्तकपर युरोपका चक्रवर्ती छत्र लगानेका सुख-स्वप्न नेपोलियन देखने लगा। परन्तु वह यह भूल ही गया था कि "मन्दके ख्यालेन फलक दके ख्याल।"

इस कूटनीति और विकट तैयारीकी खबर इङ्गलैण्डमें पहुँची। वीरवर नेलसन कैडीज (Cadis) से भारी जहाज़ोंके बेड़ेके साथ शत्रुका सामना करनेको भेजे गये।

अभाग्यवश रास्तेमें ऐसा भारी तूफान आया, कि नायक-का वैनगार्ड जहाज एकदम नष्ट भ्रष्ट हो गया। आगेके पतवार इत्यादि कुल आँधीके झोंकेसे उड़ गये। बेड़ेकी महायुद्ध नौकाओंने अध्यक्षकी नौकाकी दुर्दशा देख विचार किया, कि अब जिबराल्टर लौट गये बिना यह पुनः युद्धके योग्य नहीं हो सकती। अस्तु वे पुनः जिबराल्टर लौट गये।

नेलसनको महायुद्ध-नौकाओंको जिबराल्टर लौट जानेका बड़ा खेद हुआ, क्योंकि चार दिनमें ही बढ़इयोंके उद्योगसे

वेनगार्ड युद्धके योग्य बना दिया गया। बेड़ेकी ( Fargate ) महायुद्ध नौकायें मानो चक्षु हैं, इनसे रहित बेड़ा चक्षु-हीन है। चरित्रनायक अपने बेड़ेके साथ अलकजन्द्रिया (Alexandria) पहुँचे। अँगरेजी बेड़ेके पहुँचनेके तीन ही दिन बाद, फ्रेंच बेड़ा भी पहुँच गया था, परन्तु इन लोगोंको उनका कहीं पता नहीं लगा।

हिरास होकर नेलसनने पुन सैराकूज़ ( Saracuse ) आकर लङ्गर डाल दिया। नौसौ कोसका चक्कर लगाकर भी अँग्रेजी बेड़ा कुछ पता न लगा सका।

इङ्गलैण्डमें लोग इस समाचारसे कनमन करने लगे। कोई कहता था, कि प्रधान अध्यक्षने ऐसे नवयुवकको ऐसा भारी काम सौंपकर अच्छा नहीं किया। कोई कहता "अजी तुम क्या जानो, नेलसन ऐसा वैसा नहीं है कि शत्रु उसकी आँखोंमें धूल झोंक निकल जायँगे।"

पाठक! क्या आप भी सोचते हैं कि चरित्रनायक चुप चाप हाथपर हाथ दे बैठरहे? नहीं, नहीं, अपने अनोत्तीर्ण उद्योगसे यह भी घबरा रहे थे। एक दिन वह कहने लगे कि सैराकूज (Saracuso) आनेसे मेरा दिल बैठा जाता है, कहीं इसी विफल मनोरथमें, मैं मर न जाऊँ।

अबकी वार फिर भी टोह लगानेवाली नौकायें निकलीं और भाग्यवश शत्रुका सुराग पाकर लौटीं।

पहली अगस्त १७९८ को अन्वेषकोंने सूचित किया कि

शत्रु का बेडा, अबूकिर (Abukir) में, जो अलकज़न्द्रियासे १
मील पूर्व्व में है, लङ्गरडाले हुए है। अब इतने दिनोंका
विफल प्रयास सफल हुआ, नेलसनने, जो कई दिनोंसे शोचवि
पूरा भोजन नहीं करते थे, आज बडे आनन्दसे सब कप्तानोंके
साथ भोजन किया आज मानों भावी समर-स्मरणसे चरित्र
नायकका उत्तप्त हृदय शान्त हुआ। पाठक ! युद्धप्रिय-वीरोंको
आहतोंका भयानक चित्कार ही सुमधुर गान बोध होता है
प्रशस्त आकाश ही इनका वितान है, तोपोंका गुड़ुम
धुड़म शब्द ही उनका मृदङ्ग शब्द है और समर-विजय ही
सच्चा व्याह-सुख है।

दोनो ओरकी नौकाओंकी सख्या बराबर थी, परन्तु
ब्रूआइज (Brueyes) फ्रेंच एडमिरलकी नौकायें बडी और
अधिक बलशालिनी थीं।

फ्रेञ्च बेडेपर आक्रमण करनेके लिये अँगरेजी नौकाओंको
एक ऐसे छिछले पानीके मुहानेसे पार होना था जहाँ बालूमें
ही अटक जानेकी सभावना अधिक थी, पहुँचना तो दूर
रहा।

ब्रूआइजको यह विश्वास था, कि इस छिछले रास्ते से
शत्रुका आना दु साध्य है अत वह उधरसे निश्चिन्तसा था। बेडेके
पीछेसे शत्रु आक्रमण करते हैं, यह नियम है। यह विचारकर
फ्रेंच एडमिरल उधरसे ही आक्रमण रोकनेका उपाय कर
रहे थे।

परन्तु ब्रूआइज (Brueyes)को क्या खबर थी, कि नेलसन बालुकामयी भूमिपर भी जहाज पार करानेमें अद्वितीय है।

इस समय वायु फ्रेञ्च बेड़ेकी ओर ही बह रही थी, अतः नेलसनको आक्रमण करनेकी और भी सुविधा मिली। इन्होंने अपनी आक्रमण-युक्तियां शीघ्र ही प्रत्येक कप्तानको सङ्केत द्वारा जता दीं।

उनके अन्य सेनापति जब नेलसनकी नौकापर इकट्ठे हुए उन्होंने कहा—"वीरो। पहले तुम विजय प्राप्त कर लो, फिर मन-मानी लूट मचाओ तुम्हें कोई नही रोकेगा।" सेनापति यह सुन सुनकर शीघ्र लड़ाई छेड़नेको उत्सुक होने लगे। एकने कहा "महाशय! यदि हम लोग इस समरमें विजय प्राप्त कर लें तो संसार कितनी प्रशंसा करेगा?"

नेलसनने हँसकर कहा—"विजय पानेमें 'यदि' जोड़नेकी ... नहीं है, हम लोग विजयी तो अवश्य होंगे, परन्तु इस ... बचकर विजय समाचार देने देश जायगा, इसमें ... है।"

... पाँच बजे सन्ध्याको समरके लिये पङ्क्तिबद्ध होनेकी ... नेलसनने दी।

... और फौले (Foley) अपने 'जोलस' (Zealous) ... सावधानीसे थाह लेते हुए आगे बढ़े। अध्यक्षकी ... वेनगार्ड का (Vanguard) पङ्क्तिमें छठा ...

निमित्त रक्खा गया कि यदि आक्रमण युक्तिको रद्द
करनेकी आवश्यकता हुई तो वह यहांसे पीछेवाली नौकाओं
ठीक कर लेंगे ।

ह्वेन गार्ड पर छ भण्डे भिन्न भिन्न स्थानोंपर इसलिये प
रहे थे कि कहीं शत्रु गोलेसे कुल भण्डे एक ही बार न
जायँ । नेलसनकी चतुरतासे रास्तेको बालुकामयी भूमि
साफ पार करते हुए देख ब्रुआइजका माथा ठनका
भावी युद्धका भयानक दृश्य अब उसकी आँखोंके सामने
गया ।

कप्तान फोले (Foloy) को इस समय एक और युक्ति सू
वह सावधानीसे थाह लेता हुआ आगे बढ़कर फ्रेञ्च प
दूसरी नौका कौंक्युएरेण्ट ( Conquorant ) के सामने
तरफसे जा भिड़ा। पीछेसे अन्य चार जहाज पहुँचकर
बेड़ा और समुद्रकूलके बीचमें जा डटे।

व्हेन गार्ड यानी अध्यक्ष नौकाने अन्य नौकाओंके
दाहिनी ओरसे आ घेरा।

इस प्रकार फ्रेञ्च बेड़ा दोनों ओरसे बद्ध हो
पाठक। नेलसन की इस सराहनीय युक्तिसे शत्रुके आ
पांच नौकाओंको असहाय हो आठ नौकाओंका सा
करना पड़ा। पीछेवाली नौकाओंको स्थानाभावसे सह

एक तो अँधेरी रात, दूसरे तोपोंसे निकलते हुए अविरल धुएँसे आकाशपटपर मानो एक दूसरे काले पटका चन्दोवा तन गया था, हाथसे हाथ नहीं सूझता था, जहाँ देखो वहाँ ही अन्धकारका साम्राज्य था, ऐसे अन्धकारमें एक अँगरेज़ी नौका मैजेसटिक (Majestic) भूलसे अपनेसे कहीं बड़ी फ्रेञ्च अध्यक्षकी नौकासे जा भिड़ी। जीतोड़ लड़ाई हुई और "मैजेसटिक"में आग लग गई।

एक घण्टेतक घनघोर लड़ाई होती रही। अँगरेज लोग अपने२ स्थानपर डटे रहे। इसी समय शत्रुदलका एक गोला नेलसनके सिरमें आ लगा। "मैं मरा" कहता हुआ वीर बेरी साहबकी गोदमें गिर गये। बड़ी शीघ्रतासे लोग इन्हें अस्पतालमें लेगये।

डाक्टर इस समय एक नाविक की मरहम पट्टी कर रहा था, तुरन्त छोड़कर अध्यक्ष को देखनेके लिये आया, परन्तु धीर, वीर, उदार नेलसन यह कदापि सह न सके। उन्होंने कहा—"डाक्टर! तुम मुझसे पहले गिरे हुए हमारे नाविकों की पट्टी ठीक कर दो, पीछे हमारे पास आना, मैं उनके जीवन को अपने से कहीं मूल्यवान समझता हूँ।"

पाठक! दया की चरम सीमा है। अपने प्राणान्तक दुःख की वीर को कुछ चिन्ता नहीं है, चिन्ता है अपने नाविक के सुख की! बलिहारी तेरी उदारता की। देशगौरव वीर! तूने आज दयालुता और कोमलता की पराकाष्ठा दिखलादी।

शत्रुत्रासकारी! आज दो सौ वर्ष तुम्हें देशहित तृणवत् प्राणत्यागी हो गये, परन्तु आज भी हम अन्य देशवासियों के हृदय में तुम्हारे चमत्कृत जीवन का छाया चित्र मानों नवीन खचित चित्रकी नाईं चमक रहा है। आज भी तेरे जीवन के सांचे में अपने को ढाल देने की इच्छा होती है। आज भी ससार तुम्हें पूज्यभाव से प्रणाम किये बिना नहीं रह सकता है।

डाक्टर ने घाव की परीक्षा कर प्राणघातक नहीं बतलाया। तुरत औषधि की पट्टियों का प्रयोग किया गया, परन्तु जयोत्सुक चरित्रनायक को ऐसे समय में जब कि विजय-देव अपनी जयमाल लिये इधर उधर डोलते फिरते थे कब शांति मिल सकती थी।

अब अलग खड़ी हुई अँगरेज़ी नौकायें शीघ्रता से आगे बढ़कर नूतन बल और उत्साह के द्वारा समर की काया पलटा चाहती हैं। इन नौकाओं के आगे का कलोडेन (Callo don) जहाज बालूमें फँस गया। सेनापति वीर ट्रौब्रिज़ (Troubridge) ने अनेक उद्योग उद्धार के किये परन्तु निष्फल! तब इन्होंने अन्य पीछे से आती हुई नौकाओं को बचाने के लिये अपनी नौका पर लाल रोशनी कर दी और उन्हें सकुशल रणक्षेत्र में पहुँचा दिया।

नये दल का पहुँचना था कि वीरों ने हुंकार ध्वनि की। लड़ाई पुन घनघोर होने लगी, तोपों के गोले उगलने से समुद्र भी मानों गर्म हो उठा। अब फ्रान्सवालों के छक्के छूट गए।

Moholl- - ..
Edi..

एडमिरल ब्रूआईज़ की प्रधान नौका में आग लग गई। इस अग्नि के चट चट, तड, तड, शब्द से दिशा गूँज उठी। अन्धकार लोप हो गया। वीर एडमिरल ब्रूआइज़ दो घाव खाकर इसी भयानक अग्नि में जल मरा।

पाठक ! भयानक काण्ड मचा। एक धड़ाके के शब्द के साथ जहाज टुकड़े टुकड़े हो गया। इतने बड़े जहाज पर से केवल सत्तर मनुष्य अँगरेज़ नाविकों के उद्योग से बचाये गये। इन जल कर मरे हुए मनुष्यों में एक अत्यन्त होनहार बालक भी था। यह बालक नौकापृष्ठ पर अपने पिता की आज्ञा से खड़ा था, अग्नि लग गई, सब मनुष्य जिधर सींग समाई जा घुसे, परन्तु यह वीर पुत्र पिता की आज्ञा बिना कैसे हटे। ज्वाला ने चारों ओर वृत्तरेखा की नाईं घेर लिया, बालक मृत पिता को पुकार पुकार कर पूछता था "बाबा ! आज्ञा दो तो हटजाऊँ।" परन्तु कर्तव्यनिष्ठ ! तुझसे पुत्र को बाबा स्वर्ग में भी साथ रखना चाहता है। वीर कैसेबिअनका ! जाओ ! जाओ ! स्वर्ग की अप्सरायें तेरे सुस्वागत को खड़ी हैं, तुझ से पुत्र का पिता भी खिँच कर स्वर्ग में आ गया है, जाओ ! जाओ ! पिता की शीतल गोद को गर्म करो।

जाओ। जाओ ! धीर ! धनहीन दुखी सामान्य कर्णधार के पुत्र होकर भी तुम सुयश के सुवर्ण सिंहासन के अधिकारी हो। जाओ ! हम कवियों से अपना सुयशगान सुन सुन कर नक्षत्रमय स्वर्ग झरोखे में बैठ आनन्द उठाना। संसार की

बात चलानी ही फ़जूल है। आप ने कहा "नेलसन! तोहिँ अदेय मोहि कछु नाही।"

नेलसन ने अपनी ओर से ३० हज़ार रुपये के पदक अपने सब नाविकों और कप्तानों को दिये। नेलसन पुन: देश लौट आये, इस समय वह जहाँ जाते थे वहाँ ही राज्य तथा जन मान्य से मुदित होते थे।

पाठक! निष्काम देश सेवा के ये मधुर फल हैं।



# आठवाँ परिच्छेद।

*नेलसन भूमध्यसागर में तथा पुनः स्वदेश में।*



मियों की भी कैसी दशा होती है। प्रिया के सुख से प्रेमी का जीवन, दुःख से बस मरण है।

"अपने सुखों की ओर वह भ्रूक्षेप है करता नहीं,
उपहास निन्दा ताप दुख से वह कभी डरता नहीं
उठती नहीं है भूल कर भी कामना उसको कभी,
है दग्ध हो जाती सहज में वासना उसकी सभी॥"

देश-प्रेमी नेलसन को अपना देश ही आराध्य था, वह इसके लिये "दिन कहीं, रात कहीं, सुबह कहीं, शाम कहीं" रहने में तनिक भी सङ्कुचित नहीं होते थे। नाइल युद्ध में पाठकों को याद होगा कि नेलसन शत्रु गोले से अत्यन्त पीड़ित हो चुके थे, परन्तु घर पर बैठ रहने से देश सेवा पूरे तौर से नहीं हो सकती है यह विचार कर उन्होंने इटली की ओर यात्रा की। इस यात्रा में मार्ग कष्टों के कारण यह भयानक

ज्वर से पीड़ित हुए। १८ घंटे तक डाक्टरों ने इन से हाथ धो लिया था, परन्तु भाग्य से पुनः जीवन की कुछ आशा हुई।

इस बीमारी में इन्होंने एक पत्र अपने प्यारे लार्ड सेण्ट व्हिन्सेण्ट को लिखा था जिसके प्रत्येक शब्द से नैराश्य टपकता था। उसका साराश नीचे उद्धृत है :—

महाशय! विश्वास होता है कि अब आपसे फिर कभी भेंट न होगी। जीवन बोझ बोध होता है, परमेश्वर करे कि अब इस उत्सुक जीवन का, जो मध्य जून से फ्रेंचों की खोज में बिताने से आरम्भ हुआ है, समाप्ति हो जाय। मैं अपने को अब ईश्वर को समर्पण करता हूँ—हे ईश "राजी हूँ उसी में जिसमें रज़ा है तेरी"।

दुखी
नेलसन।

चरित्रनायक परमेश्वर की कृपा से शीघ्र ही चंगे हो चले और उन्होंने इटली से नेपल्स ( Naples ) की ओर प्रस्थान किया। नेपल्स में इनका स्वागत बड़े धूम धाम से हुआ।

इतिहासवेत्ता पाठक १७८९ के फ्रेंच प्रजा-विद्रोह की बात भूले न होंगे, विख्यात लेखक वोल्टायर (Voltaire) तथा रोसियों ( Rousseau ) की उत्तेजना से उन्मत्त फ्रेंच प्रजा मनुष्यत्व के नियमों पर हरताल डाल पवित्र मातृपितृ-स्वत्व को अपने राजा और राज महिषी के रुधिर से अप-

विद्व कर ससार भर में अपने अमानुषिक नियमों का प्रच खड्गपाणि होकर कर रही थी।

नेपल्सकी राजमाता, अभागिनी मृतक फ्रांस राजमहिषी मे अण्टोयनेट (Marie Antometoe) की बहन थी। नेपल्स भी फ्रेंचों के आक्रमण का भय था। नेलसन के वहाँ पहुँच हो मानो लोगों की जान में जान आ गयी। नेपल्स की राजमात ने चरित्रनायक का स्वागत सच्चे प्रेम और आनन्द से किया।

नेलसन को देखतेही यह बड़े शिष्टाचार से बोली—"हमारे उद्धार करने वाले वीर नेलसन! परमेश्वर तुम्हें आशी वांद दे और तुम्हारी रक्षा करे। हे वीर! मैं अपने राज्य, धन तथा देहके लिये भी तुम्हारी ऋणी हूँ। हे विजयी! हे इटली के रक्षक! समग्र इटली कूल के तुम्हो अभयदाता हो! यह उदार अँगरेजों की कृपा है जो तुम्हें इस भयार्त्तों की रक्षा में नियुक्त किया है।"

नेपल्सवासी अँगरेजों को बड़ो पूज्य दृष्टि से देखते थे, परन्तु फ्रेंचों के भयसे वे अधिक स्पष्ट व्यवहार दिखलाने में डरते थे।

इस समय फ्रेंचों ने पोप का शासन-दण्ड छिन्न कर रोममें प्रजासत्तक राज्य की नीव डालदी। नेपल्स भी निकट का ही, राज्य है, कहीं यहाँ भी फ्रेंच उपद्रव न करें, इसी सोच से वहाँके राजा के हृदय में भयानक चिन्ताग्नि चिता की नाईं धधका करती थी।

केवल उपद्रव का ही भय उसे नहीं था, बल्कि भय सब से बढ़ कर इसका था कि कहीं नेपल्स की प्रजा भी फ्रेंचों के उदाहरण की नक़ल न करने लगे और अपने राजा और राज परिवार के सिर को वधस्थान के रुण्ड मुण्ड में मिला दे।

नेलसन तथा राजमन्त्रियों के अनुरोध से नेपल्साधिप अपनी सेना इकट्ठी कर फ्रेंचों पर रोम नगर में चढ़धाये। इस समय नेलसनने प्रतिज्ञाकी कि नेपल्स की खाड़ीमें एक अंगरेजी नौका सदा राजपरिवार की रक्षा के लिये प्रस्तुत रहेगी।

नेपल्स की सेनाने, जो उधर रोममें लड़ने गई थी, बड़ी वीरता से लड़कर शत्रु फ्रेंच सेना को रोम से निकाल दिया, परन्तु यह विजय उनकी अन्तिम विजय थी। नेपल्स की सेना यद्यपि वीर थी परन्तु सहिष्णु नहीं थी। विजित फ्रेंच सेना का पीछा करती हुई जब नेपल्स की सेना जारही थी उस समय फ्रेंचसेना इसे थकी हुई देख, सख्यामें इनसे न्यून होने पर भी पलट कर खड़ी होगयी और जम कर लड़ने लगी। नेपल्स की सेना इस मारको श्रान्त होने के कारण सह न सकी। तुरत पैर उखड़ गये और विजय माल फ्रेंचों के गलेमें जा पड़ी।

नेपल्स शहर अब एकदम अरक्षित हो गया। राजा और राजपरिवारकी अवस्था इस समय बड़ी ही शोचनीय हो उठी। अब उनकी रक्षा केवल नेलसन के हाथ थी, इन्हीके जिवाए जीना और मारे मरना था।

प्रधान राजपरिचारिका ने राजपरिवार तथा राजधन-कोष को बडे उद्योग से एक सुरंग के द्वारा समुद्र तट की ब्रिटिश नौका पर सुरक्षित पहुँचा दिया।

नेलसन ने बडे उद्योग और कठिनाइयों से राजपरिवार-वालोंको वहाँ से अपनी व्हैनगार्ड (Vanguard) नौका पर पहुँचाया। दो दिन तक चरित्रनायकने खोज खोज कर शरण चाहनेवाले नेपल्स देशवासियों को अपनी नौका पर स्थान दिया। नेपल्स के कुल ब्रिटिश व्यापारी अपने माल मते के साथ अँगरेजी बेडे पर सुरक्षित स्थान पा सके। इस प्रकार इतने मनुष्योंकी रक्षा कर अँगरेजी बेडा पेलरमो (Palermo) द्वीप की ओर चला और तीन दिन के कष्टमय मार्ग को पूरा कर ये लोग सकुशल वहाँ पहुँच गये।

दुःखित नेपल्स राजपरिवार को यहाँ उतार कर और उनके सब प्रकार के सुख के सामान कर, चरित्रनायक ने संसारमें अपने परोपकार और दयाका अनश्वर स्तम्भ गाड दिया। इसी कारण से आज दोसौ वर्ष बाद भी नेलसन का नाम क्रिश्चियन धर्मावलम्बी देशों का गर्व है। नेलसन अपने पैगम्बर क्राइस्ट सा परोपकारी था। उसने नेपल्सवालों के लिये आँधी तूफान इत्यादि की पर्वाह न की और इनकी रक्षा कर सच्चा क्रिश्चियन कर्म चरितार्थ कर दिखलाया।

उद्विग्नता के समय में नेलसन रौद्र और शान्ति की अपूर्व मिश्र मूर्ति बन जाता था। वह जैसा ही वीर सिपाही और धीर

नाविक था वैसा ही वादी और विचक्षण राजनीतिज्ञ भी था। लार्ड व्हिन्सेण्ट इसकी गुणगाथा दोहराते हुए कहते थे "तुम रण में जैसे वीर हो, गूढमन्त्रणा में वैसेही धीर हो।"

मिण्टोने हांक कर कहा था, कि संसार केवल यही जानता है कि नेलसन स्वदेशके लिये लडनेवाला है परन्तु नाव्य-दक्षता, और वीरता के अतिरिक्त नेलसन में योग्यता और सहिष्णुता के गुण भी पूरे हैं, जिसके द्वारा यह स्वदेश के गौरव और हित की रक्षा करता है।

भूमध्यसागरमें फ्रेञ्चों का बल अब बहुत क्षीण हो चला था, ब्रिटिश बेड़े की सावधानता के कारण ईजिप्ट से फ्रेञ्चों को छूट कने का सुअवसर नहीं मिलता था। इधर माल्टा में भी ये लोग धताये जारहे थे, उधर पोर्चुगीजों ने ग्रेटब्रिटेन से सन्धि कर ली और अपना बेड़ा नेलसन के आधीन कर दिया।

इतने पर भी ब्रिटिश एडमिरल को सन्तोष नहीं था। वह -शत्रुओं का समूल नाश करने को बद्धपरिकर थे।

नेलसन परमेश्वर से शत्रुओं के नाश के लिये विनती प्रति करते थे और कहते थे "फ्रेञ्चों का अधःपतन। ये शब्द प्रत्येक देश के राजगृहों पर अवश्य अङ्कित चाहिये।"

इस बीच में समाचार मिला कि फ्रेञ्च लोग ओपार्टो के निकट जिब्राल्टर जाने के उद्योग में हैं।

एडमिरल नेलसन इस समय कुछ बीमार थे, परन्तु उन्होंने

ो यह बात सुनी, रुग्नावस्था की अक्षमता मानों दूर भाग
ाई, शीतल रुधिर में विद्युत् दौड़ गई, शरीर में तेज और
ल का सञ्चार हो आया, वह शत्रु को रोकनेके लिये
ालने को प्रस्तुत हो गये। बोले "युद्ध करने में एक क्षण का
विलम्ब भी अनुचित है।"

तुरत एक पत्र लार्ड व्हिन्सेण्ट प्रधान एडमिरल को
लिखा —

महाशय,

आप विश्वास रक्खें, ब्रिटिश बेड़ा मेरी आधीनता में, कदापि शत्रु के हाथ नहीं पड़ सकता है। हम लोग नाश होकर भी शत्रु को तो पंख-हीन कर बंदी हो जाने के योग्य अवश्यही कर देंगे।

पाठक! तनिक "नाश होकर भी शत्रु को पंख-हीन कर देंगे" शब्दों पर तो ध्यान दें। ये वीर चरित्रनायक का कैसा आन्तरिक भाव स्पष्ट प्रगट कर रहे हैं। यह देश प्रणय कैसा सराहनीय है कि मैं मरूँ तो मरूँ परन्तु देश शत्रु के पंख टूट जायें कि वह पुनः कभी देश की ओर भ्रूक्षेप न करे। धन्य!

नेलसन जनश्रुति के अनुसार पेलारमो में शत्रु की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसी समय वृद्ध मित्र सेण्ट व्हिनसेण्ट के देश
ने का समाचार मिला। नेलसन इससे अत्यन्त दुःखी हुए।
इनके स्थान पर कीथ साहब प्रधान अध्यक्ष होकर आये।

इस समय इन्हों ने कुल बेड़े का दो विभाग कर तेरह नौकाएँ चरित्रनायक की अध्यक्षता में सिसली की ओर रखी और बाकी बीस टाउलीन की ओर अपने आधीन रखीं।

यदि नेलसन का सैन्यबल इस समय अधिक होता तो शायद यह शत्रु को युद्ध के लिये बाध्य करते, परन्तु इनसे दुष्ट वीरने भी बाईस शत्रु नौकाओं से केवल तेरह नौकाओं को साथ ले सामना करना असम्भव समझा।

परन्तु कप्तान ट्रोब्रिज ने फ्रेंचों को अनेक स्थानों के थल युद्ध में परास्त किया, कुछ दिनो में फ्रेंच लोग नेपल्स से निकाल दिये गये और नेपल्स के राजा पुनः अपने देश लौट आये। राज परिवार ने अँगरेजों की अत्यन्त कृतज्ञता प्रगट की और अपने रक्षक नेलसन को ब्रोण्ट (Bronte) बना कर ४५ हजार रुपये की सालाना पेन्शन नियत कर दी।

कीथ साहब कुछ दिनों के लिये स्वदेश चले गये, इन के स्थान पर नेलसन को प्रधान स्थान मिलना चाहिये था, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। प्रधान एडमिरल का स्थान कीथ साहब के आने तक खाली पड़ा रहा।

नेलसन को यह अपमान सा बोध हुआ, उसने बड़े दुःख के साथ लिखा था ' मैं जब भूमध्यसागर में प्रधान अध्यक्ष के काम करने योग्य ही नहीं हूँ तब मेरे लिये ग्रीनविच के रुग्नागार से बढ़ कर और स्थान कहाँ हो सकता है।"

इनके दुःखकी मात्रा उस समय और भी बढ़ गई, जब पोलियन जो सदा कहा करता था कि एक न एक दिन हम ग इंजिप्ट से अवश्य सकुशल देश लौट जायेंगे" सचमुचही ४ अक्तूबर को अंगरेजी बेड़े के रहते हुए भी सकुशल फ्रान्स ट गया।

नेलसन को जो हृदय से चाहते थे कि फ्रान्स का एक भी हाज़ इंजिप्ट से न भाग सके, इस बात की बड़ी लज्जा हुई। इस समय नेपोलियन यदि पकड़ा जाता तो इतिहास का प ही बदल जाता। नेपोलियन की क्रूरता इस प्रकार जगत में ख्यात हो, वीर का नाम आज भी कलङ्कित न कर सकती, वह Pest of Human race के नाम से ही पुकारा जाता।

नेलसन कहता था कि यदि मैं माल्टा की रक्षा में नियत न ता और मेरे पास कुछ भी और अधिक नौकायें होतीं तो पोलियन इस प्रकार अकड़ता हुआ फ्रांस नहीं लौट कता था।

इस समय कीथ साहब स्वदेश से लौट कर भूमध्यसागर के ड़े का भार लेने पुनः वापस आगए। नेलसन के हाथ से इस मय एक ऐसा कार्य्य हो गया जिससे इनके सन्तप्त हृदय ो शान्ति मिली। नाइल युद्ध से भागे हुए दोनों फ्रेञ्च जहाज़ स समय भाग्य से बन्दी कर लिये गये।

नाइल युद्धका आरम्भ नेलसन के हाथ से होकर समाप्ति ो इनके हाथों ही हुई।

चरित्रनायक अब स्वदेश लौट चले। जर्मनी होते हुए १८०० ई० को ६ ठी नवम्बर को यह यारमौथ (Yarmouth) सकुशल पहुँच गये।

जहाज नौकाश्रय में पहुँचा। नेलसन के देशभूमि पर पैर रखते ही समग्र इङ्गलैण्डवासी आ जुटे। बड़े आवभगत से एक गाड़ी पर चरित्रनायक बैठाये गये, नगरनिवासी घोड़े की जगह आपही गाड़ी खींचकर लन्दन तक ले गये। अनेक पदवियाँ, अनेक खिलअतें भेट की गई। रात्रिके समय स्थान स्थान पर आतशबाज़ियाँ छूटने लगी। मनुष्यों ने जो जो सत्कार उचित थे सब किये।

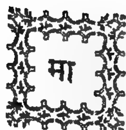
पाठक! चारों ओर आनन्द ही आनन्द हो गया।

चरित्रनायक का भी श्रम भूल गया, वह प्रसन्न हो गये।



# नवाँ परिच्छेद।

*कोपिनहेगन का युद्ध।*



नवो प्रकृति भी कैसी अस्थिर होती है, एक क्षण में कुछ, दूसरे क्षण में कुछ और ही हो जाती है, आज यदि मिष्टान्न हमें अच्छा मालूम होता है तो कल उससे अरुचि हो जाना असम्भव नहीं, आज यदि जन कलकल से हम प्रसन्न हैं तो कल एकान्तवासी, गृहत्यागी हो जाना असम्भव नहीं।

इस प्रकार की प्रकृति, यद्यपि अनेक बड़े २ मनोविज्ञान वेत्ताओं के मत से, दुर्बलता है, परन्तु मनुष्य मात्र में ही एक न एक दुर्बलता विद्यमान है, अतः एक दोष से मनुष्य नीच नहीं हो जा सकता। जिस विधाता ने "सागर के जल खार कियो, अरु कण्टक पेड़ गुलाब के कीनो" उसने ही चरित्र-नायक के उज्ज्वल चरित्र में एक ऐसा काला धब्बा भी लगाया जिसके कारण वीरवर दुर्बल हृदय कहा गया।

परन्तु इससे क्या? यशस्वी नेलसन का क्या जगत् तिर-

स्कार कर सकता है ? स्कॉट के कथनानुसार चरित्रनायक पर दोषारोपण करने के पहले पाठक गण '—

"———Search the land of living men"
"Where wilt thou find his like agen"

फिर जैसा कहते बने कहना।

नेलसन स्वदेश में आकर यद्यपि जन-सत्कार से बहुसम्मानित हो अत्यन्त प्रसन्न हुआ, परन्तु इसका गृहस्थ-जीवन अपनी पूर्व प्रेयसी निरपराधिनी स्त्री को, एक नेपल्सवासिनी, बीबी हैमिल्टन के प्रेम पाश में फँसकर, त्याग देने से बिलकुल किरकिरा हो गया।

नेलसनका अन्तःकरण यद्यपि हैमिल्टनके प्रेम-चुम्बनके लिये लालायित हो रहा था, परन्तु वह अपनी पूर्व पाणिग्रहीताके सद्गुणोंको भूल न सके थे। पाठक! त्यागनेके समयके ये अन्तिम शब्द,—"मैं परमेश्वरको शपथ खा कर कह सकता हूँ कि तुममें वा तुम्हारे चरित्रमें एक भी बात दूषणीय नहीं है।" चरित्रनायककी सच्ची गुणग्राहिता दिखला रहे हैं। एक-मात्र आत्म दुर्बलता ही ऐसे उदार प्रकृति नेलसन से ऐसा कठोर व्यवहार हो जानेका कारण कही जा सकती है।

नेलसनके उचितवक्ता मित्रोंने इनकी ऐसी कठोरता पर इनकी खूब ही खबर लीथी। खैर विभ्रम भी मनुष्य जातिके लिये ही है 'A man of genious & virtue is

but a man" अर्थात लाखों गुणोंसे शोभित होता हुआ मनुष्य भी मनुष्य ही है।

नेलसन स्वदेशमें अधिक दिनो तक न रह सके। पूर्व दिशामें समर भेरीके शब्दसे शार्दूलके अङ्ग २ फडकने लगे। पुन देश गौरवकी रक्षाके लिये, अविलम्ब बेडा ठीक कर हुँकार ध्वनि करते हुए वह चल पडे।

इस समय ग्रेट ब्रिटेन उदासीन देशोंकी नौकाओंकी जाँच पडताल बडी कडाईसे किया करती थी और जहाँ कोई वस्तु फ्रान्स देशमें जानेके लिये जहाज़ पर पाती पकड लेती थी।

इस धरा पकडीमें डेनमार्कसे कई बार झगडा हो गया, जहाज जहाजमें भी कभी कभी टटा होही जाता था, परन्तु अभीतक युद्ध पूर्ण रूपसे नही छिडा था।

रशियाके ज़ार इस समय अँगरेजोंके माल्टा नही छोडने के कारण क्रुद्ध थे और बदलेमें उसने तीन सौ व्यापारी अँगरेजी जहाज़ोंको बन्दी कर लिया था।

इस पर भी सन्तुष्ट न हो कर, रशियाने स्वीडन, डेनमार्क और प्रूशियाको भी अपना साथी बनाया और एक "Armed Neutrality नामक सन्धि स्थापन की, जिसके द्वारा इन लोगोंने अँगरेजोंको जहाज़ोंकी तलाशी लेनेसे रोका। इधर नेपोलियनने जो इन राज्योंको कमर कसते देखा तो खूब शाबाशी दी और उनको ५० समर-नौकाओंके द्वारा अपने कट्टर शत्रु अँगरेज़ोंके नाशकी भावना मनमें करने लगा।

पहले ग्रेट ब्रिटेनने डेनमार्कको ऐसी छेड़छाड़ न करनेके लिये बहुत समझाया। फिर रशियन बेड़ेको उसके अन्य सहायक बेड़ोंसे अलग रखनेका भी उपाय किया और एक बेड़ा हाइड पारकर तथा नेलसनके अधिकारमें यारमौथके नौकाश्रयसे रवाना किया। (१२ मार्च)।

इधर डेनमार्क वालोंने जो ब्रिटिश सिंहके साथ भीषण युद्धकी सम्भावना देखी, तो पहले वे अपनी राजधानी कोपिनहैगनको रक्षाका पूरा सामान करने लगे। आबाल वृद्ध डेन्स लोगोंने दिन रात कठिन परिश्रम कर टूटे प्रकोष्ठ इत्यादि को दुरुस्त करना आरम्भ करदिया। इन लोगोंका कथन था, कि यातो अपनी राजधानीकी रक्षा ही करेंगे या प्राणही दे देंगे।

शुरू अप्रेलमें अंगरेजी बेड़ेने यारमौथसे चलकर डेनमार्क की राजधानी कोपिनहैगनसे पांच मील पर इलिसनोर (Elsnore) में लङ्गर डाला।

पारकर साहब शुरूसे ही बड़ी सावधानतासे कार्य्य कर रहे थे; यद्यपि यह नेलसनके स्वभाव के विरुद्ध थे तथापि अपनेसे बड़े अफ़सरके काममें यह छेड़छाड़ नहीं कर सकते थे। मार्गका विचार करते हुए, पारकरने डेनमार्क जानेके लिये इंगलैण्ड और डेनमार्कके बीचके सकीर्ण मुहानेसे जाना निश्चित किया।

नेलसनको भी विचारकी सूचना दी गई, बड़ी निर्भयता से उसने कहला भिजवाया कि चलनेके मार्गके लिये इतना

रगडा क्यों, जब लडना ही है तो किसी मार्गसे पार होकर लडना चाहिये।

नैलसनको अपने प्रधानके भ्रकी मिजाजसे भय था, कि कहीं वह डेनमार्क वालोंको अजेय मान छोड न दे। परन्तु अब जब उन्होंने देखा, कि युद्ध होनेमें सशय नहीं तब तो बडे प्रसन्न हुए और निश्चय ही विजय पानेके लिये अब वह तत्पर हो युक्तियाँ सोचने लगे।

पाठक! अब तनिक आँखे मूँद, समर-भूमिका ध्यान करें, और अपने चरित्रनायककी अकाट्य युक्ति पर शाबाशी देवें।

कोपिनहैगनके सम्मुख दो मुहाने हैं जिनसे बडे जहाज आ जा सकते हैं। उन दोनों मुहानोंके बीच एक बडी लम्बी बालुकामयी भूमि है। भीतरी मुहानेके सन्निकट भूमिपर डेन्सोंकी प्रभावशालिनी और शक्तिशालिनी सेना डटी है। उन्हें यह विश्वास है, कि शत्रु-सैन्य अवश्य इसी मुहानेसे आवेगी और हम लोगोंसे अवश्यही पराजित हो जायगी।

इधर नैलसनने उनके हवाई किलेको अपनी एक युक्तिसे हवामें ही मिला दिया। इन्होंने भीतरी मुहानेसे न जाकर, बाहरी मुहानेसे घुसकर ही आक्रमण करनेका विचार किया। इस मुहानेसे प्रवेश करनेपर, अँगरेजी बेडा डेन्सोंके पिछले भाग पर आक्रमण करेगा और नाश करता हुआ भीतरी मुहानेसे निकल जायगा।

अँगरेजी जहाजों पर पानी थाहनेका यन्त्र नहीं था, अतः नेलसन दो दिन तक खुली डोंगीमें अन्धकारमयी रात्रिमें मुहानेकी थाह लेता फिरा। खैर १ एप्रिलको ब्रिटिश बेड़ेने कोपिनहैगन नगरसे २ मीलकी दूरीपर लङ्गर डाला।

नेलसनका अन्तरङ्ग मित्र कप्तान हार्डी इस समय जान जोखिमका कार्य्य कर बैठा। बड़ी चतुरतासे वह अपने जहाजसे उतर, एक डोंगीपर चढ़ कर, डेनिश तोपखानेमें घुस गया और कुहासेके अन्धकारमें यह डेन्स-प्रधान-एडमिरल की नौकाकी भी परिक्रमा कर आया। कहीं पानीकी छपछपाहट पा शत्रु जाग न जायँ, इस विचारसे साँस रोकता हुआ और लग्गीसे डेंगी खेता हुआ वीर जा रहा था।

थोड़े शब्दसे बनाबनाया खेल मिट्टी हो जायगा। इस समय सर्वत्र शान्ति है। शान्त समुद्रमें वायु सञ्चालनसे जलके थपेड़ेके शब्दके सिवाय और कोई शब्द नहीं है। दिशा शब्दहीन हो गयी है। कहीं २ जहाजों पर जो रोशनियाँ जल रही हैं वे भी कुहासेके अन्धकार-पटमें विलीन हो जाती हैं। प्रहरीगण रातके इस मध्यभागमें ऊँघ रहे हैं, उन्हें क्या खबर थी, कि शत्रु इतनी ढिठाई कर सकते हैं।

चारों ओर टोह लेता हुआ कप्तान हार्डी अपने जहाजकी ओर घूमा। किसीने देखा तक नहीं। सकुशल यह नेलसनसे जा मिला और पेनसिल कागज ले समूचा नकशा भीतरका खींच दिया। कहाँ पर जहाज़ घूम सकता है, कहाँ पर

बालूमें अटकनेका भय है इत्यादि सब भेद नेलसनने अपने धूर्त्त जासूसके बुद्धिचातुर्य्यसे जान लिये।

नेलसनने तुरन्त प्रधान एडमिरलसे मिल, दश हलके जहाज़ आक्रमण करनेको मांगे। पारकर साहबने दो और अधिक जहाज दु:समय विचार नेलसन को दिये और स्वयम् बचे बेड़ेके साथ रशिया और स्वीडिश लोगोंको सहायता देनेसे रोकनेके लिये तैयार हो गये!

दूसरे दिन वायु अँगरेजी बेड़ेके अनुकूल बहने लगी, मानो ईश्वर भी इनको आक्रमणके लिये उत्तेजित करने लगे। परन्तु इस समय एक कठिन असमञ्जस पैदा हुआ। आठ बज गया, परन्तु कोई मार्गदर्शक ब्रिटिश बेड़ेके लिये आगे बढ़ता ही नही। इसका कारण यह था कि मार्ग दर्शकगण स्वयम् ही मार्गसे पूरे अवगत नही थे। सन्धि समयमें किसी किसी प्रकार टोते टटोलते, वे अपने व्यापारिक जहाजोंको पार करलेते थे, परन्तु इस समय लड़ती हुई बड़ी बड़ी युद्ध नौकाओंको रास्ता दिखलाना इन्हे असम्भव बोध होने लगा।

खैर, यह झमेला अधिक देरतक न रहा। कप्तान मरे (Murray) ने अपने एडगार (Edgar) जहाज पर मार्ग दर्शकका कठिन भार अपने ऊपर ले लिया। दस बजे सब लैस हो गये और क्रमसे चलनेका सकेत दे दिया गया।

एडगार (Edgar, अपना कार्य बड़ी कुशलतासे कर रहा था, परन्तु अभाग्यवश आगेके तीन जहाज़, नायकका

पुराना अगमेमनन (Agmumnon), वेल्लोना (Bellonal) रसे (Rusvel) बालूमें फँसकर बेकाम हो गये। इस प्रकार चौथा आक्रमणकारी जहाज रद्दी हो गये। अबकी नेलसन दिग्विजयो (Elophant) की पारी थी। यदि नेलसन इ समय बुद्धिमानी नहीं करते और हार्डी का नक्शा उन पास न होता तो वह भी बालूमें फँसजाते परन्तु वे कठि उद्योगसे निकल गये। बस फिर क्या था पीछे के सब जहा साफ निकल आये और दो तरफ गोलों की बाढ शत्रु प दागने लगी।

अब तीन नष्ट जहाजों की, अपनी वीरता से, क्षति पूर्ति करने के लिये, कप्तान रायोक्सने (Rioux) हलकी जहाजों साथ आगे बढकर शत्रु के तोपखाने पर धावा किया। य हलका बेडा ऐसा जी खोल कर लडा, कि शत्रु के छक्के छूटने लगे। मानो इन वीर नाविकों को अपनी हानि का ध्यान त नहीं होता था।

पाठक। यही सच्चे युद्ध का चित्र है, आड का कहीं नाम नहीं, दोनों ओर के तोप के गोले, दोनों ओर की नौकाओं पर ही टकराते हैं, गोलियोंसे तो मानो सावन भादों की झड़ी लग गयी है। वीर नाविकों को इस समय घावों की सुधि भूल गई है, बेतहाशा गोलियां छोडते और खाते हैं। नेलसन ने कहा,—आज के युद्ध से स्वर्ग में स्थान बढाने की आवश्यकता है। आज क्षण मात्र में न जाने कितने वीर वीरगति को पहुँचेंगे।

परन्तु जो कुछ हो मैं तो ऐसे घनघोर युद्ध के बीच में स्वर्ग के राज्य के लिये भी नहीं हटना चाहता।"

इस छोटे स्थान में ऐसे घनघोर युद्ध की भावना मात्र से ही मन घबरा उठता है। युद्ध करते २ दोनों दल अब केवल दो सौ गज़ की दूरी पर चले आये थे। डेनिश प्रधान अध्यक्ष की नौका में इस अग्नि वर्षा के कारण अग्नि लग गई।

आग लग जाने पर भी वीर स्वदेश-भक्त डेनिशों ने मारना छोड़ा नहीं, परन्तु कब तक? अग्नि भीषण रूप धर धुधकारने लगी। अब विचारा स्वदेश की सेवा करता हुआ, संसार इतिहास में अपना नाम अमर करके प्रधान डेनिश पञ्चतत्व में मिल गया।

मुहाने के बाहर खड़े हुए अँगरेज़ों के प्रधान अध्यक्ष पारकर साहब तोपों की विकराल गड़गड़ाहट और अग्नि की गगन-चुम्बी लो देखकर तथा अपनी नौकाओं की अत्यन्त न्यून सख्या सोच २ कर विकल होनेपर भी, वायु के प्रतिकूल रहने के कारण सहायता नहीं पहुँचा सकते थे।

साथही पारकर नेलसन के स्वभाव से अभिज्ञ थे। वह जानते थे कि नेलसन आमरण समर क्षेत्र से विमुख होने वाले नहीं है, अब क्या किया जाय। एडमिरल को कोई युक्ति नहीं सूझी। घबरा कर न० ३८ का समर रोकने वाला सांकेतिक झण्डा खड़ा कर दिया।

इस समय नेलसन नौका पृष्ठ पर घूम घूम कर भीषण

समर-लीला देख रहे थे। इतने में संकेत देखने वाले अफसर ने नेलसन का ध्यान उस ओर आकर्षित किया। नेलसन ने घबराकर पूछा,—"क्यों मेरा नं० १६ का जम कर समर करने वाला झण्डा तो लगा हुआ है न ?" प्रधान के हुंकारी भरने पर उन्होंने पुनः कहा—"ध्यान रखना, हमारा झण्डा नीचे झुके नहीं। डर कर समर बन्द करने के पहले मैं अपना प्राण निकल जाना कहीं उत्तम समझता हूँ। अपने चश्मे को दृष्टि-हीन नेत्र पर खींच कर नेलसन ने अपने सहकारी कप्तान फौले साहब से हँसकर कहा—' क्यों जी! ऐसे २ समयों पर मेरा एकाक्षी होना मुझे आज्ञा उल्लङ्घन के कठोर दण्ड से बचा सकता है न ?" संकेतक! पुनः कहता हूँ सावधान! मेरा जम कर लड़ने का संकेत नीचे न गिरे।

पाठक! सेण्ट विन्सेण्ट के युद्ध में प्रधान अध्यक्ष की आज्ञा उल्लङ्घन से विजय पाना आपको भूला नहीं होगा, वही बात पुनः आज सन्मुख आई। इस बार भी युद्ध विजय हुआ।

वीर कप्तान रायोक्स (Riouex) ने प्रधान अध्यक्ष की आज्ञा का पूरा प्रतिपालन किया। ज्योंही संकेत देख कर यह लौट रहा था और कह रहा था 'हाय! नेलसन युद्ध बन्द करने में क्या समझेगा।" इतने में शत्रुदल का गोला कुछ नाविकों को घायल करता हुआ इसे आ लगा। वीर गिर पड़ा, परन्तु गिरते गिरते भी इसने ऐसी उत्तेजना-अग्नि नाविकों के हृदय में लगाई कि कोपिनहेगन-युद्ध विजय कर के ही वह बुझी।

"आओ वीरो ! आजाओ ! बस हम तुम एक साथ ही स्वर्ग को चले ।" ये उसके अन्तिम वचन थे। वीरो ने पुनः नूतन बल युक्त हो समर आरम्भ किया। टो बजते २ शत्रु लोग ढीले पड़ गये। शत्रु बेड़ा आधे से अधिक तहस नहस हो गया। उनके तोपखाने जहाँ तहाँ पानी में डूब गये। उनका प्रधान जहाज़ जल भुन कर राख हो गया। अब वीर डेन्सों का बचना कठिन था, क्योंकि वे मरते २ भी पीछे हटने वाले नहीं।

नेलसन इन वीरों को मर मिटते देख न सका, तुरत एक पत्र डेन्सों के पास इस प्रकार लिखा :—

"अँगरेजो के प्यारे भाई डेन्मार्कवासी ! लार्ड नेलसन को आज्ञा है कि वह डेनमार्कवासियो को शस्त्र रख देने पर जीवन-दान दे देवे। परन्तु यदि शस्त्र रखने में आप लोग आनाकानी करेंगे, तो नेलसन आपके कुल जहाज़ों को जला कर राख कर देगा और आप वीर डेन्सों को बचा न सकेगा।"

नेलसन के सिकत्तर ने पत्र को मामूली लाह से बन्द करना चाहा, परन्तु नेलसन ने ऐसा करने से मने किया और पत्र को ठीक तरह से सील मोहर कर बन्द करने की आज्ञा दी क्यों कि यह पत्र डेनमार्क के राजा के पास जायगा। यदि वह पत्र को ठीक तरह से मोहर किया हुआ नहीं देखेगा तो अवश्य समझेगा कि किसी घबराहट की जल्दी में चिठ्ठी बन्द नहीं की गई।

अस्तु। उत्तर में डेनमार्क के राजा ने समर बन्द करके सन्धि करने को लिखा। नेलसन ने बड़ी योग्यता से कहला दिया, कि प्रधान अध्यक्ष पारकर साहब से इस विषय में राय ली जाती है उत्तर आने पर सन्धि पत्र लिखा जायगा। तब तक समर बन्द रहेगा।

उधर पत्र प्रधान अध्यक्ष के पास भेजकर नेलसनने विजित शत्रु नौकाओं को शत्रुओं से बहुत दूर अलग लाकर लङ्गर डाल दिया।

रात्रि होते होते सन्धिस्थापित हो गई। वाचक! कोपिन हैगन का प्रसिद्ध युद्ध समाप्त हो गया। यहाँ पर डेनमार्क वालों की युद्ध रीति का कुछ विवरण कर परिच्छेद समाप्त किया जायगा।

डेन्स लोग ठीक ब्रिटन लोग के समान योद्धा थे, कोपिन-हैगन के युद्ध के पहले हम लोग फ्रान्स और स्पेन वालों की युद्ध-शैली देख चुके है, परन्तु वे लोग वीर डेन्सों के पैर की धूल की समता नही रखते थे। चार घण्टे तक अँगरेजों की भीमकाय तोपों से उगले हुए लहलहाते गोलों को सहने की शक्ति डेन्सों को छोड़ और भूपृष्ठ पर किसी वीर जाति को नही। ऐसा कार्य्य, ऐसी समर-धीरता और युद्ध निपुणता अभी तक देखने में नही आई।

डेनमार्कवाले कहीं फिर रुशिया से मिल कर उपद्रव न करें, यह सोचकर रुशियनो से युद्ध करने का विचार अँगरेजों

का था, परन्तु रशिया का ज़ार ४ थी एप्रिल को चल बसा और शान्ति पूरे तौर से स्थापित हो गई।

नेलसनने सन्धि की शर्तें ऐसी योग्यता से ठीक की थीं, कि शत्रु मित्र दोनों प्रसन्न हो गये।

नेलसन के पुराने प्रशंसक वृद्ध लार्ड सेण्टव्हिन्सेण्टने इस समय लिखा, कि "महाशय! आदि से अन्त तक आप के प्रत्येक कार्य्य श्लाघ्य है। मुझे आपकी उपमा खोजने की आवश्यकता नहीं, संसार में और सदृशता हो सकती है परन्तु नेलसन जगत् में एकही है।"



# दसवाँ परिच्छेद।

*नेपोलियन की इंगलैण्ड पर चढ़ाई की धमकी।*



न्धि स्थापित हो गई। १७८० के चार शत्रुओं में से डेनमार्क तो समाप्त ही हो गया, परन्तु रशिया, स्वीडन और प्रूशिया ने अभी खुल्लमखुल्ला सिर नहीं नवाया था। फिर बिना इन्हें वश में किये अँगरेज लोग सुख की नींद कैसे सो सकते है?

अतः एक ब्रिटिश बेडा बाल्टिक समुद्र में स्वीडनवालों की खोज में निकला। नेलसन को पुन. इस समय पुराने (Elephant) को छोड सेण्ट जॉर्ज (St George) जहाज़ पर जाना पड़ा। अभाग्यवश सेण्ट जॉर्ज (St George) में इस समय कुछ मरम्मत की दर्कार थी, इस लिये वह बेड़े से पीछे छूट गया।

नेलसन बेडे के साथ उपस्थित रहने के लिये अस्तव्यस्त हो रहे थे, एक पत्र मे इन्होंने लेडी हैमिल्टन को लिखा था, सुनने मे आया है कि स्वीडिश बेडा शैलोज़ (Shallows)

के निकट आ गया है। हमारे जितने नाविक हैं सब युद्ध में जाने को व्यग्र हो रहे हैं, और मुझे भी यहां रहना विद्यार्थियों के स्कूल में रहने के बराबर है। जिस प्रकार स्कूल में छुट्टी हो जाने पर विद्यार्थीगण अपने गृह पर गद्‌गद् हृदय से लौट जाने को व्यग्र रहते हैं, उसी प्रकार मैं भी युद्ध-रूपी स्कूल को शीघ्र समाप्त कर कैसे भी इँगलैण्ड लौट जाने को उत्सुक हूँ।

सेण्ट जार्ज (St George) को युद्ध के लिये पूरी तरह से तैयार हो जाने के पहले ही, नेलसन को समाचार मिला कि स्वीडिश लोग आगे बढ़े आ रहे हैं।

युद्ध छिड़ जायगा और मैं समरक्षेत्र से इतनी दूर पड़ा रहूँगा, इस विचारने नेलसन को अपने आपेसे बाहर कर दिया। उन्होंने तत्काल एक डोंगी तैयार करने की आज्ञा दी और उसी में बैठकर अपने जहाज को छोड़ दिया, और वेड़े से जा मिलने के लिये रवाना हो गये।

# दसवाँ परिच्छेद।

*नेपोलियन की इँगलेण्ड पर चढाई की धमकी।*



न्धि स्थापित हो गई। १७८० के चार शत्रुओं में से डेनमार्क तो समाप्त हो हो गया, परन्तु रशिया, स्वीडन और प्रूशिया ने अभी खुल्लमखुल्ला सिर नहीं नवाया था। फिर बिना इन्हे वशमें किये अँगरेज लोग सुख की नींद कैसे सो सकते है?

अत' एक ब्रिटिश बेडा बाल्टिक समुद्र में स्वीडनवालो की खोज में निकला। नेलसन को पुन इस समय पुराने (Elephant) को छोड सेण्ट जॉर्ज (St George) जहाज़ पर जाना पडा। अभाग्यवश सेण्ट जॉर्ज (St George) में इस समय कुछ मरम्मत की दर्कार थी, इस लिये वह बेडे से पीछे छूट गया।

नेलसन बेडे के साथ उपस्थित रहने के लिये अस्तव्यस्त हो रहे थे, एक पत्र मे इन्होंने बीबी हेमिल्टन को लिखा था, कि ` में आया है कि स्वीडिश बेडा शैलोज़ (Shallows)

के निकट आ गया है। हमारे जितने नाविक हैं सब युद्ध में जाने को व्यग्र हो रहे हैं, और मुझे भी यहाँ रहना विद्यार्थियों के स्कूल में रहने के बराबर है। जिस प्रकार स्कूल में छुट्टी हो जाने पर विद्यार्थीगण अपने गृह पर गद्गद् हृदय से लौट जाने को व्यग्र रहते हैं, उसी प्रकार मैं भी युद्ध-रूपी स्कूल को शीघ्र समाप्त कर कैसे भी इँगलैण्ड लौट जाने को उत्सुक हूँ।

सेण्ट जार्ज (St George) को युद्ध के लिये पूरी तरह से तैयार हो जाने के पहले ही, नेलसन को समाचार मिला कि स्वीडिश लोग आगे बढ़े आ रहे हैं।

युद्ध छिड़ जायगा और मैं समरस्थल से इतनी दूर पड़ा रहूँगा, इस विचारने नेलसन को अपेने आपेसे बाहर कर दिया। उन्होंने तत्काल एक डोंगी तैयार करने की आज्ञा दी और उसी में बैठकर अपने जहाज़ को छोड़ दिया, और बेड़े से जा मिलने के लिये रवाना हो गये।

मार्ग में चरित्रनायक का हृदय यह सोच सोच कर, कि कहीं बेड़े से मैं न मिल सका और युद्ध छिड़ गया तो मैं क्या करूँगा, उथल पुथल होने लगा। जल्दी के मारे नेलसन ने अपने गर्म वस्त्र तक न लिये, नाविकों के ठहर कर कोट ले लेने के अनुरोध करने पर इन्होंने कहा "भाइयो! मेरे लिये शीत कहाँ है? स्वदेश-रक्षा करने की व्यग्रताही मेरे शरीर को गर्म रखती है।" ठीक है! ठीक है! जन्मभूमि का सच्चा लाल! तू तो—

"तन्मय सदा है मग्न रहता, देश ही के ध्यान में,
निज को सदा है भूल जाता, देश ही के ध्यान में,
कर त्याग सत्तव स्वार्थ का, तू देश में अनुरक्त है,
आदर्श प्रेमी, पुण्य-भाजन, देश का तू भक्त है।"

श्रेष्ठ। तुझ सा एक देश-भक्त भी यदि प्रत्येक देश में प्रत्येक सदी में, जन्म लेता तो कोई भी देश दरिद्रता तथा परतन्त्रता की बेडी में क्यों जकडा जाता।

नेलसन ने पुन अपने नाविकों से उसी व्यग्रता में पूछा "क्या आगे का बेडा बहुत दूर निकल गया होगा? क्या वह मुझे मिलने का नहीं? क्या मैं विफल मनोरथ हो घूम आऊँगा? नहीं! नहीं। कदापि नहीं। हे ईश्वर मुझे सहायता दो। मेरे शरीर में देश-विद्रोहियों को नाश करने की विद्युत शक्ति दो! मुझमें आत्मबल, शरीर-बल और कष्ट सहने का बल दो। मुझमें लघिमा शक्ति का सचार कर दो कि मैं स्वदेश रक्षा के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पर पक्षियों की नाई उड जाया करूँ। बस अब मैं चला, माझी। माझी! भइया! आज अपनी सर्व शक्ति नौका खेने में लगादो। देखना वीरो। यदि मैं ठण्ड से मर भी जाऊँ तो मेरा मृतक शरीर ही रण-भूमि में पहुँचा देना, इतनेसे ही मेरे आत्मा को शांति हो जायगी।"

वाचकवृन्द। इस प्रकार बिना भय दाने के छ माझियों के साथ देशरक्षा व्रत में व्रती वीर नेलसन आधी रात होते २

बेड़े के निकट पहुँच गये। Elophant एलीफैण्ट जहाज़ के निकट डोंगी लगा दी गई, तथा नाविकों ने शीत और भूख से अधमरे सत्ता-हीन नेलसन को टाँग कर ऊपर चढ़ाया।

दूसरे दिन प्रात:कालही स्वीडन-बेड़ा दीख पड़ा, परन्तु शीघ्रही फिर कार्लस्क्रोना (Carlscrona) के तोपखाने के पीछे अन्तर्धान हो गया।

थोड़ी देर में एक शत्रु-नौका, शान्ति का झण्डा लगाकर, ब्रिटिश एडमिरल की नौका के निकट पहुँची और एक सन्धि स्थापन करने का प्रार्थनापत्र, एडमिरल को दिया। पारकर साहब ने प्रार्थना स्वीकार की और युद्ध करने की मनाही कर दी।

अँगरेज़ी बेड़ा अब फिनलैण्ड (Finland) द्वीप की ओर घूमा। ये लोग अभी कुछ ही दूर गये होंगे, कि पीछे से एक रशियन नौका आ पहुँची। उसने ज़ार पौल का मृत्यु-समाचार तथा उनके उत्तराधिकारी ज़ार की सन्धि स्थापन करने की इच्छा प्रगट की।

बेड़ा अब ज़ीलैण्ड की ओर यह समाचार सुन लौट पड़ा, और कायोगी की खाड़ी (Kioge Bay) में उसने लङ्गर डाल दिया।

सब समाचार इँगलैण्ड भेजे गये और वहाँ से सन्धि की मञ्ज़ूरी ५ मई को आ गई, साथही पारकर साहब वापिस बुला लिये गये और नेलसन को प्रधान अध्यक्ष (Commander-in chief) की पदवी दी गई।

नेलसन ने सन्धि की मञ्जूरी का समाचार देने तथा शर्तें ठी करने के लिये अपनी नौका पर रशियन नौकाश्रय में गय ३०० ब्रिटिश व्यापारी जहाज जिन्हें रशियनों ने पकड़ लिया थ तुरन्त छोड़ दिये गये, और जो शर्तें नेलसन ने चाहीं दूस देश ने मजूर कर लीं। अब ज़ार ने नेलसन को शिष्ट से वापस जाने को कहा। शान्ति हो गई। नेलसनने प्रसन्न चित्त से १९ जून को बाल्टिक समुद्र से स्वदेश की ओर यात्रा की। तीन सप्ताह के बाद सकुशल वह यारमौथ के नौकाश्रय जा पहुँचे।

लार्ड सेण्ट व्हिन्सेण्ट ने इस समय नेलसन को लिख "महाशय! आपसा योग्य उत्तराधिकारी पाना कुछ का सौभाग्य की बात नहीं। मैं ने अपने इस व्यवसाय में आ तक आप तथा कप्तान ट्रौब्रिज से ऐन्द्रजालिक, जो अप हृदय की सची उत्तेजना दूसरे के हृदय में मन्त्र-बल से स कार कर दे, कहीं देख नहीं पाये।

यारमौथ पहुँचने पर वहाँ के अधिवासियों ने जयी नेलस का यथोचित स्वागत और सम्मान किया।

सट्य चरित्रनायक वहाँ पर अधिक देर तक नहीं ठहरे गगन-भेदी करतलध्वनि के बीच वह सीधे रुग्णागार में ज पहुँचे, जहाँ पर उनके पूर्व युद्ध में के हजारों सङ्गी नावि पड़े कराह रहे थे।

नेलसन प्रत्येक रुग्ण-शय्या के निकट ठहर कर आश्व

को ढाढ़स बँधाते थे। एक से पूछा,—क्यों जैक (Jack) ! क्या समाचार है ?" उत्तरमें वह बोला "महामान्य ! मेरा तो दाहिना हाथ ही उड गया।" नेलसन यह सुन ठहर गये और अपने कटे हाथ का आस्तीन हिला कर हँस कर बोले "जैक ! तब तो मैं और तुम दोनो जने धीवरो के लिये चौपट हो गए (याने धीवरों का जाल जिसमें सूना न फिरे इसलिये हम लोगो ने बाँहें दे दी)। खैर, जाने दो वीर, जो लड़ता है वह घायल होता ही है।'

इस प्रकार से वह प्रत्येक रोगी के निकट कुछ देर ठहरते और उत्साहयुक्त वचनो से उन्हें प्रसन्न करते जाते थे। प्रधान डाक्टर ने कहा "महाशय आपकी कृपा ने तो हजारों डाक्टरो से भी बढकर उनका उपकार किया है। वे आपके वचन सुनकर अपना दुःख भूल जाते है और उनका हृदय आनन्द से नाच उठता है।"

स्वदेश लौट कर, नेलसन ने नौकरी से इस्तीफा देकर शान्त-जीवन अब बिताना चाहा, परन्तु लार्ड स्प्रिन्सिएटने बड़े उद्योग से उन्हे ऐसा करने से रोका और कहा "वीर ! क्या अब इतने दिनो तक कठिन परिश्रम से सेवित जन्मभूमि को ऐसे समय मे निराधार छोडना चाहते हो जब कि फ्रान्स देश की उपद्रवकारी सेना चारों ओर घोर विप्लव मचा रही है, तथा देश की स्वतन्त्रता पर आघात पहुँचने की सम्भावना प्रति क्षण देशवासियो के हृदय में क्षोभ्मा करती है।'

ऐसे आर्त्त वचनों को सुनने की शक्ति सहृदय चरित्रनायक में कहाँ थी, इन्होंने अपना विचार तत्कालही बदल दिया। इस समय जबकि नेपोलियन चारों ओर से घुटेला होकर घिरे हुए सिंह की नाईं केहरी-नाद कर रहा था और अपनी सब सेना इकट्ठी कर इँगलैण्ड पर चढ़ाई करने का विचार कर रहा था तब नेलसन से वीर अध्यक्ष के बिना ब्रिटिश-कूल की रक्षा होती नहीं दीख पड़ती थी। एक सामयिक इतिहास लेखक कहता है कि "नेलसन का समरक्षेत्र में विद्यमान रहना ही शत्रु को अपनी विचारित युक्ति को पुन. पुनः विचारने का कारण हो जाता था"।

एकमत देशवासियों के अनुरोध से नेलसन ने पुन. उसी उत्साह और उद्योग के साथ देश-रक्षा का बीड़ा उठाया।

इँगलैण्ड यद्यपि घर से बाहर समुद्रों में विजयी हो चुका था, परन्तु अभी तक अपने घर में बैठकर, बाहर से किये हुए आक्रमण का पूर्णरूप से प्रतिकार करने के योग्य नहीं हुआ था।

नेलसन ने लिखा है कि प्रत्येक कार्य्य का आदि, मध्य और अन्त होता है। गृह-रक्षा करने का अब इँगलैण्ड के लिये श्रीगणेश हुआ।

कैले (Calais), बोलोन (Boulogne) तथा डीपी (Dieppe) के नौकाश्रय यद्यपि इँगलैण्ड के सन्निकट थे, परन्तु नेलसन के मतानुसार इधर से आक्रमण होना सम्भव नहीं था।

उसका कथन था, कि शत्रुदल अवश्यही दूसरी ओर से धावा कर के, कुछ सैन्य के साथ, सीधे लण्डन पर चढ़ जाने का उत्कट उद्योग करेंगे, इसमें संशय नहीं है।

नेलसन की रक्षा-युक्ति यह थी, कि शत्रुओं को इंगलैण्ड के कूल तक पहुँचने ही नहीं देना चाहिये। ज्योंही वह अपने नौकाश्रय से निकले, त्योंही उनको आक्रमण करने देने का अवसर न देकर, स्वयम् ही विकट धावा कर उन्हें उलटे पैर उन्हीं के देश को लौटा देना चाहिये।

कदाचित फ्रेञ्च लोग, अपने बड़े जहाज पर धावा न कर, छोटी डोंगियों पर ही धावा कर बैठे तो उस समय के लिये नेलसन ने यह आज्ञा दे रखी थी, कि ब्रिटिश सैन्य भी तत्कालही अँगरेज़ी डोंगियों पर ही आगे बढ़ कर धावा कर दे। नेलसन सदा कहता था, कि "हमें पूरा विश्वास है कि वीर अँगरेज़ लोग फ्रेञ्चों को दम में दम रहते कदापि आगे बढ़ने न देंगे।"

यदि शत्रुदल फ्रान्स से चलते समय इंगलैण्ड को देख पड़ जाय, तो तत्काल तोपों की बाढ़ दाग दी जाय और उनकी पंक्ति जहाँ तक हो छिन्न भिन्न कर दी जाय। इस प्रकार से प्रत्येक युक्ति की एक एक काट नेलसन ने सब नाविकों को समझा दी और कह दिया कि 'जिस समय शत्रु दल इंगलैण्ड के कूल पर पहुँचे, उसी समय निर्मोह होकर उसका नाश करदो, जिसमें फिर वह इङ्गलैण्ड की ओर दृष्टिक्षेप न करे"।

पाठक ! इस समय इङ्गलैण्ड शास्त देश नहीं बल्कि एक स-

शस्त्र-सैन्य निवास सा बोध होता था। चारों ओर वीरो के पङ्क्तिवद्ध शिविर ही शिविर देख पड़ते थे। कोई वीर कहीं पर अपने शस्त्र युद्ध के लिये स्वच्छ करते नजर आता था, कहीं वीरगण जोश में आकर अपना देश-गीत God save our gracious King और उसका उत्तर Long to reign over us बड़े धूम से गा उठते थे।

आज इँगलैण्ड पर Bony, जिसका नाम योरोप के बच्चों को डराकर सुला देने के लिये होआ के समान था चढ़ाई करने वाला है। आज योरोप की तरह इँगलैण्ड को भी पराजय करने को Bony आता है। ऐसे दुःसमय में यदि समस्त इँगलैण्डवासी स्वदेश-रक्षा के लिये सशस्त्र कमर कस कर तैयार न हो जायँगे तो कब होंगे?

नेलसन ने विद्युत-वेग से शत्रु-निवारण की कुल युक्तियाँ ठीक कर स्वदेश लौटने के केवल तीनही सप्ताह के बाद, आत्म सुख का बलिदान दे पुन. "यूनाइट" ( Unite ) जहाज़ पर झण्डा फहराया।

चरित्रनायक एक दिन के लिये भी आराम नहीं लेते थे। आज यदि वे शोरनेस में अपने आधीनकी तोस नौकाओं का पर्य्यावेक्षण करते देखे गये है, तो दो दिन के बाद एक नई सेना जो बोनापार्ट से लड़ने को तेयार की जा रही है उसको कवायद कराते हुए पाये जायँगे।

१५ अगस्त को फ्रेञ्चों ने बोलोन पर ५७ नौकाओ के साथ

स्थल पर आक्रमण कर ही दिया। अंगरेजों ने यद्यपि रोकने के बहुतसे उपाय किये, परन्तु पछड़ गये।

स्थल पर विजय पाकर भी जल युद्ध में फ्रेञ्चों ने अपने को युद्ध के योग्य नहीं समझा। कई कारणों से इस समय युद्ध बन्द हो गया और सन्धि हो गई।

नेलसन को पुनः कुछ दिनों के लिये शान्ति मिली और वह अपने खरीदे हुए नए इलाके मरटन (Merton) में इस समय रहने लगे।

नेलसन कहते थे, कि फ्रेञ्च अंगरेजों की सन्धि पानी पर बालू की दीवार ही समझनी चाहिये। नेलसनने इसलिये प्रधान मन्त्री के पास इस समय लिखा—"महाशय! मैं इस समय शान्ति के लिये लालायित हो रहा हूँ, तथापि आवश्यकता पड़ने पर आप मुझे सदा तय्यार पावेंगे।"

जैसा विचारा था वैसाही हुआ। कुछ ही दिनों के बाद, १६ मई को पुनः फ्रेञ्चोंसे युद्ध छिड़ गया। चार दिनके बाद ही नेलसनने अपना शान्ति गृह छोड़ कर अन्तिम बार विक्टरी (Victory) जहाज पर अपना प्रधान अध्यक्ष सूचक झण्डा लगाया।

पाठक! अब केवल एक और अन्तिम ट्राफलगर (Trafalgar) का युद्ध बाकी है। बस इसके बाद आपसे विदा हूँगा।

---

# ग्यारहवाँ परिच्छेद।

*मध्यसागर में शत्रुका पीछा तथा ट्राफलगर का युद्ध।*

"उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स. बान्धव"।

सत्य ही यह पुरानी कहावत मित्रों की कसौटी है।



ब तक योरोप के राज्यों को यह विश्वास था, कि फ्रेञ्च लोग अँगरेजों से दब जायँगे तब तक तो वे अँगरेजों को 'त्वमेव सर्व्वम्' इत्यादि बड़ाइयां कर मित्रता का दम भरते थे, परन्तु ज्योंही फ्रेञ्चों का दिन कुछ फिरा और स्थलयुद्ध में विजय प्राप्त होने लगी, फिर ये स्वार्थी भँवरे कहाँ ठहरते थे।

पोर्चगलने जो एक दिन अँगरेजों का सब से बड़ा सहायक गिना जाता था, इस समय यों आँखें फेर लीं मानों कभी की जान पहचान ही नहीं है। नेलसन का बेड़ा जब उसके नौकाश्रयों में पहुँचा,- इनलोगोंने सभ्यता को लातमार, गृहागत अतिथि को आश्रय देने से भी इनकार कर दिया।

पाठक। ये प्रपञ्ची मित्रगण शूकर कुत्ते का झगड़ा अँगरेज फ्रेञ्चों में लगा, आप एक किनारे ठुड्डी पर हाथ रख खड़े हो तमाशा देखने लगे। ब्रिटिश लोग इस समय एक दम अकेले पड़ गये। फ्रेञ्चों की सहायता करनेवालों की कमी न थी। स्पेन, पुर्तगाल इत्यादि जिसे देखिये वही सहायता देने को तय्यार था। कोई सैन्य से, कोई धन से, और कोई बातों से ही नेपोलियन का उत्साह बढ़ा रहा था, परन्तु संसार की पोली बातों और वीर नेलसन की अध्यक्षता में अँगरेज़ों के सच्चे उत्साह से क्या मिलान? ये कभी हतोत्साह होने के नहीं।

इस समय नेलसन की ओजस्विनी बातें,—"यदि फ्रेञ्च शैतान द्वार पर खड़ा है तो मैं कल सवेरे ही उससे भिड़ कर उसे पीछे ढकेल दूँगा। कैसी सच्ची वीरता दिखला रही हैं।

भूमध्यसागर में जहाँ फ्रेञ्चों के बेड़े के पहुँचने की खबर है, वहाँ, जहाँ तक जल्द हो, पहुँच जाना चाहिये, इस उत्सुकता में चरित्रनायक अपने बड़े जहाज़ विक्टरी को छोड़, एक छोटी युद्ध नौका पर चढ़ रवाना हो गये। विक्टरी को लार्ड कार्नवालिस को लेने के लिये कुछ दिनों तक अटके रहने की आज्ञा थी।

फ्रेञ्च बेड़ा इस समय भूमध्यसागर के टौलायोन नौकाश्रय में लङ्गर डाले था। इसलिये चरित्रनायक टौलायोन के द्वार पर ही शत्रु की प्रतीक्षा करने लगे।

दिन पर दिन बीतने लगे परन्तु, शत्रु-दल नौकाश्रय से

बाहर निकलता ही नहीं। लोग अधीर होने लगे, परन्तु नेलसन ने नाविकों को ढाढस बँधाया और कहा भाइयो! मुझे तो घर जाने की इच्छा नहीं होती। मैं तो वर्ष भर भी, यदि शत्रु नौकाश्रय से न निकलें तो, यहाँ ही पड़ा रहूँगा।" इन बातों का असर नाविकों पर ऐसा पड़ा कि वे भी धैर्य से शत्रु का सामना करने को बैठ गये। युद्ध की नौकाएँ तथा नाविकों को नेलसन ने इस प्रकारसे युद्ध के लिये तैयार रक्खा था, कि कई एक महीनों तक बेकार बैठे रहने पर भी जिस समय ४ हजार माइल तक शत्रु को पीछा करने की आज्ञा दी गई उसी समय वे ऐसी मुस्तैदी से प्रस्तुत हो गये, मानो नौकायें युद्ध-क्षेत्र में लड़ने के लिये अभी इँगलैण्ड से ताजा आई हों।

मध्यसागर के प्रत्येक नौकाश्रय में बोनापार्ट का दबदबा ऐसा जमा हुआ था, कि भय से कोई भी अँगरेजों को खाने पीने की चीजें भी देने का साहस नहीं करता था।

स्पेन इससमय यद्यपि उदासीन राज्योंमें गिना जाता था, तथापि अँगरेजों को आश्रय न देकर फ्रेंचों को ही आश्रय दे, अँगरेजों का नाश करा देना, वह अपना धर्म समझता था।

नेलसन बड़े शोक के साथ स्पेनवालों की इस नीचता पर कहने लगा कि समय भी कैसा परिवर्तनशील है, जो स्पेन एकदिन संसार का मालिक कहा जाता था, अपने पूर्व गौरव को एकदम विस्मरण कर, तुच्छ फ्रेंच राजा का चेरा

बना फिरता है। स्पेन को चाहिये था कि अँगरेजों साथ योरप के शत्रु नेपोलियन को नीचा दिखानेका बी उठालेता और परोपकार ही के द्वारा पुन एकबार अपना गौरव प्राप्त कर लेता।

स्पेन वालो की इतनी नीचता परभी नेलसन ने उन उदासीनता का यथोचित सत्कार किया। जो फ्रेंच जह स्पेनवालों के नौकाश्रय से एक गोलीकी दूरी पर पकडे ज उन्हें चरित्रनायक मध्यस्थ राज्यके नौकाश्रयमें पकडे जहाज काट कर छोड देते थे।

एकदिन कई अँगरेजी छोटी नौकायें एक बडी शत्रु नौ से मुठभेड में पकड गईं। शत्रु लोग इस विजय पर ऐ प्रसन्न हुए, कि चारो ओर समाचारपत्रों में गप्पें उडादी कि नेलसन का विक्टरी (Victory) जहाज मय कुल अँगरेज बैठे थे युद्ध क्षेत्रसे मार खाकर भागगया।

नेलसन को जब यह झूठी खबर मिली, वह जल भुन क राख होगये। तुरत उस झूठे समाचार का प्रतिवाद छपवाय और लिखा कि यदि ससार इस बातसे अभिज्ञ नही होत कि नेलसन प्राण रहते हुए समरक्षेत्र से कभी नही घूमा है, घूम सकता है तो आज शत्रुओं के दोषारोपण से क्या मेर चरित्र दूषित नही हो जाता? फ्रेंच एडमिरल की चिट्ठ मेरे पास रक्खी है। उस झूठे को यदि युद्धमें भाग्यवश पकड पाया तो पूछूँगा कि किस प्रकार से नेलसन तुम्हारे सामने से

भागा था और किस तरह फ्रेञ्चों ने उसका पीछा किया था तथा उसका उत्तर संसार में पुनः प्रकट करूँगा।

नेलसन इससमयमें पूरा उद्योग शत्रु को बाहर खींच कर लड़ने का करने लगे, परन्तु निर्दिष्ट समय के पहले तक सब उद्योग विफल ही हुए। नेलसन को भय था कि कहीं फ्रेञ्च बेड़ा कुहासे के कारण भाग न जाय। शत्रु-बेड़ा यदि बिना युद्ध किये भागा, उस झूठे फ्रेञ्च एडमिरल से यदि मैंने लड़-कर अपना बदला नहीं चुकाया, तो बिना मारे ही मैं अवश्य मर जाऊँगा।

चरित्रनायक दो वर्ष तक वहीं ही पड़े रहे, परन्तु इतनेपर भी अपने आज्ञाकारी नाविकों और अफ़सरोंके मध्यमें वह उदास नहीं होते थे। एकदिन प्रसन्न होकर वह कहने लगे "मेरे वीर भाइयो। तुमसे धीर सहचर पाकर मैं फूला नहीं समाता हूँ। मैं सानन्द मृत्यु का भी सामना कर ता हूँ।"

परन्तु दिन बहुत बीत गये। १८ अगस्तको निराश हो, ..। विक्टरी (Victory) पर बेड़ेके साथ अपने पोर्ट-वन्दर को लौट आये। वहांसे लन्दन युद्ध-मन्त्री से कुछ मन्त्रणा करने गये। इसीसमय इंगलैण्ड के विख्यात सेनापति वेलिङ्गटन से इनकी भेट हुई। दोनों म से कोई भी वीर एक दूसरेको उस समय तक नहीं जानते थे। वेलिङ्गटन ने नेलसन को बातचीतसे एक निरा बकवादी नाविक ही

समझा था, परन्तु जब ट्राफलगर [Trafalgar] के युद्धके साथ ही साथ इंगलैण्ड के जलयुद्ध का दिग्विजयी झण्डा वीर ने ब्रिटिश द्वीपमें गाड कर, अपने को जगत् से समुद्राधिप सम्बोधन कराके, जल साम्राज्य का पूरा अधिकार ब्रिटन को प्रदान किया, उस समय वेलिङ्गटन के लिये नेलसन बकवादी नाविक नहीं रहा, बल्कि उसके लिये नेलसन अब राज्य-नीतिविशारद, देशरक्षक तथा वीर देवता बन गया। अब ड्यूक का मानो सिर चरित्रनायक के सम्मुख बार बार झुकने लगा।

लण्डन से लौटकर एकदिन पाँच बजे नेलसन अपने मरटन (Merton) इलाकेवाले मकान में बैठा था, कि कप्तान ब्लाकउड (Blackwood)के आनेकी खबर पहुँची। कप्तान को देखते ही नेलसनने कहा—"उत्सुकता से भाई तुम्हारे इस-समय आनेसे मुझे बोध होता है, कि फ्रेञ्चोंका कुछ समाचार लाये हो।

ब्लाकउड ने उत्तर दिया, कि फ्रेञ्च लोग केडीज़ के निकट आ गये हैं।

नेलसनने यह सुन, प्रसन्न चित्तसे बेडा तय्यार करने को आज्ञा तुरत भेज दी और जल्दी जल्दी चलनेकी तय्यारी करने लगा। यहाँ पर पाठकोंके चित्त-विनोदार्थ नेलसन के इस समयके लिखे रोजनामचे का कुछ अंश [illegible] हैं

शुक्रवार रात्रि (सेप्ट० १३) साढे दस [illegible] मिन

'मर्टन' ( Morton ) को छोड राजा और देश की सेवा करने चला हूँ। परमेश्वर, जिन्हे मैं दिनरात पूजता हूँ मेरी और मेरे देशकी आशा पूरी करे! यदि परमात्मा की यह इच्छा हो, कि मैं सकुशल युद्ध क्षेत्र से घर लौट आऊं तब तो मेरी कृतज्ञता का ठिकाना ही नही है। मेरा सतत धन्यवाद उसको पहुँचेगा। यदि उसकी इच्छा पृथ्वीपर से मेरा अस्तित्व उठा देने की ही हो, तोभी कुछ पर्वाह नही, मैं इसमें राज़ी हूँ। मुझे विश्वास है, कि वह दयालु मेरे बाद मेरे प्रिय आत्मीय जनोकी रक्षा अवश्य ही करेगा। वैसाही हो, जैसी उसकी इच्छा है। तथास्तु! तथास्तु! तथास्तु!

नेलसन आज चलकर विक्टरी जहाज पर रवाना होनेको है, आज सवेरेसे ही नरनारियोंका जमघट पोर्टसमौथ के नौकाश्रयमें हो रहा है। कही स्त्रियां, कही बच्चे, कही बूढे फूलोंकी झोलियां चरित्रनायक पर बरसानेको भर रहे हैं। पुलिसका विशेष-प्रबन्ध रहते हुए भी मनुष्योंका टिड्डी दल रोके नहीं रुकता है। सबकी यही उत्कट इच्छा है कि आगे बढ़कर मैं ही देश-रक्षकका पद चुम्बन करूँ।

नेलसन नौकाश्रय में आ पहुँचा। पहुँचते ही जन समुद्रमें मानों भारी भूचाल आ गया। सब कोई वीरका मुख देखने ही को उत्सुक थे। जो बलवान युवक थे वे तो गिरते पड़ते आगेको धस पडे। युवतियां ठोकरें खाकर भी बिना आगे बढे नही रुकी, परन्तु रहगये बिचारे वृद्ध और बालक।

वृद्ध लोग तो खैर किसी प्रकार अपने कौतूहलको रोक कर किनारे से ही आशीर्वाद देते थे, परन्तु बच्चे जो रास्ता न पाते धक्कों से चिल्ला २ कर रोने लगते थे। सब देशभाइयों से सत्कृत हो, इन्होंसे आशीर्वाद लेते हुए चरित्रनायक विक्टरी जहाज पर शत्रुका सामना करने को चल पड़े।

विक्टरी पोर्तुगल को राजधानी लिस्बन के निकट पहुँच गया। नेलसन उस दिनसे प्रतिदिन मिश्रित शत्रु-सैन्यकी बाट जोहने लगे। उन्होंने २७ सितम्बर को अपनी वर्ष गाँठके एक दिन पहले अपने सब नाविकोंको इकट्ठा कर अपनी विख्यात युद्ध-युक्ति समझा दी।

वह युक्ति यह थी, कि शत्रु जहाज ज्योंही सामने आवें, अपने जहाजोंको उनके साथ सटा कर युद्ध करना चाहिये जिसमें जय या क्षय जो होनी हो शीघ्रही निबट जाय।

'खैर २० अक्टूबरको, शत्रुओंके नौकाश्रय से बाहर आनेका समाचार मिला। अपने मित्रों की मण्डली में बैठे हुए नेलसनने २० अक्टूबर को अपने युवक नाविकों को सम्बोधन कर कहा 'प्यारे मित्रो। आज या कल का दिन तुम्हारे जीवनका शुभ दिन होगा। कल मैं वह कार्य्य करनेवाला हूँ जिसका कथोपकथन, मेरे शुभचिन्तको! तुम्हें तुम्हारे जीवन के अन्ततक आश्चर्य और विश्वास के साथ करना होगा।"

दूसरा दिन अर्थात् २१ अक्टूबर नेलसन के वंशमें अत्यन्त शुभ माना जाता था। ४८ वर्ष पहले आजके ही दिन चरित्र-

नायक के मामा कप्तान सक्लिग ने, मुट्ठीभर सेनाके द्वारा शत्रुकी बडी सैन्य को परास्त कर, अपना नाम अमर किया था और आज ही के दिन हमारे नायकने भी अपना शुभ मुहूर्त्त जान लड़ाई को दुन्दभी बजा दी।

२१ अक्टूबर के प्रात काल में समुद्र पर जो दृष्टि पडी, तो ऐसा बोध हुआ कि भावी सग्राम के भय से समुद्र-जल शान्त होगया है, न कही लहर है और न कही तूफान।

संग्रामका पूरा दृश्य देखने की इच्छा करनेवालों को अपने मस्तिष्क में युद्धका मानचित्र खेंच लेना उचित है। पाठक! सयुक्त बेडा दो लम्बी २ कतारों में चल रहा था। नेलसनका बेडा भी दो भागोमें विभक्त था, परन्तु इसकी पङ्क्ति सीधी थी। रिपु-बेडे सा पार्श्वापार्श्वि नही।

फ्रान्स और स्पेनवालों का बेडा अर्द्धचन्द्राकार रूपमें था, नेलसन उनसे मिलनेके लिये समानान्तर लम्बरूप में चला।

नेलसन की युद्ध युक्ति शत्रु-दल का एकदम नाश कर देना ही थी। अपनी चाहे जो कुछ भी क्षति हो परन्तु शत्रु दल का नाश हो, यही उसका प्रधान मन्तव्य था, और यही आज्ञा सेनापतियो को नायक ने दे भी रक्खी थी।

युद्धके पहले नेलसन ने एक समयोपयुक्त सकेत देना निश्चित किया संकेतदाता को आज्ञा दी गई कि युद्धका सकेत इन शब्दोंमें होगा "इगलैण्ड आशा करती है कि प्रत्येक मनुष्य अपने चरणपर दृढ रहेगे" और दूसरा संकेत होगा कि "निरन्तर हो युद्ध करो"

नेलसनके जीवनका प्रधान उद्देश भी इन्हीं दो शब्दोंमें था एक तो 'कर्म' और दूसरा 'हाथोंहाथ युद्ध'।

नायक का प्रधान जहाज व्हिक्टरी (Victory) एक पंक्ति के सिरे पर और कोलिंगवुड (Collingwood) का रॉयल सोव्हरेन (Royal sovereign) दूसरी पंक्ति के सिरे पर चलने लगा।

दोपहर होते होते युद्ध आरम्भ होगया। संयुक्त शत्रु-दलने गोले दागना आरम्भ कर दिया, परन्तु नेलसन को अपने नाविकों पर बड़ा भरोसा था। वह चुपचाप बिना शत्रु के गोलों का जवाब दिये बढ़ता ही गया। व्हिक्टरी (Victory इस समय गोलों की झड़ी में बढ़ रहा था। एक २ मिनट में पचासों नाविकों का वारा न्यारा होने लगा। पाठक! इसी से इस भयानक अग्निकाण्ड की भावना कर लेवें, कि शत्रुके एक गोलेने एकदम आठ वीरोंको उड़ा दिया।

~ इसी अन्धाधुन्ध में एक गोला कप्तान हार्डी और नेलसन के, जो ऊँचे तख़्ते पर खड़े थे, कानों के पाससे सनसनाता हुआ निकल गया। ईश्वरने कुशल की नहीं तो दोनों की वहीं समाप्ति थी।

आह! पाठक! कैसा भयानक समय उपस्थित था, वीरों का धैर्य्य छूटा जाता था। शत्रु की तोपें तो दनादन गोले उगल कर कहर मचा रही थीं और ये बिचारे चुपचाप उन्हें सह रहे थे। सेनापति की आज्ञा बिना हाथ पैर डुलाते नहीं बनता था।

बड़ी प्रतीक्षा के बाद अब आज्ञा मिली, कि गोलों का जवाब गोलों से दिया जाय।

अब क्या था? बन्धन मुक्त सिंहों की नाईं वीर अँगरेज नाविक कुलांचे मार २ बाढ़ दागने लगे। विक्टरी ( Victory ) शत्रु-जहाज़ के एकदम निकट पहुँच गया। बात की बात में कहानी समाप्त हो गई। अँगरेजी जहाज़ शत्रु-बेड़ों के इतने निकट आगया था कि इनके गोलों की लहर से ही शत्रुओं के जहाज़ों में अग्नि लगने लगी।

शत्रुओं ने भी मुँह नहीं मोड़ा, जीतोड़ लड़ाई करने लगे।

शत्रु जहाज रीडोटेबुल (Redoubtable) पर गोलों की मार बन्द करने की आज्ञा सेनापतिने दी, परन्तु शत्रु-जहाज ने अँगरेजों की आधीनता स्वीकार करने के बदले लड़ते लड़ते कट मरना ही उचित समझा।

यही जहाज जिस की रक्षा के लिये नेलसन ने आज्ञा दी थी, नेलसनका घातक हुआ। इतने नाविकों के झमेले में नेलसनको ताक कर गोली मारना सहज नहीं था, परन्तु नायक के व्यक्त आकार प्रकार और पदकों से सुसज्जित वक्षस्थल को हजारों में भी पहचान लेना कठिन नहीं हुआ। फ्रेंच नाविकों ने ताक कर गोली दागी और गोली भी कारी जा बैठी।

नेलसन को उसके मित्रोंने पदकों को उतार देने का उपदेश दिया था, परन्तु वीर ने गर्वके साथ कहा था "छि.! इन्हें में

उतार दूँ। जहाँ जहाँ मान के साथ इनको प्राप्त किया है और मान ही के साथ इनको सुलाये मरूँगा।"

गोली लगते ही नायक ने अपने अन्तरंग मित्र कप्तान हार्डी से कहा, कि बस मित्र, मेरी समाप्ति हो गई।

बड़े कष्ट से नायक को लोग नीचे तल में जहाँ औषधालय का प्रबन्ध था, उठा लेगये। अपने कष्टों को वीरता और धैर्य्य के साथ दबाते हुए नेल्सन ने आज्ञा दी कि अन्य नाविकों से इसके घायल होने को बात गुप्त रक्खी जाय, जिससे उनका साहस नहीं टूटे। यह कह कर नायक ने अपना रुमाल निकाल कर अपना चेहरा और पदकों को ढक लिया।

सेनापति को इस अवस्था में देख, डाक्टर लपका हुआ पहुँचा, परन्तु वीर ने बड़े धैर्य्य के साथ धन्यवाद देते हुए कहा— 'डाक्टर! जाओ' जाओ! हमारे उन प्यारे नाविकों की रक्षा करो जिनके बचने की आशा है। आह! मेरे लिये परिश्रम व्यर्थ है। प्यारे डाक्टर! विदा! विदा! और कुछ नहीं! जाओ अपना काम देखो।"

पाठक! कलेजा ऐंठा जाता है। इतने दुःख में भी अपने सहयोगियों का ऐसा ध्यान! धन्य! धन्य! नेलसन, तुम मानव-देह में देवता थे।

आदि से ही नायक को विश्वास हो गया था, कि अब उसकी मानव-लीला का अन्तिम पटाक्षेप हुआ चाहता है, वह अब केवल कुछ घण्टों का पाहुना है। देह से तो वह अत्यन्त दुःखित

था परन्तु उसकी आत्मा इस समय भी लड़ाई के दृश्य में ही घूम रही थी। वह बार बार हार्डी (Hardy) को देखने की इच्छा प्रगट करता था, परन्तु कप्तान को अभी तक युद्ध से अवकाश नहीं मिला था, कि आकर अपने मुमुर्षु मित्र की अवस्था पूछे।

भाग्य से विजय-लक्ष्मी अब अँगरेजों की ओर झुकी। हार्डी को जब पूरा विश्वास हो गया कि अब विजय में संशय नहीं है, तब वह सुसमाचार अपने सेनापति को सुनाने के लिये झपटा।

हार्डी को देखते ही नायक को डूबते हुए सा सहारा मिला। उन्होंने व्याकुल हो पूछा— 'हार्डी' क्या समाचार है?

हार्डी ने प्रसन्नचित्त से चौदह अथवा जहाजों के पकड़े जाने का समाचार सुनाया।

नायक—हमलोगों के जहाज तो सुरक्षित हैं न? किसी अँगरेज वीर ने मा की कोख तो कलङ्कित नहीं की?

हार्डी—नहीं मेरे प्यारे मित्र! इसका कोई भय नहीं है।

नेलसन ने प्रसन्नचित्त से हार्डी का कर-चुम्बन किया और डूबते स्वर से कहा "मित्र क्षमा करना। बस मेरी यहीं बिदाई है।"

हार्डी रोता हुआ फिर ऊपर आया और उसने फिर तुरन्त लौट कर पूर्ण विजय का समाचार नायक को सुनाया।

नेलसन—(धीमेस्वर से) हार्डी, मैं सन्तुष्ट हूँ, मेरी आज्ञा मानो, तुम तुरन्त विजित जहाजों को बाँध दो, नहीं तो धोखा हो जायगा।

पाठक ! मरते मरते भी बुद्धिमान सेनापति की चतुरता देखिये। नेलसन को मालूम हो गया था, कि कुछ ही दम में भयानक तूफ़ान आया चाहता है। इसी विचार से जहाज़ों का लङ्गर गिराने की आज्ञा दी थी। हार्डी ने उनके कथन पर विशेष ध्यान नहीं दिया, जिसका फल यह हुआ कि कई एक जहाज लापता हो गये।

नायक का अन्त अब निकट आगया। व्हिक्टरी (Victory) के नाविकों ने विजय पर भयानक करतल ध्वनि की, जिसके सुनते ही बुझते दीप की शिखा की नाईं नायक का मुखमण्डल सन्तोष से दमक उठा। वह ऊँचे स्वर से बोल उठा "धन्य परमेश्वर ! मैंने अपना कर्म्म कर लिया, ईश्वर को धन्यवाद है, जिसकी कृपासे मेरे कर्म्म सकुशल समाप्त हो गये।"

सांस चढ़ने लगा आंखे झपने लगीं, उजली पुतली नीचे उपर होने लगी। मुख भी कुछ एक खुल कर दो एक टूटे शब्द उच्चारण करने लगा। नायक ने कुछ कहना चाहा, परन्तु केवल 'ईश्वर मेरी जन्मभूमि 'इतना ही कह पाये और उनका पवित्र आत्मा शरीर पिञ्जर को छोड़ अनन्त अपरिमेय सुखके उपभोग में लीन हो गया।

इँगलैण्ड के रक्षक, संसार के सबसे बड़े नाविक और योद्धा की मानवलीला का सम्वरण होगया।

बस पाठक ! लेखनी इतनी दूर तक सुखकी कहानी कहती हुई तेज चल रही थी, पर अब इसका भी टिल टूट गया। मुख से

काले रुधिर की धारा बहने लगी—अब लेखनी ठहर जाती है। लेखक भी अधिक कुछ कहना नहीं चाहता। परिच्छेद समाप्त करने के पहले दो एक आवश्यक बातें कह देना उचित है।

शत्रुओं का नाश पूरे तौर से हो गया। अँगरेजों की ओर की क्षति उनकी तुलना में कुछ नहीं हुई। ४४०० शत्रु-सेना मारी गई और २५०० घायल हुई। अँगरेजों की ओर के ४०२ वीर मारे गये और ११२८ घायल हुए। सत्रह शत्रु-जहाज़ हाथ आये और एक उड़ गया।

पाठकों को स्मरण होगा, कि युद्ध के पहले नेलसन ने ईश्वर से जिस विजय के लिये प्रार्थना की थी वह उसे भरपूर मिल गई।

अँगरेज़ों ने अनेक उद्योग से बहुत से डूबते हुए शत्रुओं की रक्षा की।

युद्ध के चौदह दिन बाद यह समाचार इँगलैण्ड पहुँचा। जगह जगह आनन्द के बधावे बजने लगे, नर नारी प्रसन्न-चित्त हो मृत देश-भक्त को आशीर्वाद देने लगे।

नेलसनका ताबूत बड़े समारोह से वेस्टमिनिस्टर में पहुँचाया गया। समूचा साम्राज्य महीनों तक शोक-चिह्न धारण किये रहा।

पाठक! ढीठ बालक नेलसन अपनी देशभक्ति और उद्योग के कारण सार्वजनिक मान्य का विषय हुआ। उसने अपने देशको, नहीं नहीं, समग्र योरप महाप्रदेश की रक्षा की।

इंगलैण्ड की जल-शक्तिका बीज बो दिया और अपना नाम अमर कर लिया।

धन्य।

सदी ( Southey ) के शब्दों में, पाठक हमें अब अपने नायक से विदा होने दीजिये—

"इसने अपना नाम और उदाहरण सैकडो बालक तथा हजारों इंगलैण्डवासी युवको की उन्नति करने के लिये ससार में छोडा है। इसका नाम, इसके देशका गर्व और धर्म है और सदा ही उन्हें उत्तेजित करता है और करता रहेगा।"



# उपसंहार ।

पाठक ! बस समुज्ज्वल दीपका निर्वाण हो गया । इँगलैण्डके वृद्ध, युवा, बालक सभों के हृदय में दु ख की अन्धियाली छागई। राजराजेश्वर ने वीर सेवक के लिये, मित्रों ने सहृदय सुहृदके लिये, जन्मभूमि ने योग्य पुत्र के लिये और लेखक ने अपने नायक के लिये आँसू बहाये।

नेलसन अब नहीं रहा । स्वर्ग की अप्सराओंने, विस्तृत बाहु से उसका स्वागत करते हुए, उसे वीरोचित स्थान दे सम्मानित किया ।

पाठक, नेलसन की अन्तिम इच्छा सदा यही रही, कि उसके कानों में यह शब्द कोई सुना देता कि तुम्हारी जन्मभूमि तुम्हारे उद्योग से स्वतन्त्र हो गई । ईश्वर ने उसकी इच्छा भी पूरी की। नेपोलियन अपना सा मुँह ले देश लौटा और इँगलैण्ड विजय रूप कड़वे फल पर फिर दाँत नहीं लगा सका ।

नेलसन ! वीरवर ! आज तुम नहीं हो तो क्या, स्वर्ग से ही झाँक कर देखलो, तुम्हारी प्रेयसी जन्मभूमि आज राजराजेश्वरों के मुकुटों को अपने पैरोंसे ठुकराती हुई कहती है, कि मैं

संसार विजयिनी हूँ, मेरा लोहा पार्थिव वस्तुये ही नहीं स्वर्गीय ही नही, ईश्वरीय शक्तियाँ भी मानती हैं। मे सुविस्तृत राज्य में सूर्यको भी नही चलती, वह भी भयातु हो मेरी प्रजाओं को-सुख देता है और कभी अस्ताचल पर नहीं जाता, सदा अपने कामपर ही डटा रहता है।

नर-शार्दूल! यह तुम्हारी ही कीर्त्ति है, कि समुद्र प्रशस्त वक्षस्थल पर तुम्हारे देश की शक्तिका सामना करन किसी से नही होता।

नेलसन! तुम अमर हो! तुम्हारा नाम, तुम्हारे देश वासियों का गर्व और वर्म्म है। तुम न रहने पर भी जीते हो

पाठको! नेत्रोन्मीलन कर दो। हृदयको दृढ कर बाहु बल का सञ्चार कर दो। अपने आलस्यमय जीवन से मुँह मोर उत्साह और उमङ्गरूपी मदिरा का पान कर, कार्य्यक्षेत्र में आ डटो। आपके सम्मुख लेखकने एक वीर की, एक देश-प्रेमोन्मत्त की जीवनी ला रक्खी है। आप उद्योग करें, ऐसे आदर्श पुरुष को अपना उदाहरण बनावें, उसके कार्य्यों की आलोचना करें और अपने जीवन में गुणों का भरपूर समावेश कर देवें।

आप में शक्ति की कमी नहीं कमी है इच्छा की। जिस समय आप देश-भक्त होने का विचार कर लेंगे, सभी आपके सानुकूल हो जायंगे। लाख विघ्न बाधायें आप के मार्ग से हट कर आप के साफल्य का मार्ग साफ कर देंगी। आप यशवान धनवान और बुद्धिमान हो जायँगे। भारतवर्ष को ऐसे ही

उद्योगशील नरशार्दूलों की आवश्यकता है, जो अपने उद्योग और उत्कट परिश्रम से सच्चे नागरिक रहते हुए भी देशका उद्धार कर सकें।

सर्व सच्चिदानन्द परमेश्वर! हम भारतवासियों को बल दो, एकता और प्रेम का सञ्चार हममें कर दो, जिससे हमें भी नेलसन की नाईं अपने देशवासी और देशसे प्रेम हो और उन की उन्नति के उद्योगमें अपना अस्तित्व तक मिटा सकने की शक्ति हो।

